मुनि श्री रोशनलाल जी

मान स्थानकवासी जैन महासघ (पजी), दिल्ली क
जय भारत प्रिंटिग पेस, वेस्ट रोहतास नगर,
आर-1 एच [illegible] उत्तरी पीतमपुरा, दिल्ली-

शि

व

पु

र

शि व पु र के सौ दा ग र

सौ

दा

ग

र

अनुयोग प्रवर्तक प० रत्न मुनि श्री कन्हैयालाल जी "कमल"
मधुरवक्ता श्री रोशन मुनि जी महाराज "शास्त्री"
विद्याविनोदी श्री विनयमुनि जी महाराज "हिमाशु"
मुनित्रय

तथा

वयोवृद्ध महासती श्री कानकवर जी
प्रियव्याख्यानी श्री चम्पाकवर जी
विद्याभिलाषिनी श्री वसन्तकवर जी
महासतित्रय
के
विक्रमसवत् २०३१ के चातुर्मास के उपलक्ष मे

को सादर भेट

भेटकर्ता — मिश्रीमल नाहर, कुचेरा

परम पूज्य गुरुदेव का स्वर्गवास होने के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करने का संकल्प बना।

आगम प्रेमी महर्षी श्री जीतमल जी महाराज साहब के सौजन्य से प्रेषित श्री पारसमुनि महाराज के साथ मैं राजस्थान पहुंचा, इस उदार सहयोग के लिए मैं सदैव आपका कृतज्ञ हूं।

राजस्थान मेरे लिए तीर्थभूमि है, क्योंकि गुरुदेव की जन्मभूमि, दीक्षा क्षेत्र एवं विहार क्षेत्र आदि राजस्थान में है।

मेरा गत चातुर्मास कुचेरा था और इस वर्ष का चातुर्मास भी अनुयोग प्रवर्तक पं० रत्न मुनिश्री कन्हैयालाल जी महाराज साहब "कमल" के सान्निध्य में कुचेरा में ही है,

जैनाचार्य श्री रेखराजजी महाराज साहब तथा उनके शिष्य समुदाय की सरल कृतियों का सुसम्पादित प्रकाशन कराना "श्री छगन मुनि जैन धर्म प्रचार समिति" का लक्ष्य है।

प्रस्तुत "सिवपुर के सौदागर" में चरित्र चतुष्टय का प्रकाशन हो रहा है। ये कृतियां अब तक सर्वथा अप्रकाशित रही हैं अतः इनका प्रकाशन जिज्ञासु जनों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

—मुनि रोशन
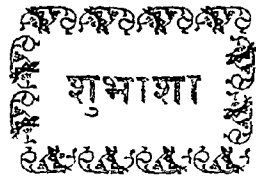
श्री रोशन मुनि जी मेरे अति स्नेही साथी है। सुदक्ष होते हुए भी सरल एव विनम्र स्वभाव वाले है। स्वाध्याय रुचि इनकी अनुकरणीय है।

अल्प समय मे आपने व्याकरण, छन्द, अलकार आदि अनेक विषयो का तलस्पर्शी अध्ययन किया है।

आगमो के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा है। इसलिए आपने प्राचीन लिपि एव प्राचीन साहित्य को अपनी रुचि का विषय बना लिया है।

कथानुयोग आपका प्रिय विषय है। इस पुस्तिका मे प्रकाशित चरित्र चतुष्टय आपकी ही प्रबल प्रेरणा से जन साधारण तक पहुचाने योग्य बने है।

सयम साधना मे सलग्न रहकर भी मौलिक साहित्य सर्जना मे मुनि जी सफल हो यही एकमात्र शुभ कामना है।

—मुनि 'कमल'

स्वर्गीय पूज्य गुरुदेव श्री छगनलाल जी म० सा० का जीवन चरित्र "साधना के अमर प्रतीक" के प्रकाशन के पश्चात् "शिवपुर के सौदागर" नामक इस द्वितीय प्रकाशन का सुअवसर इस समिति को प्राप्त हुआ। समिति के लिए यह गौरव का विषय है।

गुरुदेव की जन्मभूमि, दीक्षा भूमि एव अधिक से अधिक विहार के क्षेत्र राजस्थान मे रहे है।

गुरुदेव के प्रिय शिष्य की रोशन मुनि जी का विहार भी अभी अनुयोग प्रवर्तक प० रत्न मुनि श्री कन्हैयालाल जी महाराज साहब "कमल" के साथ-साथ राजस्थान मे हो रहा है। इस वर्ष का वर्षा-वास कुचेरा मे है।

मुनि की श्री प्रेरणा से कुचेरा निवासी श्रीमान् मिश्रीमल जी साहब ने उदार आर्थिक सहयोग प्रदान करके चातुर्मास के उपलक्ष मे इस पुस्तक का प्रकाशन करवाया है।

इस पुस्तक मे जैनाचार्य श्री रेखराज जी महाराज साहब की मौलिक कृति "चम्पक चरित्र' और चरित्र द्वय (सत्यघोष चरित्र, जयसेना चरित्र) तथा आचार्य श्री के सुशिष्य मुनि श्री० नथमल जी महाराज की कृतियाँ है।

चतुर्थ चरित्र जैनाचार्य श्री रेखराज जी महाराज साहब का विस्तृत जीवन चरित्र है। इसके रचयिता भी मुनि श्री नथमल जी ही ह। जो आचार्य श्री के अन्तेवासी होने के नाते उनके निकटतम

रह कर लिखने वाले है, अत यह कृतिऐहासिक दृष्टि से वहुत महत्वपूर्ण है ।

अन्त मे इसी श्रमण परम्परा के भूतपूर्व सप्त महर्पियो की गुणानुवाद गीतिकाओ का सकलन भी दिया गया है। जो इतिहास लेखको के लिए यदा कदा उपयोगी सिद्ध होगा ।

पूज्य श्री रोशनलाल जी महाराज की प्रेरणा एव दानवीर नाहर साहव की उदार आर्थिक सहायता के प्रति यह समिति कृतज्ञता प्रगट करती है ।

मत्री

पूज्य गुरुदेव श्री छगन मुनि जैन धर्म प्रचार समिति
पो० रोडी, जिला० हिसार

साधना के अमर प्रतीक

(श्रद्धेय गुरुदेव स्वामी श्री छगनलाल जी महाराज)

सत शिरोमणि, परम प्रतापी, परम पूज्य, प्रात स्मरणीय, शास्त्र विशारद महा प्रभावक, ज्ञानवान, दर्शनवान, चारित्रवान, सुसमाधि वत सयति क्षमाशील, सरलमना, धर्मदेव, गुरुदेव श्री श्री १००८ श्रीमद् स्वामी श्री छगनलाल जी महाराज साहब स्थानकवासी जैन जगत के जाने माने सयम निष्ठ महापुरुप थे। आज के भौतिक युग मे उन्होने जिस अध्यात्मिक साधना द्वारा जैन एव जैनेतर जनता को चमत्कृत किया, वह किसी से छुपा नहि। जिसप्रकार सूर्य के प्रकट होने पर अन्धकार का स्वत नष्ट हो जाना स्वाभाविक है, ठीक उसी प्रकार स्वामी श्री जी के दर्शन एव स्मरण मात्र से श्रद्धालुजनो की आधि, व्याधि और उपाधि मिट जाती है, मन पवित्र और प्रसन्न हो जाता है, अपने आप अज्ञान रूप अधकार दूर हो जाता है। दुर्लभ सम्यक् ज्ञान से हृदय मन्दिर जगमगाने लगता है।

इस महापुरुष के विषय मे विशेप जानने के इच्छुको को पजाव केसरी श्री ज्ञानमुनि जी महाराज द्वारा लिखी "साधना के अमर प्रतीक" नामक पुस्तक पढने का सौभाग्य प्राप्त करना चाहिये। वह सक्षिप्त मे इस प्रकार है--

प्रसिद्ध नगर जोधपुर के अन्तर्गप पर्वतसत के समीप पिपलाद (पीपलाज) नामक ग्राम है। वहा पर चौधरी श्री तेजाराम जी रहा करते थे। जो सत्यनिष्ठ एव सतसगी सज्जन थे। इनके सतवति धर्मपरायण पत्नी माता यमुना वाई (जमनावाई) जी थी। जिनकी पवित्र कुक्षी मे वि० स० १९४६ को एक दिव्य तेजस्वी पुत्र रत्न को

जन्म दिया। चौधरी साहिब के कई पुत्र थे मगर यह अन्तिम थे। माता पिता तथा परिवार वालो के स्नेह के विशेष पात्र थे। मोडियो मोडियो (माडूसिह) के नाम से लाड प्यार करते। माडूसिह अभी वालकपन मे ही थे कि इनकी जाघ पर एक विषधर ने अपना डक मारा। पिता तेजाराम जी ने अग्नि सयोग से विष को नष्ट कर अपनी बुद्धि कौशलता का परिचय देते हुये वालक माडूसिह की जान वचाई।

माडूसिह अभी छोटे ही थे कि चौधरी तेजाराम जी चल वसे। जिससे माता यमुनावाई को मार्मिक दुख हुआ। चौधरी जी का सम्पर्क ऊँचे (ओसवाल) घरानो से काफी था। जिससे चोधरी परिवार भी जैन साधु, साध्वीयो के प्रति श्रद्धा भक्ति रखता था। माता जमनावाई विशेप तौर पर साध्वीयो की सगत किया करती थी। माता जी ससार सुखो से उदास हो गई। ससार की असारता तथा मनुष्य जन्म की दुर्लभता का विचार कर अपने लाडले बेटे माडू को स्वामीदासजी की प्रसिद्ध सम्प्रदाय के सतप्रवर चारित्र चूडामणि श्रद्धेय स्वामी श्री रगलालजी महाराज के चरणो मे शिष्य के रूप मे सौप दिया। स्वय माता जमनावाई भी दीक्षित हो जैन साध्वी वन गई।

श्रद्धास्पद स्वामी श्री रगलाल जी महाराज ने वि० स० १९६०, वैशाख शुक्ला तृतीया के शुभ दिन "शेरसिह की रीया" मे माडूसिह को दीक्षित कर मुनि छगनलाल का शुभ नाम दिया। प्राकृत, सस्कृत, हिन्दी गुजराती आदि अनेक विध भापाओ का तथा जैनागमो का अल्प काल मे ही गम्भीर अध्ययन कर हजारो श्लोको को कण्ठास्थ कर मुनि श्री ने अपने विवेक, विनय तथा वुद्धि कौशत्यता का अद्भुत परिचय दिया। गौरवर्ण, अनूपरूप लावण्य, असाधारण प्रतिभा, कोमल मधुर सुरीली आवाज से जैन समाज के लोग प्रभावित होने लगे।

वि० स० १९७४ मे "शेरसिह की रीया" मे भादवा वदि दसमी के दिन श्रद्धेय महामहिम स्वामी श्री रगलाल जी महाराज सथारा

सहित स्वर्गवासी हो गये । मुनि श्री छगनलालजी को अपार दुःख हुआ । धीरता, वीरता, गम्भीरता और सहनशीलता का आदर्श प्रस्तुत करते हुये तपस्या की आराधना करने लगे। एक वार तो केवल छाछ पर ही छे मास व्यतीत किये । पन्द्रह तक की अनेक फुट-कर तपस्याये की । विशेष प्रकार के अभिग्रह तप किये । गरमी के दिनो मे सूर्य की आतापना, सरदी के दिनो सरदी की आतापना लेने लगे । चाहे गरमी अथवा प्यास कितने जोर की होती दिन मे पानी एक वार ही लगाते । सरदी चाहे कैसी होती, केवल एक सूती चादर अल्प माप मे रखते । कटु प्रसग आने पर भी प्रसन्न रहते । स्थिति चाहे कैसी प्रतिकूल होती मुख मुद्रा को म्लान नहि होने देते थे ।

वि० स० १९१९ को अक्षय तृतीया पर हरमाडा मे सिरसा निवासी श्री टीकमचन्द जी तथा गणेशीलाल जी पिता पुत्र को दीक्षित किया जो इनके जीवन काल मे ही तप सयम की आराधना करते हुये स्वर्गधाम मे जा विराजे। गुरु महाराज स्वय इनकी विशेपकर श्री गणेशीलाल की महाराज की प्रशसा किया करते थे ।[1]

---

१ श्री गणेशीलाल जी महाराज भी प्रकाण्ड पण्डित, मधुर भाषी, चरित्रवान सत थे । गुर के वचनो को भगवान के वचन जानकर उसका पालन करते । गम्भीर स्थिति आने पर भी गुरु सेवा करने मे तत्पर रहते । अन्तिम समय तक गुरु चरणो मे विशुद्ध चारित्र पालते हुये वि० स० २०१२ मे खन्ना नगर (पजाव) मे काल धर्म को प्राप्त हुये । इन गुरु चेला के तप सयम युक्त चारित्र की छाप पञ्जाव मे ऐसी पडी कि इधर के लोगो ने वापस मारवाड जाने नहि दिया । पञ्जाव का साधू समाज भी वडा प्रभावित हुआ, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट श्री श्री १००८ पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज तो विशेप कर इन के निर्मल चरित्र तथा मिलन-सारिता की प्रशसा करते रहते, समय-समय पर हार्दिक साधु-वाद एव परामर्श देते ।"

वि० स० १६६० में अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन साधुओ का अजमेर मे एक बृहत् सम्मेलन हुआ। जिसे सफल बनाने मे आपने विशेष भाग लिया। आपकी योग्यता को निहार कर आपको मन्त्रीपद से विभूषित किया गया। बहुत वर्षो पश्चात श्रमण सघ की अव्यवस्था को देख आपने इस मन्त्री-पद को त्याग दिया।

श्रद्धेय स्वामी छगनलाल जी महाराज का विहार क्षेत्र बडा विस्तृत रहा है। मारवाड, मेवाड मालवा, ढूढाड, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाण, पञ्जाब आदि प्रान्तो को अपने परिपूत चरणो मे पावन किया। सत्य, अहिंसा की गङ्गा यत्र तत्र सर्वत्र प्रवाहित करते रहे।

सुविनीत शिष्य रत्न स्वामी श्री गणेशी लाल जी महाराज के स्वर्ग वास हो जाने पर गुरु महाराज अकेले रह गये। वृद्धावस्था होने पर भी सयम तथा साधु मर्यादाओ को भली प्रकार निभाते। पाव फटने पर भी थोडा-थोडा विहार करते रहते। जहाँ तक वस चलता कम ठहरते। एकले ही विचरते रहते। परिस्थिति वश एकाकी विहार करना आगम सम्मत है जैसे कि—

न वा लहेज्जा निउण सहाय,
गुणाहिय वा गुणओ सम वा।
एक्को वि पावाइ विवज्जयतो,
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥

—उत्तरा० अ० ३२-५

—यदि गुणो मे अपने से अधिक या अपने जैसी योग्यता वाला निपुण साथी न मिले तो साधु सदा=सवदा पापो का वर्जन=परि-त्याग करता हुआ तथा भोगो के प्रति अनासक्ति भाव रखता हुआ अकेला ही विचरण करे।

महाराज श्री ने वापस मारवाड जाने का कई वार विचार किया। विहार भी इसी दिशा की ओर किये फिर भी पन्जाव के भक्तो की भक्ती ने निकलने नहि दिया। महाराज श्री के पास पूठ निवासी स्व० कवरसैन के कवर तथा माता पातोवाई के लाल श्री रोशन लाल जी अग्रवाल वैरागी के रूप मे रह रहे थे। सिरसा (हरियाणा) के श्री सघ ने प्रेम भक्ति से महाराज श्री को विवश कर दिया कि वैरागी रोशनलाल जी की दीक्षा हम करायेगे। महाराज श्री ने भाव भरी विनति को देख वि० स० २०१७ अषाढ शुक्ला तृतीया को रोशनलाल को दीक्षित कर लिया। जिससे गुरु चेला सानन्द विचरने लगे। महाराज श्री की ऐडी मे दर्द वहुत रहने लगा। लम्वा विहार नहि हो पाता था। मारवाड जाने की भावना को साकार करने हेतु आप्रेशन कराया फिर दूसरे पाव की हड्डी वढने लगी जिसका भी दोवार आप्रेशन कराना पडा। आख की ज्योति चली गई उसका उपचार कराया। फिर मधुमेह ने स्वास्थ्य पर डाका डाल दिया। वहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी सन्तोपजनक लाभ न हुआ। मारवाड जाना तो दूर, साधारण चलने फिरने को भी डाक्टरो ने वद कर दिया। इतना कुछ होने पर भी गुरुदेव के मस्तक पर अपार तेज था। वदन प्रसन्न था। भक्त गण चिन्तित थे, पर धर्म देव शात दात थे। सदैव की भाति घण्टो तक वैठकर मौन सहित माला फेरते रहते। अन्त मे वि० स० २०२८, चत्र शुक्ला द्वितीया, रविवार दोपहर के तीन वजे "साधना के अमर प्रतीक" विश्वविभूति-अहिसा, सयम और तप की साधना के महान् साधक सत शिरोमणि परम श्रद्धेय श्री स्वामी छगन लाल जी महाराज ठीक उसी स्थान पर जहाँ पर इनके सुविनीत शिष्य मुनि पुङ्गव महामहिम श्री गणेशीलाल जी महाराज ने शरीर त्यागा था, वही पर समाधि सहित स्वर्गधाम मे जा विराजे।

स्व० गुरु देव स्वामी श्री छगन लाल जी महाराज की प्रकृति वडी

मिलन-सार थी। छोटे वडे अमीर गरीव सभी के साथ एकसा मधुर व्यवहार करते थे। प्रकाण्ड पण्डित, प्रतिभाशाली, वयोवृद्ध, वचन सिद्धि के धनी होने पर भी अपने आपको साधारण साधु दर्शाते थे। उनके दर्शन पाने तथा मुखारविन्द से मगल पाठ सुनने को सदैव लोग-वाग दूर-दूर से आते रहते थे। जव भी देखो आस पास इधर-उधर श्रद्धालु जन वैठे ही मिलते। इसीलिये आज भी जनता वडे आदर सम्मान व श्रद्धा भक्ति के साथ उनका स्मरण करती है।

—गुरु चरण, चचरीक
दीवानचन्द जैन

अनुक्रम

चरित्र चतुष्ट्य

(१) चम्पक चरित्र, १
(२) सत्यघोष चरित्र, ५७
(३) जयसेना चरित्र, ६६
(४) जैनाचार्य श्री रेखराज जी महाराज का जीवन चरित्र । ७६

सप्त महर्षियो का जीवन चरित्र

(१) स्वामीदास जी म० के गुण ग्राम १२०
(२) उग्रसेन जी म० के गुण ग्राम १२३
(३) फकीरचद जी म० के गुण ग्राम १२६
(४) घासीराम जी म० के गुण ग्राम १२८
(५) पूज्य श्री कनीराम जी म० के गुणग्राम १३१
(६) पूज्य श्री वख्तारमल जी म० के गुणग्राम १३२

शिवपुर
के
सौदागर

१

चम्पक चरि

कथासार

दासीपुत्र चपक, जन-मन रजक,
मृत्युञ्जय अवञ्चक, कर्मकटक भञ्जक।

दो मित्र थे, जिनमे एक था कृपण और एक था उदार। दोनो थे कोटीध्वज।

कृपण के मन मे अरवपति वनने की धुन सवार थी पर उसे एक दिन आधीरात मे आकाशवाणी से सुनाई दिया कि —तेरा उत्तराधिकारी और तेरा जामाता एक दासी पुत्र वनेगा।

कृपण पुरुषार्थवादी था जवकि उसका उदार मित्र दैववादी था।

कृपण पुरुषार्थ से आकाशवाणी को मिथ्या सिद्ध करना चाहता था, दैववादी का कहना था—"आकाशवाणी सर्वथा सत्य सिद्ध होगी", दोनो मे तर्क-वितर्क हुए, कथोपकथन द्वारा दोनो ने अपने-अपने पक्ष का समर्थन किया। किन्तु अन्त मे आकाशवाणी ही सत्य सिद्ध हुई।

दासीपुत्र चपक मृत्युञ्जय, धनञ्जय और कर्मशत्रुञ्जय वनकर किस प्रकार मुक्त हुआ? समाधान के लिए प्रस्तुत चम्पक चरित्र का स्वाध्याय पर्याप्त है। इसके प्रणेता है जैनाचार्य श्री रेखराजजी महाराज।

आपका पाण्डित्य सरल-सुमधुर सगीतो से सुरचित इस प्राञ्जल कृति मे प्रतिविम्वित हो रहा है। अत इस चरित्र को पढिए, सुनिए और समझिए।

अर्हम्

चम्पक चरित्र

[रचयिता—आचार्य श्री रेखराजजी महाराज]

दोहा

चउवीसे जिनवर वली, विहरमान जिन वीस ।
गणधरादि मुनि सकल के, चरन नमु निसदीस ।।१

श्री जिनवाणी शारदा, प्रणमु मन शुद्ध आन ।
सद्गुरु पद-पकज नमु, तारक तरनि[1] समान ।।२

चरित्र "चपकसेन" नो, कहु कथा अनुसार ।
सुनो चतुर चित दृढकरी, विकथा नीद निवार ।।३

दान-शील - तप - भावना, चार प्रकारे धर्म ।
भववन-वेलि कुठार सम, दायक शिव-सुर-शर्म[2] ।।४

"अनुकपा दाने" करी, पाम्या चपक सुख ।
इहलोके आनन्द हुवो, वली पामसे शिव-सुख ।।५

ढाल १—आदर जीव क्षमा गुण आदर ए देशी

जम्बूद्वीपे दक्षिण भरते, "नदनपुर" अभिराम जी ।
गढ मठ मदिर वन उपवन कर, सोहे जिम सुरधाम[3] जी ।।
भावधरी निसुणो भव्यप्राणी ।।१

पुरपति "सामत" अति सुखदाई, "रत्नवती" पटनार जी ।
प्रीतवती मनभावनी भामनि[4], शीलतणो सिणगार जी ।।
भावधरी निसुणो भव्यप्राणी ।।२

---

१ नौका । २ सुख । ३ देवलोक । ४ स्त्री ।

तिण पुर निवसे वहु व्यापारी, लक्ष्मीधर गुणवत जी ।
सर्व सिरोमण "वृद्धदत्त" इक, पिण ते कृपण अत्यन्त जी ॥
भावधरी निसुणो भव्यप्राणी ॥३

"सुद्धदत्त" नो जे छे मन्त्री, क्चन छिनवे क्रोड जी ।
छे धन पिण खाय न देवे, रह्यो निरन्तर जोड जी ॥
भावधरी निसुणो भव्यप्राणी ॥४

नाज घृत ने तैल नो सग्रह, साजी साबू लाख जी ।
लोह गुलीने चर्म इत्यादिक, विणजे धन अभिलाष जी ॥
भावधरी निसुणो भव्यप्राणी ॥५

लोवड[1] कम्वल वस्त्र धरे तन, न करे अङ्गनी शोभ जी ।
चवला तेल करी तन पोपे, इणविध धरतो लोभ जी ॥
भावधरी निसुणो भव्यप्राणी ॥६

देव-गुरु वली धर्म न माने, इक "चक्रेश्वरी मात" जी ।
धन वृद्धि कारन सेवा सारे, अरचे तास प्रभात जी ॥
भावधरी निसुणो भव्यप्राणी ॥७

लघुमदिर थापी तसु प्रतिमा, धरे मुखागल ध्यान जी ।
इणविध वीतो काल कितोइक, अव आयो अवसान जी ॥
भावधरी निसुणो भव्यप्राणी ॥८

धनचिता धरता मझ राते, हुई गगन पुरवान जी ।
तव सपतिनो स्वामी शेठ ! अव, होसे कोई आन जी ॥
भावधरी निसुणो भव्यप्राणी ॥९

अनुदिन तीन निशालग[2] वाणी, सुणता सोच अपार जी ।
कुण होसे मुझ धननो नायक[3], करिये यह निरधार जी ॥
भावधरी निसुणो भव्यप्राणी ॥१०

१ ऊनी कम्वल । २ रात्रि । ३ स्वामी ।

समर चक्रेश्वरी पुछु सारी, लागो चित जजाल जी ।
"रेखराय" कहे चपक चरिते, पूरण प्रथम ढाल जी ॥
भावधरी निसुणो भव्यप्राणी ॥११

दोहा—वृद्धदत्त चित्त चितवे, देवी समरू आज ।
तिण थी यह पग[1] पामिए, सीझे वछित काज ॥१
करी स्नान नूतन वसन[2], चदन चरचित काय ।
माता मुख सनमुख करी, बैठो ध्यान लगाय ॥२
चतुर भुजि चिता हरन, सेवक करन सहाय ।
सुखदाता त्राता[3] सदा, महर करो हिव माय ॥३
कुण होसे मुझ धनधणी, नाम ठाम अवदात ।
वेग कहो या विध धरत, वीत गया दिन सात ॥४

ढाल २—धनरारे लोभी प्राणिया यह देशी

कहे मात मध्य रात मे, मुधा[4] नही सुरवाणी रे ।
स्वामी तुम सपति तणो, होसे पुन्यवन्त प्राणी रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥१

नाम ठाम मुझ ने कहो, तव ते प्रगट बतावे रे ।
"कपिलपुर" व्यवहारियो, "विक्रम" नाम कहावे रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥२

धर्मी ने धनवत छे, "पुष्पवती" तसु दासी रे ।
धर्मव्रती सुत तेहनो, तुम घरनो पति थासी रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥३

तव सुण चितातुर थयो, कहे सुरी शोच निवारो रे ।
प्रवल जोर भावी तणो, अव कछु भलिए विचारो रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥४

---

१ पता । २ वस्त्र । ३ रक्षक । ४ मिथ्या ।

एम कही देवी गई, रवि उगा घर आयो रे ।
भोजन कर "सुद्धदत्त" पे, बोल्यो अति अकुलायो रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥५

चितातुर देखी करी, मित्र तदा पूछतो रे ।
देव-कथित सब माडने, भाख्यो सकल वृत्ततो रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥६

दासी सुत घर पत हुवे, ए मुझ सोच अपारो रे ।
कोई उपाये ए टले, दाखो[1] तेह प्रकारो रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥७

दुल्लभ द्रव्य कमाइयो, करके कष्ट अनेको रे ।
सो घर जाय गुलाम के, दैव तणी गत देखो रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥८

"शुद्धदत्त" कहे वधव सुणो, म धरो अरति[2] लिगारो रे ।
वीतरागना वचन ए, आथ[3] अथिर ससारो रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥९

जल बुदवुद अरु स्वप्न ज्यू, ज्ञानी देवा गाई रे ।
सध्या राग वादल समी, पलटत पलक ही माही रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥१०

सुणो शीख हिव माहरी, धर्म ही काज लगावो रे ।
इण भव जस परभव विसे, स्वर्ग तणा सुख पावो रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥११

लीजे लाहो कर तणो, इण विध अति समझावे रे ।
वीजी ढाल ऊपर विसे, वाह्या वीज न पावे रे ॥
कहे मात मध्य रात मे ॥१२

---

१. कहो । २ चिन्ता । ३ धन ।

दोहा—कहे कृपण उपदेश तव, लगे दग्ध तन खार ।
विबुध[1] वचन होवे वृथा, सो उपकर्म उचार ।।१
पूजी प्यारी प्रान ते, कोडी कोटी समान ।
न पढू पाठ दकार मुख, कहा जु देवो दान ।।२

चन्द्रायणा—और न चाहू लिगार कहो उपचार ए,
विबुध वचन टल जाय वचे भडार ए।
कहे मित्र सुन वधु वृथा क्यु विलविले,
किया क्रोड प्रकार भावि या नवि टले ।।१

"राम" ग्रह्यो वनवास ज्यानकी रन फिरी,
द्यूत रम्यो "धर्मराय" हारी सव नृपसिरी।
"दमयती" वन छोड दोडतो नल फिर्यो,
नीच सदन मे नीर भूप "हरिचद" भर्यो ।।२

होसी "द्वारिका" दाह के जिन फुरमावियो,
"हरी" तव सुरा[2] ढुलाय के तप करावियो।
सुनी वाण की वाल, "जरा" तव वन मे गयो,
होतव टलियो नाही हुवो जिम जिन कियो ।।३

दोहा—तिन कारण सुन मित्र तूं, और नही उपचार ।
धर धीरज कर धर्म तू, होय सफल अवतार ।।१

ढाल ३—लावणी

"वृद्धदत्त" जपे सुन रे बधव, पडित न्याय विचार लहे,
सिल्ला ऊपरे वैसी रहिए, मूरख होय सो एम कहे।
सरे काम उद्यम थी सवही, तिल्ली पीलकर तेल गहे,
दधी मथत घृत अरणी ते अग्नि भू खोदत नीर अथाह वहे ।।
वृद्धदत्त जपे० ।।१

---

१ देवता । २ मदिरा ।

भूमि समारी वृक्ष आरोपे, कुसुम जाति नाना विकसे ।
उद्यमते अरी जीत अभित हुए भूपति सुख वहुधा विलसे ।।
वृद्धदत्त जपे० ।।२

रिद्धि सिद्धि विद्या उद्यमते उद्यमही ते अर्थ लहे ।
उद्यमते मुनि मुक्ति जात हे कठिन कर्म छिनमाहि दहे ।।
वृद्धदत्त जपे० ।।३

"शुद्धदत्त" कहे सत्य कही ते भाग्य विना कछु नाहि लहे ।
पति सजोग पुत्र नवि पामे वाञ्छ मनोरथ माहि रहे ।।
वृद्धदत्त जपे० ।।४

जल थल एक घडी मे पूरे जलधर जग उपगार करे ।
चातक विदु परे नही मुखमे छिद्र मुखे ततकाल गिरे ।।
वृद्धदत्त जपे० ।।५

मुधा होत उद्यम होतव विन सुनहु श्रवन कथा मिठी ।
पूर्व पुरुप हुवा जे आगे ज्ञान दृष्टि करि तिण दिठी ।।
वृद्धदत्त जपे० ।।६

"गगा" तीर नगर एक अद्भुत वारु "विशाला" नाम भलो ।
धन-कण-कचन-रिद्ध समृद्धे "रत्नसेन" नृप गुणहि निलो ।।
वृद्धदत्त जपे० ।।७

"प्रीतिमति" रानी अति सुदर सीलवती गुणवान भली ।
सर्व अतेउर माहि सिरोमण जल-सफरी[1] जिम प्रीत मिली ।।
वृद्धदत्त जपे० ।।८

"रत्नदत्त" नामे तसु नदन कामदेव उपमा पावे ।
सूरवीर धीरज गुण विनयी देख्या ही आनन्द आवे ।।
वृद्धदत्त जपे० ।।९

१ मछली ।

देश विदेश नवा नवा, पुर पाटण वहु गामरे ।
मनचाही पाई नही, अति चितातुर तामरे ॥
"शुद्धदत्त" कहे वधव सुणो ॥२

गगा तट आव्यो तिसे, दीठो सरवर एकरे ।
कमल आच्छादित जल भर्यो, तट तरु जात अनेकरे ॥
"शुद्धदत्त" कहे वधव सुणो ॥३

देख मनोहर मन्त्रिए, कियो ताम पडावरे ।
आवश्यक क्रिया करे, काम करण चित्त चावरे ॥
"शुद्धदत्त" कहे वधव सुणो ॥४

इते मनोहर मानिनी, रति रभा अनुहार रे ।
कचन कलशज सिर धरी, जलग्रही चलिय तिवार रे ॥
"शुद्धदत्त" कहे वधव सुणो ॥५

देख सचिव जव शीघ्र सु, आडो फिरियो आयरे ।
कहे कामन कारण किसो, चतुर रमणी देखायरे ॥
"शुद्धदत्त" कहे वधव सुणो ॥६

कहो तुम वनिता कवन छो, कुण पुर नो वलि रायरे ।
नृपने सतति केतली, वह मुझ भेद वताय रे ॥
"शुद्धदत्त" कहे वधव सुणो ॥७

कहे सुदर यह सुदरु, "चद्रस्थल पुर" जाण रे ।
वारे योजन मे वसे, "चन्द्रसेन' नृप कुल भाणरे ॥
"शुद्धदत्त" कहे वधव सुणो ॥८

"दशरथ सुत" जिम दीपतो, "चद्रलेखा" पटनार रे ।
पद्मनि पाच सया अछे, रूप ने गुण भण्डार रे ॥
"शुद्धदत्त" कहे वधव सुणो ॥९

"चद्रलेखा" निज अगजा, "चद्रावती" अभिराम रे ।
करता निज करथी करी, सकल गुणा की धाम रे ॥
"शुद्धदत्त" कहे बधव सुणो ॥१०

सुरिया "सुरपुर" मे छिपी, खेचरी रही गिरधार रे ।
नागकुमारी पायाल मे, एक न आवे बाहर रे ॥
"शुद्धदत्त" कहे बधव सुणो ॥११

सुर अनमिप[1] थया निरखवा, तपसी तप तपत रे ।
जाणे ये वनिता मिले, रवि नित भ्रमण करत रे ॥
"शुद्धदत्त" कहे बंधव सुणो ॥१२

तेहनी हु दासी अछु, "तिलकवति" अभिधान रे ।
माहर्यो आण्यो जल पीये, आवी तिणे इण थान रे ॥
"शुद्धदत्त" कहे बधव सुणो ॥१३

सुण मत्री राजी थयो, जाण्यो कारज सिद्ध रे ।
वेद[2] मख्या रेखराज रे, ढाल सीख तसु दीध रे ॥
"शुद्धदत्त" कहे बधव सुणो ॥१४

दोहा—मत्री ले परिकर तदा, आय कियो पुरवास ।
भेट लेये नृपनी सभा, आयो अति उल्लास ॥१

देख सिकल सरदारनी, मन रज्यो महिपाल ।
अति आदर आसन दियो, पूछे कुसल विसाल ॥२

अहो पुन्य ए प्रगटियो, कन्या सज शृ गार ।
मेली निज माता तदा, आवी नृप दरबार ॥३

नमन करी निज तातके, बेठी अ के आय ।
मत्री मन जाणी इसी, नही बीजी जग माय ॥४

ढाल ५—देशी-रसियाना गीतनी

राय कहे मत्री किम आविया, निवमो कुणमे देश-मत्रीसर ।
निजपुर आदिक माडने, दाखी वात अशेष[3]-मत्रीसर ॥
राय कहे मत्री किम आविया ॥१

---

१ टकटकी लगाये हुए । २ चार । ३ सम्पूर्ण ।

आज कृतारथ स्वामी हू थयो, देखी आप दीदार नरेश्वर ।
आप जिसा नृप नही निरखिया, जोया भूप अपार, नरेश्वर ।।
राय कहे मत्री किम आविया ।।२

राय कहे को अचिरज देखियो, ते दाखो इणवार-मत्रीसर ।
कहे मत्री अचिरज वहु भातरा, पूछो कवन प्रकार-नरेश्वर ।।
राय कहे मत्री किम आविया ।।३

"पुरुपरूप" पूछू इम नृप कहे, तव वोल्यो परधान-नरेश्वर ।
रत्नगर्भा ए स्वामी वसुधरा[1], अधिक २ नर जान-नरेश्वर ।।
राय कहे मत्री किम आविया ।।४

नाना देश विदेश ज हू फिर्यो, पिण रज मे तज जान-नरेश्वर ।
"रत्नसेन" सुत "रत्न जदत्त" जी, नही को तास समान-नरेश्वर ।।
राय कहे मत्री किम आविया ।।५

कामदेव सम मोहन मूरति, वलि पूछ्यो तव राय-नरेश्वर ।
दूर रह्यो अति आकृति तेहनी, किण विध जानी जाय-मत्रीसर ।।
राय कहे मत्री किम आविया ।।६

अवसर जाणी पट प्रगट कियो, रीझ गयो अवनीश[2]-नरेश्वर ।
गुप्ते निरखी रीझी कन्यका, इणभव ये शिर ईश-मत्रीसर ।।
राय कहे मत्री किम आविया ।।७

सीख दिवी कन्या ने नृप तदा, अरु मत्री ने ताम-नरेश्वर ।
कोइक दिन थे वसो कारज अछे, वताव्यो सुन्दर धाम-नरेश्वर ।।
राय कहे मत्री किम आविया ।।८

मदिर आवि नृप वाला तदा, वस्यो कुमर मे मन्न-मत्रीसर ।
कव मिलसी मनरजन वाल हो, जाणु दिहाडो[3] धन्न-मत्रीसर ।।
राय कहे मत्री किम आविया ।।९

---

१ पृथ्वी । २ राजा । ३ दिन ।

"षट्मासा मे मोहन न वि मिले, तो करिवो तन त्याग"-मत्रीसर ।
एह अभिग्रह[1] मनमाही धर्‌यो, विरह सवल जग आग-मत्रीसर ॥
राय कहे मत्री किम आविया ॥१०

ढाल पाचमी वनिता मन वस्यो, "रत्नदत्त" निमदीस मत्रीसर ।
"रेखराज" कहे जीते काम ने, तास नमाऊ सीस मत्रीसर ॥११

दोहा—रेण समे निज भुवन मे, वाला रही अकुलाय ।
सखी सग सव परहरी, रही एकाते आय ॥१

भूख तृषा सव वीसरी, नींद न आवे नैन ।
हार माल ककन तजे, चित नही पावे चैन ॥२

खिण भीतर खिण वाहिरे, खिण सोवे आवास ।
खिण ऊठे ऊभी खिणक, आतुर अधिक उदास ॥३

देख दशा विपरीत इम, "तिलकवती" पूछत ।
शाकिनी ग्राहितनी[2] परे, वाई तू दीसत ॥४

माड कहो मुझ ने सकल, ज्यु तुम सारं काज ।
मुझ थी अ तर छे नही, कहो दूर धर लाज ॥५

चद्रायणा—कहे वाला सुण वात, सखी ! तू माहरी
तू दुख काटनहार, प्रेम पूरण भरी
गई थी नृप दरवार, पट्ट मै निरखियो
सो वसियो दिलमाय, मानु कामन कियो ॥१

इणभव ओ भरतार, मास षट् मे मिले
जो न मिले सजोग तो, तन पावक जले
ग्री मनमाही वात, तिका तुमने कही
वालम वेग मिलाय, हारद एहनो यही ॥२

---

१ प्रतिज्ञा । २ प्रभावित ।

कहे सखी वाई ! अरति एह अलगी धरो
कर सही ए काज, वचन माहरु खरो
कही प्रात ही वात, सकल तसु मातने
राणी पिण सब भेद, जणाव्यो नाथने ॥३

दोहा—नृप कहे स्वयवर माडतो, थी इच्छा मनमाहि ।
वाई वर मन ए वर्यो, तो ढील करु हिव नाहि ॥१

ढाल ६—थारे पडखे बोल्या मोर झरोखे माहरे—ए देशी

जोडी नृप दरवार मत्री वोलावियो हो लाल मत्री०
होई हरपित मन्न के ततखिन आवियो हो लाल तत०
दियो नृप सनमान के बेठो आगले हो लाल बेठो०
पूछ्यो राय उदत[1] मत्री मन अटकले हो लाल मत्री० ॥१

रूपे जेम अनग[2] विद्या "सुरगुरु"[3] जिसो हो लाल विद्या०
गहरो सिधु समान करु वर्णन किसो हो लाल करु०
कहो मत्री ! ए कुमर ने कामन केतली हो लाल . कामन०
स्वामी ! न परणी एक चहे नृप एतली हो लाल चहे नृप० ॥२

होई भूप प्रसन्न गणिक[4] तेडावियो हो लाल गणिक०
दाखो लगन अति शुद्ध व्याह ते जोवियो हो लाल व्याह०
सकल गणित सुविचार, कहे दिन सतरमे हो लाल कहे०
छे साहो अति शुद्ध, रहे आनन्द मे हो लाल रहे० ॥३

ए टाल्या थी वरस युगल[5] मे फिर नही हो लाल युगल०
आगम के अनुसार विचार निमित्तिक[6] कही हो लाल नि०
नृप पूछे मत्रीश ! दूर पुर केतलो ? हो लाल दूरपुर०
शत योजन हे स्वाम ! शुद्ध मारग भलो हो लाल शुद्ध० ॥४

---

१ वृत्तान्त । २ कामदेव । ३ वृहस्पति । ४ ज्योतिषी । ५ दो ।
६ ज्योतिषी ।

नृप कहे अल्प दिना मे किम वणसी सही हो लाल किम०
मन्त्री कहे महाराज ! सोच करणो नही हो लाल सोच०
साड[1] अछे नृप पास घडी योजन चले हो लाल घडी०
आसे तुरत कुमार काम थासे भले हो लाल काम० ॥५

देइ शीघ्र शिरपाव सचिव विदा कियो हो लाल सचिव०
कुमरी चित्र लिखाय पट लारे लियो हो लाल पट०
पाच दिवस ने अ त भूप पे आवियो हो लाल भूप०
हर्षित चित्ते हाल सुनावियो हो लाल हाल० ॥६

सहु को विस्मित होय चित्रपट देखता हो लाल चित्र०
बीजी इण सम नाय सकल त्रिय लेखता हो लाल सकल०
जिम-२ देखे कुमार के तिम-२ उलसे[2] हो लाल तिम०
कियो काम मन्त्रीश भलो मुझ भाग से हो लाल भलो० ॥७

मन्त्री वधार्यो मान महीपति तिहा घणो हो लाल मही०
तू मुझ प्राण समान पार नही बुध तणो हो लाल पार०
शीघ्र दिया समाचार काम करणो सिरे हो लाल काम०
विहु घरे आनद उच्छव अनुदिन[3] करे हो लाल अनु० ॥८

कहे "शुद्धदत्त" ! सुण बधु जोर भावितणो हो लाल जोर०
विहु घर वध्यो आनन्द पार नही हरषनो हो लाल पार०
"रेखराज" भाखे कुमर कुमर तणी हो लाल कुम०
हिव अचिरज की वात ढाल रस[4] मी वणी हो लाल ढाल० ॥९

दोहा—चितवियो धरियो रहे, और अचितित होय ।
प्रवल जोर भावितणो पहुच सके नही कोय ॥१
पति चिते मन पद्मनी, पद्मनी मन पिउ ध्यान ।
विचमे वीतक वीतियो, भविक सुणो धर कान ॥२

१ ऊटनी । २ प्रसन्न । ३ प्रतिदिन । ४ छ ।

ढाल ७--अब मन मेरा बे—यह देशी

इण अवसर मे रे "लका नगरी" मोहे,
कोट कनकरो रे मणि कगुर मन मोहे ।
मोहे मदिर सब सोवन घर, लकपति "रावण" राजे,
तीन खड मे आण अखडित, श्री देख श्रीपति[1] लाजे,
"कु भकरण" "विभीषण" बधव, "मदोदरी" आदिक राणी,
सहस अष्टादस सोहे सु दर, शशिवदनी अमृत वाणी ॥१

विद्या साधी वे सहस्र भूप सुखकारी,
नरवर सुरवर रे आज्ञा शिरपर धारी,
धारी शिरपर "इन्द्रजीत" से, नदन तो सोहे वाके,
मेघनाद जैसा महाबलिया युद्ध करत सुरवर थाके,
सुग्रीवादिक सहस्र सोल नृप आणा जास प्रमाण करे,
इन्द्र नरेन्द्र से दिये पिजरे नाम सुणता शत्रु डरे ॥२

सभा जोडनेरे एक दिन "रावण" राजा,
सार्ध लक्षज रे वाजे विध विध वाजा,
वाजे वाजा सामत ताजा, सभा जेम केसर क्यारी,
इते एक निमित्तक आयो, तसु विद्या महिमा भारी,
भूत भविष्यत् वर्तमान के, वर्तन[2] मुख उच्चार करे,
विद्वज्जनमणि हे सत्यवक्ता, फरक कथन मे नही परे ॥३

आदर देई वे त्रिहु खड को स्वामी,
पूछे तब ही वे नैमित्तिक सिरनामी,
सिरनामी य कई दाखो है, वा को होयगा ऐसा ?
"भरतक्षेत्र" के बीच भूपति, हमसे जग करे जैसा,
मुज कु जग मे मारने वाला, जानो तो जाहर करो,
सत्य ज्ञान जानु तब तेरा, एह भर्म मुज दूर हरो ॥४

---

[1] कुबेर । २ वृत्तान्त ।

दोहा—राक्षसपति राक्षस भणी, लियो क्षिप्र बुलाय ।
करियो काम उतावलो, "चन्द्रस्थल पुर" जाय ।।१

"चन्द्रावती" नृप की सुता, आणो इहा उठाय ।
तोल वधासु ताहरो, इम फरमायो राय ।।२

ढाल ८—राघव आविया हो सुभट सगला सूर ।। ए देशी ।।

निशाचर जव शीघ्र चाल्यो, दियो नृप आदेश ।
"चन्द्रस्थलपुर" चाल आयो, ढील न करी लेश ।।
भावी टालवा हो करे राय उपाय ।।१

रग भुवने रही वाला, सखियन के परिवार ।
विविध विनोद करन्त वरते, हिये हरख अपार ।।
भावी टालवा हो करे राय उपाय ।।२

हरिण हरि जिम मच्छी वक जीम चिटकली जिम वाज,
तेम वाला लेय चाल्यो, करे काई इलाज ।
भावी टालवा हो करे राय उपाय ।।३

कर कोलाहल सुभट ध्याया, चले सनन वाण ।
पिण उपाय न एक लाग्यो, चढ्योजइ असमान ।।
भावी टालवा हो करे राय उपाय ।।४

दूर हुई दृष्टि ही थी, पड्यो धर नृप जाय ।
रग माही भग कियो, दई दुष्ट दिखाय ।।
भावी टालवा हो करे राय उपाय ।।५

लाय सूपी लकपति ने, "तिमगला" वोलाय ।
कहे राखो उदधि तीरे, मञ्जूषा के माय ।।
भावी टालवा हो करे राय उपाय ।।६

दिवस सतरा यत्नकीजो, फेर सुपो आण ।
लेय मुख मे ताम चाली, नृप वचन प्रमाण ।।
भावी टालवा हो करे राय उपाय ।।७

गगा सागर सिन्धु पासे, देवी निवसी आय ।
हिवे केइक दिवस अन्तर, "तक्षनाग" वुलाय् ।।
भावी टालवा हो करे राय उपाय ।।८

जा "वीशालापुर" माही, रत्नसेन नृप नद ।
डक दीजे काम कीजे, टलै जिम मुझ फन्द ।।
भावी टालवा हो करे राय उपाय ।।६

नाग तत्क्षिण आवि मदिर, सुतो यत्र कुमार ।
ताम निघृंण[1] डक दियो, रहि न शुद्ध लिगार ।।
भावी टालवा हो करे राय उपाय ।।१०

रक्षपत सु आवी दाखी, मेटियो जजाल ।
मेदनीपति कुसी मानी, रेख अष्टमी ढाल ।।११

दोहा—असुर[2] हुओ आव्यो नही, नृप पूछे केम कुमार ।
अगरक्षक आवो कहे, वनियो एह विचार ।।१

नृप सुन अति व्याकुल हुओ, देखे आय दिदार ।
नीलो तन विप घुल रह्यो, करे भूप हाहाकार ।।२

यन्त्र मन्त्र औपध जडी, भात २ उपचार ।
गारुडी आदिक करे, लागे नही लिगार ।।३
तात मात तसु देख ने, करे विलाप अपार ।
कुलदीपक यू क्यू पड्यो, वोल हुप्राण आधार ।।४

ढाल ६—धर्म जिनन्द सू लागी ।। ए देशी ।।

हॉ रे काई वोलो मनमोहन खोलो नैन लिगार जो ।
तुम विन रे अकुलावे जीवडो माहरो रे लो ।।
हॉ रे काई ।।
दुष्ट देवयोग पडियो माहरी लार जो,
कीयो रे रगमाही भग पापी खरोरे । हॉ० ।।१

---

१ निर्दय । २ देर ।

स्यू आशा थई निरासा लाल जो,
भाखे रे नृप कुमार वेग साजो[1] करोरे लो,
देसू मन वञ्छित कचन मणि वहूमाल जो,
एह विना तो नहि कोई मने आसरो रे लो ।। हाॅ० ।।२

तव भाखे मत्री लागे नही उपचार जो,
जीवीत नी तो आसा मुसकल छै घणी रे लो,
करिये एह ना शरीर नो सस्कार जो,
भावी सु नही जोर सुनो वसुधा धणी रे ।। हाॅ० ।।३

नृप धीरज धर ने कहि पडित वोलाय जो,
स्यू गति रे हिव कीजे एहना तन भणी रे लो,
दाखे जव पडित पेइ मे धराय जो,
गगा रे बुहावो यू आगम भणी रे लो ।। हाॅ० ।।४

हाॅरे जीम दाखी तिमहि सकल कराय जो,
पेई रे पधरायो मयणमुद्रा धरी रे,
तत्क्षण गगा मे दियो नद बुहाय जो,
आवे रे उदधि मे भावी वस करीरे लो ।। हाॅ० ।।५

भवि निसुणो इचरजवाली कन्या वात जो,
देवी रे शुध भुली दिन अठारमो रे,
मजूषा माहि रही कन्या अकुलात जो,
काढ रे हिव वारे मिटे ज्यू ऊघमो[2] रे लोय ।। हाॅ० ।।६

इम आणी दया ने दीवी वाहर निकाल जो
देवी कहे हूँ जाऊँ क्रीडा कारणे रे ।।
दीधा अमृत फल करीय एह आहार जो ।
देखो रे वन तरुवर राखू वारणे रे लो ।। हाॅ० ।।७

---

१ तैयार। २ गर्मी।

एह कही ने देवी गई अति दूर जो,
पाछल रे हिव वाला फिरे वन जोवती रे।
अमृतफल खाधा विकसित हुओ नर जो,
चिन्तेरे इण भावी करि अणहोवतीरे लो ।। हाँ० ।।८

कीहा मुझ जननी जनक सकल परिवार जो।
भरतारे दुख हरता किहाँ छै माहरोर ।।
नवि मिलतो दीसे जोग ए कोई प्रकार जो।
ढाल जरे ए नवमी विरह उलटियो खरो रे लोय ।।हाँ०।।९

"रेखराज" कहे निसुणो सहु साथ जो ।
भावी ने हिव जोग किण विध मिले रे लो,
सुणवा सरिखी निपट रसीली वात जो ।
मन मान्या कुमरी ना किम पासा टले रे लो ।।हाँ०।।१०

दोहा—इम चिन्ता धरती थको, जोवे दृष्टि पसार ।
मजूषा तरती थकी, आवी निजर तिवार ।।१

कर हिम्मत आवी निकट, तव सरितानी तीर ।
जाणी माल मनोहरू, काढी वार सधीर ।।२

मयण मुद्रा अलगी करी, माही जोवे जाम ।
विष-पूरित तन पेखियो, रूप महा अभिराम ।।३

विषधर विष जाणी करी, मणिमुद्रा[1] तिणवार ।
वारि पखाली पाइयो, तुरत लग्यो उपचार ।।४

खुल्या नैण मूर्छा मिटी, प्रगट्यो पुन्य प्रचूर ।
उठ्यो अति उतावलो, निरखी नार हजूर[2] ।।५

---

१ विषनाशक मुद्रिका । २ प्रत्यक्ष ।

ढाल १०—करहानी देशी।

कामनी नीरख्यो कुमर ने जी, काई मन मे करत विचार,
हा जी सुरत प्यारी जी, हूँ जाऊँ वलिहारी जी,
सुखकारी साहिव मारा है, प्यारा है प्राण आधार।टेर।।
पटमाहि जो पेखियो जी, काई दीसे तेह दीदार[१]। हा ।।१

कुमर पिण इम चिन्तवे जी काई, चित्र लिखी सुएह ।। हा।
माननी मन मोहनी जी। काई। इण मे नही सदेह ।। हा ।।१

पत्नी प्रेम भरी कहे जी, काई छे तुम स्यू अभिधान[२]। हा।
मात तात पुर छै किसो जी, काई, किम आया इण थान ।।३

कहे कुमर कहो ताहरी, कॉई वीति जितरी वात ।। हॉ ।।
सारी माड सुणावता जी रोम रोम उलसात ।। हॉ ।।४

कुमर लखी निज कामनीजी कॉई, हर्ष हिये न समाय ।। हॉ ।।
निज वृत्तात वतावता जी काई उभय परम सुख पाय ।। हॉ ।।५

भुखा जिम भोजन मिले जी काई तिरखा माही तोय ।। हॉ ।।
आतप मे जिम छाहडी जी, काई तेम अधिक सुख होय ।। हॉ ।।६

नयणै नेण निहालता जी काई, विहू मन वाध्यो प्रेम ।। हॉ ।।
आज लग्न दिन साधिये जी, कॉई तो सहुथाये खेम[३] ।। हॉ ।।७

आज अचिती दशा फली जी कॉई पूरी मनोरथ माल ।। हॉ ।।
पाणिग्रहण पिउडा करोजी, काई ज्यू मिट जाय जजाल ।। हॉ ।।८

धूल तणी ढीगली[४] करी जी, काई, सूरज देव नी साख ।। हॉ ।।
माला गगा फूलनी जी, काई, पूरे मन अभिलाप ।। हॉ ।।९

अरणी मथि अगनि रची जी, काई श्रीफल[५] होमे ताम ।। हॉ ।।
सिद्ध कियो तव दम्पति जी काई, चितनो चितित काम ।। हॉ ।।१०

१ मुह। २ नाम। ३ आनद। ४ ढेरी। ५ नारियल।

कहे वनिता सुण वालहाजी[1], काई मजूषा मे आप ।। हाँ ।।
सयन करो आसी सूरी जी, काई, रखे करे संताप ।। हाँ ।।११

तिमहि करे वनिता तदा जी काई, आडी सूती आय ।। हाँ ।।
इतरे आवी तिमगला जी काई जोवे वन मे माय ।। हाँ ।।१२

साद करत वोली तदा जी, काई, हूँ सुती छू माय ।। हाँ ।।
दसमी ढाल "रेखराज" कहे जी काई, पुन्य समो जग नाय ।। हा ।।१३

दोहा—सत्यवत जाणि तदा, अहो धन्य ए वाल ।
एक अधिक दिन जाण के, गगन चली तत्काल ।।१

मजूषा मुख मे धरी, कहे अधिक वधू भार ।
पूछता "चन्द्रावती", भाखे भेद विचार ।।२

भोजन पवन प्रयोगते, वजन वध्यो तन माय ।
आप ग्रही वहु वार ते, सूरी कहे सत्य प्राय ।।३

आवि लका ले करी, तव तो हुओ प्रभात ।
हरसित होय जोरी सभा, हुकम करे नरनाथ ।।४

ढाल ११—धर्म न जासा देय दिलासा । ऐ देशी ।।

शुद्रदत्त कहे सुण हो वधव, भावी रचना हे भारी ।
सकल सभा मे राजा रावण, कहे होय के हुसियारी ।
गणिक वचन टारण के कारण, एह उपाय वनायो ।।
सतरा दिवस होयगया पूरा, अष्टादशमो दिन आयो ।
हिव निरखो ग्यान निमित्तिक के रो के मो विद्याधारी ।।शु०।।१

एम कही ने सभा वीच मे, तत्क्षण हि ते कायो ।
सकल सभा कहे कही एहनो, नाश काल अव आयो ।
भाखे पडित ज्ञान अखण्डित, आशीर्वाद उचारी ।।शु०।।२

---

१ प्रियतम

त्रिखडाधिप श्यू पुछो हिव, राय कहे हिव भाखो ।
पाणिग्रहण[1] हुओ के नाहि, जेम हुए तिम दाखो ।।
सुन राजा भावि है प्रवल, टरे नही ए टारी ।।शु०।।३

सकल होय विस्मित[2] मजूषा सभा वीच मगावे ।
नृप प्रयत्न करी ने समुख, मुद्रा[3] दूर करावे ।।
देखी वाला रूपरसाला, काकण डोरा[4] धारी ।।शु०।।४

इचरच पाय माय तव निरखे, रत्नदत्त गुणवत ।
पडित कहे सकल तुम देखो, ऐ कामनि ए कत ।।
तव अद्भुत रस पाय कहे सव, किम परणी ए कुमारी ।।शु०।।५

होनहार टले नही, कव ही सत्य कहे ए नाणी ।
किया उपाय एतला तोही, होय गई अणजाणी ।।
धीरज धरो करो ए दृढता, कर्म तणी गति न्यारी ।।शु०।।६

पडित ने सिरपाव[5] दियो तव, मणि माणक शृगार ।
कुडल मुकुट ओर कणदोरो[6], गिणता न लहे पार ।।
कहे कर जोर लक नो स्वामी, धन्य धन्य विद्या धारी ।।शु०।।७

हिव पडित पहुच्यो निज थानक, देय विद्याधर लार ।
कुमार कुमारी ने पहुचाया, वरत्या जय जय कार ।
तात मात सु जई मिलिया, कथा सुणाइ सारी ।।शु०।।८

ढाल रसाल इग्यारमी, वारु "रेखराज" दाखे ।
वृद्धदत्त समजावण कारण, प्रगट कथा ए भाखे ।
समझो मित्र धर धीरज, करो धर्म हितकारी ।।शु०।।९

---

१ विवाह, २ आश्चय, ३ शील, ४ परिणयचिन्ह, ५ पहनने के वस्त्र, ६ कटिसूत्र ।

दोहा लघु बंधव निसुणी कहे, भली कही ए बात ।
जाके मन हिम्मत नही, ताकु एह सुहात ।।१
सत्वहीन जे मानवी, उद्यम रहे विसार ।
पुछे जाकू यू कहे, हुवे ज्यु होवण हार ।।२

चन्द्रायणा—सुण मंत्री मतीवंत उद्यम जग सार है ।
सुख सम्पति अरु राज उद्यम के लार है ।।
करे ज्यु चिंतित काज मन दृढ धार है ।
लेवे जुच्यार विचार तो मेरु उखार है ।।१

दोहा—लंका गढ रघुपति लियो, हिम्मत ते अरि ढाय,
हींमत ते हरि द्रोपदा, आनी द्वीप पर जाय ।।२
अहो वृद्धि उत्पात जग, "विजयसेन" नृप काल ।
टाल्यो सचिव उपाय कर, सुनुह कथा रसाल ।।३

ढाल १२— पथिडारी, देशी ।।

पुष्कर रे २ "पोतनपुर" भलो रे। स्वर्गपुर हि समान रे ।
ईतज रे ईति भीति व्यापे नही रे। "विजयसेन" राजान रे।
निसुणो रे निसुणो कथा उद्यमतणी रे ।।१
सील ज रे "सील मति" पटरागनी रे, अपछर[1] ने उणियार रे।
विहुमन रे २ हढता धर्मनीरे, पाले श्रावकाचार रे ।।नि०।।२
जोडी रे जोडी रे सभा नृप अन्यदारे, बैठा सहु सामन्त रे ।
आव्यो रे २ एक निमित्तियो रे, जान महा मतिवंत रे ।।नि०।।३
आदर रे २ दे अवनीपति रे, भयो सफल दिन आज रे ।
आसन रे २ दियो बिछायवारे, बैठो पडितराज रे ।।नि०।।४
पूछ्यो रे २ आव्या आप किहा थकीरे, चम्पा थी महा राय रे ।
पूछे रे २ वली पढिया किहारे, कहै मे काशी माय रे ।।नि०।।५

---

१ अप्सरा ।

जाणे रे सी सी विद्या ज्योतिषी रे, कहै विद्या सिद्ध समान रे ।
पिण जाणु रे जीवनमरण जगनाथ जी रे, सुख-दुख लाभ र हानरे ॥
निसुणो रे निसुणो कथा उद्यमतणी रे ॥६

पूछे रे २ पृथ्वीपति प्रगट पणे रे, आखो आगम वातरे ।
वातज रे २ सात दिनो मे, स्यु हुसी रे निसुणो सब ही साथ रे ॥
निसुणो रे निसुणो कथा उद्यमतणी रे ॥७

पडित रे २ सीस धूण्यो[1] तदारे, वसुधापति पूछन्तरे,
इम किम रे२ गणिक कहे स्वामी सुणो रे, भावी जग बलवन्त रे ॥
निसुणो रे निसुणो कथा उद्यमतणी रे ॥८

ग्यान जरे २ प्रमाणे हूँ कहूँ रे, मुझने मति दियो दोष रे ।
होसी रे २ जिम तिम हूँ कहूँ रे, मत धर जो मन रोस रे ॥
निसुणो रे निसुणो कथा उद्यमतणी रै ॥९

भाखे रे २ भूप कहो निमकथीरे । सप्त दिना के अतरे ।
पोतन रे २ पुरपति ऊपरे रे, विद्युत आन परन्तरे ॥
निसुणो रे निसुणो कथा उद्यमतणी रै ॥१०

निसुणी रे २ वचन एह विदुप तणो रे, वज्राहत[2] जिम लोक रे ।
चित मे रे २ लागी चटपटी रे धरे अतेउर शोक रे ॥
निसुणो रे निसुणो कथा उद्यमतणी रे ॥११

कुमरज रे २ कहे सुणो जोतिषी रे, नृप शिर पडसी बीजरे ।
तव सिर रे २ ऊपर स्यु पडसी कहो रे, इम पूछ्यो अति खीजरे ॥
निसुणो रे, निसुणो कथा उद्यम तणी रे ॥१२

जाणतरे २ कहे स्वामी सुणो रे, रोस धरो मति आज रे ।
आगम रे २ अनुसारे मै कही रे, बीज मुखे नृप काल रे ॥
निसुणो रे निसुणो कथा उद्यम तणी रे ॥१३

---

१ दुख प्रकट करने की मस्तक से की गई चेष्टा, २ अतिचिंतित,

दिवस जरे ? सात पूरा हुवासे, मिलसी मुझ वह मान रे ।
पडसी रे सिर भूपण वह भाल्तरा रे, जानो निश्चल वात रे ।।
निमुणो रे निमुणो कथा उद्यमतणी रे ।।१४
मिलिया रे सकल सचिव सामन्त जी रे, जेम टले जजाल रे ।।
रेखजर 'रेखराज" तिम कियो रे, यई दो दसमी ढाल रे ।।
निमुणो रे निमुणो कथा उद्यम तणी रे ।।१५

दोहा—मिली सकल मिसलत[1] करे, केम टले नप काल ।
सुख पावे जनपद सकल, जव ही वचे जनपाल ।।१
मति उठावे मन थकी, ते माटे मत्रीस ।
उपजावो उत्पातकी, वचे जेम अवनीस ।।२

ढाल १३—दलाली लालन की

एक कहे ले जाओ सागर, घालि नौका माय ।
निरवद्य[2] थान एकान्त, प्रदेशे राखो राय छिपाय ।।१
करे मिसलत मत्री, राय वचावन काल ।।का०
बुध उपजावे आज, साचो सोही तत्री[3] ।।टेर।।
वीजो कहे मेली मजूपा, राखो भूप पयाल[4] ।
तीजो कहे को गुप्त किला मे, ज्यु टल जाय काल ।।का०।।२
चौथो कहे गीरी रुपाचल की, राखो गुफाये माय ।
कहे पाचवो जीरण मत्री, नावी मारे दाय ।।का०।।३
मुधा एह उपचार सकल ही, सुनो एक दृष्टान्त ।
'विजय नगरे' 'सोमदत्त' ब्राह्मण, ज्वलन सिखानो कन्त ।।का०।।४
नदन "पद्म" लगे अति प्यारो, हिव पुर राक्षस एक ।
कहे कोपी ने सकल महारु, पुजे राय विवेक ।।का०।।५
जो चाहे जो मागो अमर्प, हम तुम किंकरदास ।
कहे निशाचर अनुदिन[5] जन द्यो, राखो जीवित आस ।।का०।।६

---

१ मलाह, २. निर्विघ्न, ३. कुशल, ४ पाताल, ५ प्रतिदिन,

नृप तहत करी ने मान्यो, मदिर एक बनाय ।
आवे जास नामनी चिट्ठी, देवे तसु पहुचाय ।।का०।।७

"पद्मनाम" नी चिट्ठी आई, रोवे तसु पित मात ।
जीवन मूल ए किम मेलिजे, एम अधिक अरडात[1] ।।का०।।८

कुलदेवी करुणा कर दाखे, माधरो सोच लिगार ।
ए बालक ने अम लेजास्या, देस्या आज उगार[2] ।।का०।।९

एम कही ने ले गई तसु, सू पियो प्रातज आय ।
होनहार वस मात पिता के, इम उपजी मन माय ।।का०।।१०

कदापि राक्षस फिर ले जावे, इम चिन्तव ले बाल ।
गिरी गुफा के माही राख्यो, रोक दिया तसु द्वार ।।का०।।११

खान पान मेल्यो सब पासे, फिर आया निज थान ।
निशा मध्य गुफा मे अजगर, प्रगट्यो एक भयान[3] ।।का०।।१२

गिलियो बाल काल तब कीयो, विप्र विप्रणी ताम ।
प्रात आय देखी ने रोये, हाय वण्यो ए काम ।।का०।।१३

कथा एह मत्री कही वारु, सुनो सकल समुदाय ।
एक उपाय बताऊ साँचो, सुनो सकल समुदाय ।।का०।।१४

कहे सकल बतावो वारु, हे तुम बुद्धि विशाल ।
"रेखराज" कहे सुनो भविका, एह तेरमी ढाल ।।का०।।१५

दोहा—पोतनपुर भूपति मरन, पडित वचन प्रमाण ।
कहे सचिव को रक को, धरो राय अभिधान ।।१

सिहासन बेसान दो, राय रहो पोसाल[4] ।
धरो ध्यान जिनराज को, टले सकल जजाल ।।२

राय कहे अति ठीक पिन, जात रक को प्राण ।
राज रक सब जीव को, लागे प्राण समान ।।३

---

१ रोना २ बचालेना, ३ डरावना, ४ पोपधशाला

तिण कारण ए नवि रुचे, भाखे तव ही प्रधान ।
जक्ष मूरत थापन करो, लीवी राजा मान ॥४

जतन कियो पंडित तणो, मुह्ह कियो वहु दान ।
घर घर तप प्रभु को भजन, यक्ष थाप्यो राजान ॥५

फिरी आन सब मुलक मे, नृप निज मंदिर आय ।
धरे ध्यान परमेष्टिनो, निश्चल चित्त लगाय ॥६

पदराग प्रभाती तथा मरेठी ॥

नाथ निरंजन तू मन रंजन, भय भंजन हो शिव स्वामी ।
तू जग जीवन कर्म निकन्दन, जग नायक अन्तर जामी ॥ना०॥१

तू जग त्राता तू सुख दाता, तू आनन्दघन है नामी ।
तू ही धनतर[1] तू ही गारुडी, तू सरणागत शिवगामी[2] ॥ना०॥२

पतित उधारण भविजन तारण, असरण शरण परमधामी ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तू ही, पुन्य उदय सेवा पामी ॥ना०॥३

पद्मासन आसन दृढ करके, तजे सकल तन मन खामी ।
सात दिवस लग ध्यान धरियो नृप, हुय के दृढ परिणामी ॥ना०॥४

ढाल १४—विनतडी अवधारो ॥ सा० ॥

सप्तम दीन के अन्ते जब ही, हुओ गगन घनघोर ।
लागो जलधर जब वरसवा, लोक करे सहु सोर ।
भाई जोवो पुण्यनी महिमा, जग मे श्री जिनधर्म सहाय ॥१

विद्युत पात पडी, जक्ष ऊपर, हुओ खडो खड ।
जय जयकार करे जन जबही, भूपति भाग्य अखण्ड ॥भा०॥२

श्री जिन भुवन थकी हिव आयो, सभा बीच महिपाल ।
गायन गावे नृप रिझावे, वरत्या मंगलमाल ॥भा०॥३

---

१ धनवतरी । ३ मोक्षप्राप्त ।

गणिक बुलाओ तत्क्षण आयो, कहे नृप धन्य तुम ज्ञान ।
धन्य धन्य मात पिता हे थारा, पढिया ही प्रमाण ।।भा०।।४

घनधारा ज्यु भूपति वरसे, कनक अखडित धार ।
माणिक हीरा मणि अमोलक, अर मुक्ताफल हार ।।भा०।।५

सभा सकल हीवे वरसन लागी, भूपन विविध प्रकार ।
अन्तेउरी पिण न्यारी २, सारे सेवा सार ।।भा०।।६

पडित नारी पडी भ्रम मे, ए कुण सुर अवतार ।
भूषण सयल रयण कर जडिया, किम जाणु भरतार ।।भा०।।७

भाग्य भूप नो, बुध मत्री नी, पण्डित ज्ञान अपार ।
तीनु ए अद्‌भुत जगत मे, सारा है ससार ।।भा०।।८

नृप अमर कराइ घोषणा, माण्ड्या शत्तुकार[1] ।
"रेखराज" कहे धर्मनी महिमा, प्रगटी विविध प्रकार ।।भा०।।९

चवदमी ढाल चतुर चित हरणी, वृद्धदत्त कहे अधिकार ।
इण उद्यमी थी सव हो कारज, सारे सव ससार ।।भा०।।१०

दोहा—लघु वधव जपे इसो, उद्यम थी सव थाय ।
नृपनो कष्ट निवारियो, मत्री करी उपाय ।।१

तिणपुर हूँ देवी तणो, टालिस वयण विशेप ।
"साधुदत्त" वलतो भणे, न मिटे लिखिया लेख ।।२

"वृद्धदत्त" ववव तणो, मान्यो नही लिगार ।
घर आवि जावा तणो, कियो मन निरधार ।।३

पट भूपण सज युक्त सु , सेवक जन वहु लार ।
'सिघल द्वीप' 'कपिल' पुरे, चालि आव्यो वार ।।४

१ दानशाला आदि ।

पूर्व भव की प्रीतडी हो, मानु एक जीव दो देह ।
द्रव्य व्यय वृद्धदत्त करे हो, सा० परम कपट रो गेह ।।
श्रोता साभलो हो सुरिजन लोभ वुरो ससार ।।८

रिज्यो चित्त विक्रम तणो रे, सा० एह मनोहर मित्त ।
पुण्य जोग थी एहनो हो सा० वणियो जोग अचित ।।
श्रोता साभलो हो सुरिजन लोभ बुरो ससार ।।६

देखी पुष्फवती तदा हो सा० मानी जे घर माय ।
गर्भवती तसु जाण ने हो कु० दुष्ट चित्त अकुलाय ।।
श्रोता साभलो हो सुरिजन लोभ बुरो ससार ।।१०

कोई दाय उपाय थी हो सा० ले जाऊ ए लार ।
पहुचाऊ परलोक मे हो कु० तो ए सफल अवतार ।।
श्रोता साभलो हो सुरिजन लोभ वुरो ससार ।।११

दिवस किता इक अन्तरे हो सा० माँगे सीख सनेह ।
आणा[1] जावा तणी हो सा० आसो याद अछेह[2] ।।
श्रोता साभलो हो सुरिजन लोभ वुरो ससार ।।१२

विक्रम सुन विलखो थयो हो सा० हृदय रह्यो भराय ।
कठिन ज्वाल विरह तणी हो सा० मौ ते सहि न जाय ।।
श्रोता साभलो हो सुरिजन लोभ वुरो ससार ।।१२

मनरजन मो ऊपरे हो सा० महर करो सुफलाय ।
लो वस्तु चित्त चावती हो सा० तो मन परसन थाय ।।
श्रोता साभलो हो सुरिजन लोभ वुरो ससार ।।१४

मित्र कहे तुम महर थी हो सा० कुमी न कोई दीसन्त ।
तदपि एक मुज दीजिये हो सा० मागू तज मन भ्रत ।।
श्रोता साभलो हो सुरिजन लोभ वुरो ससार ।।१५

१ आज्ञा, २ निरतर ।

पुष्फवती अति धर्मनी हो सा० राख कितोय काल ।
फिर पाछी पहुचावमु हो, सा० "रेख" पनरमी ढाल ॥
श्रोता साभलो हो पुरिजन लोभ बुरो ससार ॥१६

दोहा—दया दिल एहने घणी, कर चतुराई अपार ।
भोजन कारण एहने, लेइ जाऊ लार ॥१

लाज वसे ना नविकरी, न लख्यो कपट लिगार ।
दूर कितिक पहुँचाय के, कहे वचन सुविचार ॥२

वल्लभ विसरज्यो मति, कागल दीजो वधु ।
वसरया दिल वीच मे, हो तुम गुण ना सिधु ॥३

करी सीख आव्यो घरे, दासी रथ वेसार ।
मारग "अयवती" तण, चाल्यो कपट भडार ॥४

ढाल—रग महिल मे हो चौरड खेलसा है। ए देशी ॥

मधुर वचन ए दुष्ट वदे इसा, लागे तू दासी जीव समान ।
धर्मनी धोरण चतुराई घणी, अमीय समान मीठी वान ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसो करे ॥१

प्रीत गिण नही सज्जन वाणी, मात पिता ने वधव नन्द ।
मारे पति पत्नी इण धन कारणे तृष्णा सम नही जग दूजो फद ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसो करे ॥२

उपनय केई आगम मे कह्या "सुरीकता" ने "कनकरथ" राय ।
मित्र "मित्रदत्त जी" अनरथ जाण ने नोली तो नाखी द्रह के माय ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥३

इनही के कारण वड २ भूपति, कट कट मरिया कर सग्राम ।
तृपत हुआ नही इण माया थकी, दाखू कितादक तिणरा नाम ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥४

अनुदिन जाता हो इक उद्यान मे, जाणी सुख कारी लियो विश्राम ।
पहुँची एकान्ते चम्पा तरु तले, सूवी छै तन मन साता पाम ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥५

रहस्य पणे तव दुष्ट ज आवियो, पासी तो दीवी तसु ततकाल ।
गर्भवती ने अवला तणी, आणी नही करुणा इण चडाल ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥६

डोरी तो खाची भागो भय करी, चाल्यो अति आतुर लेइ साथ ।
करणी प्रतीत न नारी जातनो तिण ही मे चेडी चचल जात ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥७

नासी निज थानक मुझ पुछी नही कागल पिण दियो मित्र ने ताम ।
जत्न करता ही भाजी गई, दीजो खबर जो पुहची धाम ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥८

श्रोता हिव नीसुणो वात पाछली, जोर पड्या सु जनम्यो नद ।
अति शुभ लक्षण उत्तम वगत मे, प्रगट्यो जिम सूरत पूनमचद ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥९

वृद्धा इक आवि हो "उज्जयणी" थकी, रुदन शब्द सुन तत्काल ।
आवि अनुसारे वन मे देखीओ अल्पकाल नो जनम्यो वाल ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥१०

चम्पा तरु दीठी नारी ल्वती, देखी ने वृद्धा कियो विचार ।
दुष्टी को पासी दीधी एहने, उपजीए वेदन जनम्यो वाल ॥
सुणज्यो भवि प्राणी, दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥११

अहो कर्म गत जग अपरपार, वृद्धा तव लेई चाली वाल ।
खवर करवा आई नृप सभा, प्रणमी इम विनवे भूमीपाल ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥१२

कोई कारण हु गई थी वन विषे, चम्पा तरवर दीठो एह ।
माता मरी थी दीठी लटकती, एह लेइ ने आवि गेह ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥१३

खवर करवा आवी आप पै, स्यु तुम आणा हिव महाराय ।
राय कहे ए सुत अब ताहरो, जत्न करी ने ल्यो जो वधाय ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥१४

पालन कारणधन नृप अति दियो, वृद्धा तो मन मे हरषित थाय ।
पुत्र नही थो पुत्रवती थई, पाछी तो आई निज घर माय ॥
सुणज्यो भवि प्राणी दुष्टी धन काज अकाज इसा करे ॥१५

शुक्ल पक्ष शशि ज्यु कहे "रखराज", अनुदिन वाधे सुख सु वाल,
शत्रु विचारी सो यु ही रही, सोलमी श्रोता सुन्दर ढाल ॥१६

दोहा—चम्पा तरुवर पाइयो, जिण थी 'चम्पक" नाम ।
लागे सव ही सुहामणो, रूप महा अभिराम ॥१

इम सुख माहि वाधता, वरस सात वय पाय ।
शिशु क्रीडा के कारणे, रमे वालका माय ॥२

यो छै विन मा वाप को, हास्य वसे कहे वाल ।
खटक्यो वचन खरो हिये, पुछी मात तत्काल ॥३

अति हठ करता, तव कहा, वीति जितरी वात ।
पायो आणि पालियो, मृषा नही तिल मात ॥४

प्यारो प्राण थकी घणो, ज्यु लोभी ने वित्त ।
कहे मात विद्या पढो, कुसी रहे जिम चित्त ॥५

ढाल १७—एक दिवस लकापति ॥

तव आदेश माता तणे, विद्या विविध चपक भणे, हर्ष घणे।
विद्या चतुर्दश पढर्‌यो, जव जोवन वय आवियो
साजन जन ही सुहावीयो, फावीयो[1]
रूप क्रान्ति गुण वर वढ्‌यो ए ॥१

सूरत तो अति सोहनी, रतिपति जिम मोहनी,
जेहनी महिमा तो प्रगटी खरी ए ॥
एक दिन सज तव परिवारे हरसिद्धि देवी[2] द्वारे ॥
मत्री लारे आव्यो अति उलट[3] धरी ए ॥२

पासा सार रमे तिहा, भावी तो न टले किहा।
हिव इहा सेठ वृद्धदत्त आवियो ए ॥
देख सूरत कुमर तणी मधुर वात माडी घणी।
अति वणी, प्रीत विहूँ सुख पावियो ए ॥३

करे उज्जयणी व्यापारै, ए हने पिण राखे लारे।
न विसारे[4] कुमर ने एको घरी ए।
देखो पुण्य तणी माया, शत्रु पे आदर पाया।
तन छायाज्यू लार रखे आदर करी ए ॥४

एक दिन पूछे आदर घणे, सुत कितरा तुम माता तणे,
तव भणे, हूँ पिण पडियो पावियो ए।
चम्पा नउ माता मरी, हणी दुष्ट फासी करी।
डोकरी, त्यावी सकल वृत्तान्त सुणावीयो ए ॥५

वृद्धदत्त तव ही विचारियो, वृथा ही पातिक कियो,
जीवलियो नाहक मैं अवला तणो ए ॥
कारज को सरियो नहीं, हिव उपाय करिवो सही।
निश्चे ही, शत्रु यह मरावणो ए ॥६

---

१ नोरप्रिय, २ उस देवी का मन्दिर उज्जैन के बाहर क्षिप्रा नदी के तट पर है। ३ भावना, ४ भूलना। ५ मिद्ध।

कपट प्रीत हिव अति करे, चम्पक रीजरयो[1] तरे ।
वहु परे, जाणी सेठ मया घणी ए ।
कूड कपट अति केलवे[2], भात भात चित भेलवे[3],
मेल वे ए नहि जाणे दिल तणी ए ।।७

एक दिन वदन उदासीयो, पुछ्या भेद प्रकाशियो ।
भाखियो, भेद चम्पक कहुं तो भणी ए ।।
प्राणयकी वल्लभ पेई, तिनमे चीज रहे केई ।
धुर रई, चिन्ता लागी तसु तणी ए ।।८

जावो मुज वणे नही, अवरथकी आवे नही ।
एह सही, चिंता छै मन माहरे ए ।
चंपक कहे जी हूँ जाऊ, आप कहो जीम ही लाऊ ।
न जणाऊ किण ने तव हामी[4] भरे ए ।।९

जाणो एकलो सेठ कही, तुम विन आलगसे नही,
खिन नही काज, अवरथी नवि सरे ए ।
लिखियो पत्र उतावलो, शुद्धदत्त नामे भलो,
अति सवलो, दुष्टछल एहवू करे ए ।।१०

एह ने आवत विष दीज्यो, इणमे ढील मति कीज्यो ।
छाने लिज्यो, भेद न कोई जणावज्यो ए ।।
कागद तास दीयो वारु, टाल सतरमी अति चारु[5],
गुणधारु, तुम तो वहिलू[7] आवज्यो ए ।।११

लोभ थकी पातिक करे, पापी, प्राणी नाही डरे ।
रडवडे[8], चिहु गति मे वो प्राणियो ए ।
"रेखराज" कहे सुणो भाई, तजो लोभ ए दुखदाई ।।
समता रस मन आणीयो ए ।।१२

---

१ प्रसन्न, २ करना, ३ मन के अनुकूल रहना, ४ स्वीकृति, ५ चित्तलगना, ६. सुन्दर, ७ शीघ्र, ८ भटकना ।

दोहा—ग्रही पत्र माता नमी, चाल्यो चम्पक नाम ।
प्रातकाल पुर वाहिरे, हुआ सुकन अभिराम ॥१
पूरण जल भरियो कलस, श्वेत वृषभ सु प्रधान,
देई दाम मालण तदा, कियो ताम सनमान ॥२
वेश्या सन्मुख अम्वफल, मगलकारी मीन ।
वाम वटेर दाहिन हिरण, हरषित भयो प्रवीन ॥३
देवी डावी सुर करे, खर स्वर वामू होय ।
नीलचास दक्षिण दिसा, अति सुखदाई सोय ॥४
शुभ सुकने प्रेरीत कुमर, चाल्यो जाय जी वार ।
प्रवेसे पिण अति सुखद, आव्यो पुर वाजार ॥५

ढाल १८---जुहारमल जाट का गढ ॥

"वृद्धदत्त" घर पुछतो रे, आव्यो सेठ मकान ।
सेठ नार पीहर गई रे, छै सुता रूप निधान ॥
भविजन साभलो रे, पुन्य तणो अधिकार ॥१

रत्नवती निधी[1] निधी रूपनी रे, शचि[2] रति उणियार[3],
दीठो कुमर ज आवतो रे, हरषित चित्त अपार ॥
भविजन साभलो रे, पुन्य तणो अधिकार ॥२

विधी मन्मथ[4] वाण सु रे, पुछे पधारिया केम ।
नाम ठाम निवसो किहारे, दाखो मुज धर प्रेम ॥
भविजन साभलो रे, पुण्य तणो अधिकार ॥३

"उज्जयणी" थी आवियो, चम्पक मारो ताम ।
आयो छू इन कारणे जी, दियो कर कागद नाम ॥
भविजन साभलो रे, पुण्य तणो अधिकार ॥४

१ भण्डार, २ इन्द्राणी, ३ समान सूरत, ४ कामदेव ।

रूप निरख बाला तणो जी, कुमर विचारे मन्न ।
अद्‌भुत रूप जेहनो रे, नारी माहि रतन ॥
भविजन साभलो रे, पुण्य तणो अधिकार ॥५

कुमारी कागज लेय करी, वाचे जड एकन्त ।
अक्षर तो निज वापनारे, अति विपरीत वृत्तत ॥
भविजन साभलो रे, पुण्य तणो अधिकार ॥६

अहो कुमति स्यू केलवी रे, ऐतो मुझ भरतार ।
गाल दियो उ नीर मे रे, वीजो लिख्यो तिवार ॥
भविजन साभलो रे, पुण्य तणो अधिकार ॥७

पत्र तिसो अक्षर तिसारे, न परे फरक लिगार ।
वीडी तसु पाछो दियो रे, वाला बुद्धि भडार ॥
भविजन साभलो रे, पुण्य तणो अधिकार ॥८

तात वधु "शुधदत्त" जी रे, छै ए तहने नाम ।
तसु हाथे ए दीजिये रे, सरसी[1] चितित काम ॥
भविक जन साभलो रे पुण्य तणो अधिकार ॥९

कुमर भेद न जाणियो, वाला वसी मन माय ।
खिण अन्तर शुद्धदत्त ने रे, कागद सु प्यो जाय ॥
भविकजन साभलो रे, पुण्य तणो अधिकार ॥१०

दियो आदर सेठ जी रे, कहे विराजो अत्र ।
वोले अति उच्छाह स्‌ र, वाचे वधव पत्र ॥
भविक जन साभलो रे पुण्य तणो अधिकार ॥११

ढाल रसाल अठारमी रे, एम कहे "ऋपि राज" ।
लिख्यो स्यू ने, स्यू थयो रे, पुण्य समा रे काज ॥
भविक जन साभलो रे पुण्य तणो अधिकार ॥१२

---

१ सिद्धि ।

दोहा—धीरज धर मनही विषे, वाच्यो पत्र जी वार ।
"रत्नवती" ना व्याहने, लिखियो सयल[1] विचार ॥१

ढाल ११—नेमीसर वनडा ने राख लिज्योए ए देशी ।

"शुद्धदत्त" वधव माहरा हो लाल, हो मन्त्री मारा तू छै चतुर सुजाण
मान ए मारी लीजो हो । मान० ॥

मन मोहन भरतार व्याह ऐ वेगो कीजो ॥व्या०॥हो०॥तू०॥१

ए वर मै वट्जोय[2] ने हो ला० भेज्यो तुम पास ।
आस ए मुझ पूरज्यो हो ॥आ०॥भ०॥२

वाई छै शची सारखी हो, ला० ॥ हो० ॥ असुर पति अनुहार ।
जोय थे परतक्ष लीजो रे ॥ जो० ॥ म० ॥३

वेग बुलाव्यो जोतसी हो ला० ॥ हो० ॥ साहो शुद्ध सीधाय ।
माहरी अरति हरीजो हो ॥ मो० ॥ म० ॥४

छै यो पुरुष चिन्तामणि हो ला० । हो० । पारस कलस समान ।
जान सनमान करीज्यो हो ॥ जा० ॥ म० ॥५

ए नर आपुण ने मिल्यो हो ला० ॥ हो० ॥ पुन्य तणो सजोग ।
जोग ए भाग फलीज्यो हो ॥ जो० ॥ म० ॥६

हूँ तो आय सकू नहि हो ला० ॥ हो० ॥ उरझ्यो छु इहा काम ।
नाम कर जग जस लीजो हो । ना० ॥ म० ॥७

एक व्याह ए माहरे हो ला० ॥ हो० ॥ जिनसु लिख्यो वार २ ।
व्याह कर वेग लिखी जो हो० । व्या० ॥ म० ॥७

वाच पत्र चितवे हो ला० ॥ हो० ॥ सुधरी मति मम वध ।
सिन्धु जिम हर्ष भरीज्यो हो ॥ सि० ॥ म० ॥९

---

१ सम्पूण, २ देखकर ।

ढाल एह ऊगनीसमी हो । ला० ।। हो० ।। जो जग चाहो सुख ।
मुख तो पुण्य करी जो हो । मु० ।। हो० ।। म० ।।१०

"रेखराज" कहे पुण्य थी हो ला० ।। हो० ।। अवली थी सवली होय ।
चम्पक सेन पेख लीज्यो हो । च० । म० ।।११

दोहा—चम्पक निरख हुआ खुशी, भोजन सरस कराय ।
ततक्षण पडित तेडने, पूछ्यो चित्त लगाय ।१
जोवो लगन हिव एहनो, पडित कहे विचार ।
नव रेखा शुद्ध अति निकट, कयो गणिक निरधार ।।२
आज अर्धरात्रि तणो, लग्न महा श्री कार ।
पडित ने अति द्रव्य दे, माड्यो व्याह विचार ।।३

ढाल २०—श्रेणिक मन अचरज थयो ।।

तेल चढ्यो[1] दोनु तणो, सजे सहु सिगारो रे ।
हुआ हर्ष वधावणा, पुर अचरज अपारो रे ।।१
पुण्य सवल ससार मे, पुण्य थी जग सुख पावे रे,
पुण्य थकी सम्पति मिले, पुण्य उदय दुख जावे रे ।।पु०।।२
सुन्दर गावे सुहावणा, नाचे पात्र[2] अपारो रे ।
अर्थी जन सतोपिया, कियो व्याह तिवारो रे ।।पु०।।३
कथा सुणो हिव पाछली, "वृद्धदत्त" विचारी रे ।
हिव हु जाउ निजपुरे, चिन्ता मिट गई सारी रे ।।पु०।।४
या रया वृद्धा पुछ सी, मुझ सुत क्यू नवि आयो रे ।
एम विचारी चालियो, लेइ साथ मन भायो रे ।।पु०।।५
अनुक्रमे निज घर आवियो, देखे मगल मालो रे ।
लोक कहे धन्य सेठ जी, कियो व्याह विसालो रे ।।पु०।।६

१ विवाह प्रारम्भ, २ वेश्या ।

कोई उपाय चम्पक मरे, तव मन आनन्द थाय ।
ओर उपाय वने नहीं, द्यो विष भोजन माय ।।३
पुण्य जोग वाला लखी, पिय ने दीध जनाय ।
"चम्पक" भोजन नित करे, शुद्धदत्त घर जाय ।।४
सेठ कहे निज नार ने, धीया[1] परम कुपात्र ।
जई जणावी दुष्ट ने, लखी सही या वात ।।५

ढाल १०—किणोरो वुरो न चिन्तो रे भाई ।।

दुष्ट विचार करे इम दिल मे, जीवे जीते जमाई ।
शाल[2] जेम खटके हिवडा मे, धिग् मुज जीतव माही ।।१
किणि-सु दगा करो मत भाई, यो दगो महा दुखदाई ।
डुवे वहु भवताई, जिन भाखो आगम माहि ।।टेर
आप अम सू उपजी वाला, जिण रो सोच न आवे ।
धीया पति वध कारण पापी, क्षत्री चार वुलावे ।।कि०।।२
द्यु सोनइया[3] लाख इग्यार, मुझ जमाई मारो ।
दुष्ट होय तसु दया नही आवे, भर लियो हा कारो ।।कि०।।३
रहे प्रच्छन्न सेठ मदिर मे, "चम्पक" खवर न पाई ।
तके मजार[4] जेम नित प्रत ते, दाव लगे नही काई ।।कि०।।४
एक दिन आव्या सेठ तणे घर, प्राहुणा चितचाया ।
करज्यो भगत कुमरजी एहनि, सेठ हुकम फरमाया ।।कि०।।५
निशा समे सूज्यो इग पासे, "चम्पक" मर्म न पाया ।
सूता सकल निशक थई ने, निद्रा वस सहु थाया ।।कि०।।६
क्षत्री देख हुआ मन राजी, वारू अवसर आयो ।
कुमर पुण्य ते फिर ए उपजी, दीजे सेठ जणाओ ।।कि०।।

---

१ पुत्री, २ काटा, ३ स्वर्णमुद्रा, ४ विल्ली ।

पुछे आय सेठ ने च्यारू, ऊ सूतो आज कुमारो ।
कहे सेठ मत करो ढील तुम, जिहा देखो तिहा मारो ।।कि०।।८

ले आदेश आव्या फिर पाछा, लारे तेह कुमारो ।
काय चिन्ता के कारण वारे, दूर गयो तिण वारो ।।कि०।।६

सेज न पायो सुभट तव चाल्या, हेरत हिव पुर सारो ।
लारे सेठ देखवा आयो, दिसे न कोई लिगारो ।।कि०।।१०

मन जाण्यो इम मार ते चारू, समसाने पहुचायो ।
जाणी रात सेज या सूनी, आय सूतो तिण मायो ।।कि०।।११

कुमर न पाया सुभटज आया, सेज्या ऊपर च्यारो ।
सूनो देख जाण कुमर ने, दियो खजर प्रहारो ।।कि०।।१२

धड अरु सीस होय गया न्यारा, मर्‌यो अधोगत पाई ।
अरु ससार अनन्तो वधियो, रही मन की मन माही ।।कि०।।१३

"रेखराज" च्यारु भट छीपिया, भय राजा रो भारी ।
इक वीसमी ढाल पुन्य थी, लगी न शत्रू कारी ।।कि०।।१४

दोहा—कृपण काल कियो तदा, उदय भयो निज पाप ।
जेहवु पर ने चिन्तवे, तेहवु पामे आप ।।१

"चम्पक" काय चिन्ता करी, पाछो आता जाम ।
वीच माही नट निरत ने, देखे अति अभिराम ।।२

होत प्रकाश आव्यो घरे, जाग हुई तिण वार ।
जाण मरण "वृद्धदत्त" नो, हुवो ज हा हा कार ।।३

राज्य पुरुष भेल्या थया, नर नारी नही पार ।
अहो अकाज ए कुण कर्‌यो, गई वात नृप द्वार ।।४

सेठ त्रिया अरु तसु सुता, अधिक रहि विललाय ।
"शुद्धदत्त" इम देख ने, पर्‌यो धरन पर जाय ।।५

ढाल २२—श्रेणिक राय हू छ् रे अनाथ० ।।

सावचेत हुय मत्रवी, करे विलाप अपार ।
अण चिन्ती ते किम हुई, दुख साले[1] हृदय मझार ।।
मत्री माहरा वेग मिलो मुझ आय, विरह सह्यो नही जाय ।।१

सुता विवाह किया पछे, तजियो नेह निराट[2] ।
माहरी क्यु सुनतो नथी, धरतो अति उचाट ।।म०।।२

पुछ्या पण कहतो नथी, थारा मननी वात ।
रग विनोद राम ति कथा, पहली तजी ते भ्रात ।।म०।।३

धर्म शीख पिण मायरी, मानी नही रे लिगार ।
अव परभव मे वधवा, कुण करसी तुज सार ।।म०।।४

अन्त समय की वारता, रही सकल मन माय ।
कुण केसी मुझ वधवो,-ए दुख शाले प्राय ।।म०।।५

इम विलाप धरता थका, समझावे परिवार ।
सकल कुटम्व मिल सेठ नो, कियो शरीर सस्कार ।।म०।।६

"शुद्धदत्त" कहे सजम ग्रहूँ, ए घर कारागार ।
ए विहूँ धननो धणी, "चम्पक" गुण भडार ।।म०।।७
महिमा पुन्यनी सुनो भविक चितलाय ।

चम्पक घर नायक किया शुद्धदत्त सजम भार ।
साधै निज कारज, सदा पाले निरतिचार ।।म०।।८

नगर सेठ पद नृप दियो, चम्पक ने ए ताम ।
न्याव सकल ही न्यात नो, एह तुमारो काम ।।म०।।९

दूनी छिनू ओडनी, चम्पक घरनी आय ।
प्रवहण पचशया तणो, हुओ चम्पक नाथ ।।म०।।१०

---

१ खटके । २. सर्वथा

मदिर शत सुहावणा, सुन्दर शकट[1] हजार ,
दासी दास वाणोत्तरा, गिणता न लहे पार ।।म०।।११

महीपत ने मानोजतो, माने सहू परिवार ।
नित नवला[2] सुख भोगव, पुण्य तण अनुसार ।म०।।११

"रत्नवती" मन भावती, चाले चित ने लार ।
धर्म कर्म मे सारोखो, सारा हे ससार ।।म०।।१३

उपजीयो दाशो कुले, वधियो ए विस्तार ।
"रेखराज" दो वोसमो, ढाले पुन्य जयकार ।।म०।।१४

दोहा—सुख भोगवता सेठ ने, आयो भव अवसान[3] ।
हिव भवियन तुम साभलो, किण विध करे कल्याण ।।१

तिण अवसर तिण नगरे, उतरिया उद्यान ।
धर्मघोप सूरीसरू, मुनिवर ज्ञान निधान ।२

चार ज्ञान अति निरमला, पच सया परिवार ।
राजादिक वदन चल्या, सेठ साथ निर नार ।।३

पॉच अभिगम[4] साचवी, सनमुख बेठा आय ।
वाणी श्री सतगुरु तणी, सकल सुणे चितलाय ।।४

ढाल २३—जकडीनी ।।

सुगुरुभाखे भव मानव तणो, दश दृष्टान्ते दुल्लभ छै घणो ।
घणो दुल्लभ मनुज करो, देश अनारज पिण नही ।।
उत्तम कुल और इन्द्री निर्मल, पुण्यथी पामी सही ।
आयु दीरघ निरुजतन[5] वली, जोग श्री मुनिराज नो ।।
वाणी जिननी लही श्रद्धा, फिकर नही निजकाज नो ।।१

१ गाडी, २ नये, ३ अन्त, ४ वन्दन करने से पूर्व की विधि, ५ निरोग शरीर

किम नही चेते हिव उद्यम करो काल अलपमे रे काजसरे खरो[1]।
सरे कारज काल लघु मे, तो दुख पाव सो,
काग उडावण लखियो, तिम मन मे पिछतावसो,
पाद धोवै सुधा खोवे, करी[2] बेची खर लहे,
चिन्तामणि, निजधर्म तजकर वाल विपय विष गहे ॥२

सुख चाहो तो सजम आदरो, नही शक्ति तो श्रावक व्रत धरो।
व्रत धरे श्रावक सुखदायक, वेग शिवरमणी[3] वरो ॥
शुद्ध मन सु पालिया नर, फिर भवोदधि नाम रो।
एम निसुणी निकट भवि नर, त्याग धर्म समाचरे ॥
जोर कर वर सभा बीच मे, सेठ इम परसन करे ॥३

नीचे कुल किम मै प्रभु अवतर्यो, मुझ कारण ते वृद्धदत्त किम मर्यो
किम मर्यो ससुर कहो कृपाकर, ज्ञान वल मुनिवर भणे।
पूर्वभवनी कथा वारु, दृढ चित्त धर सहु जन सुणे।
पोतनपुर समीप वन वर, नाम समेलज सुख करु।
विविध पक्षि विविध थल चर, विविध ही तिह तरवरु ॥४

तिण वन माहिरे रे तापस तप करे, कद मूलनो आहार समाचरे।
समाचरे "भवदत्त" पहिलू "भवदेव" बीजो वली।
उभय प्रीत अपार लागी, प्रथम सरल बीजो छली।
अनुक्रमे तपधर काल कर तव, अन्यायपुर मे अवतरे।
कुटिलिनी जननी य उदरे "धनदत्त" नाम वचक करे ॥५

"पाटलपुर' मे "सिधसेन" ज भलो, क्षत्रीकुल मे मन तसु निरमलो,
मनघणी लक्ष्मी तास घर सुत अवतरे,
"भवदेव" आयु करीय,पूरो नाम महिसेन धरे,
लह्यो योवन मन्न कोमल दीनदेख दया करे।
दान देवे जस लेवे, दुखी देखी दुख हरे ॥६

---

१ पूर्ण, २ हाथी, ३ मुक्ति, ४ श्रद्धालु,

इक दिन मनसा हुई जात्रातणो, लेइ साथज चाल्यो पुर भणी ।
पुर भणी चाल्यो सकल पेखत, पथ "वचकपुर" लयो ।
ताम निमुणी अठा आगे, विपम अटवी सव कयो ।
चोर आदि विघ्न जाणी, पाँच रयण मेलन भणी
कर्म जोगे आवियो पुर हाट उण "वचक" तणी ।।७

आदर देई तव वयसावीयो, दास पास तो तेल अणावियो
अणावीओ तव कर ही तोले, टाक[1] अधिक ज जाणने ।
कहे लेय जा देय पाछो, किसी खवर अजाण ने ।
नाम महाजन करे चोरी, धिग् तसु अवतार ने ।
मृपा भापण ताम मारे, नाम जग "वचक" **भवे** ।।८

"महसेन" मन रज्यो अति घणो ए,
अति अति उत्तम सफल, जीवित पणो ।।
सफल जीवित रयन मेलन "महसेन" मनसा करी ।
तेवीसमी ए ढाल मे कहे "रिखराय" पूर्वचरी[2],
सुनो श्रोता खाय गोता लोभ थी ससार मे ।
नाम साह पिन दिन ही माही लूटिये वाजार मे ।।९

दोहा—"महसेन" कहे मेलिये, रयण एह विचार ।
फिर आवि लेस्यु सही, "वचक" कहे तिवार ।।१

रतन देख रज्यो निपट[3], करे कपट विवहार ।
इम परधन राखण तणो, छै माहरे परिहार ।।२

अति आग्रह करता ग्रह्या, कियो तुरन्त प्रयाण ।
कर यात्रा फिर आविया, लेवा तेह निधान ।।३

---

१ एक प्रकार का तोल, २ पूर्वभव, ३, खूब ।

"वचक" हाटे आविया, नहीं आदर सतकार ।
"महसेन" मन जाणियो यो तो अवर प्रकार ॥४
कहे मम लखियो के नहीं, देख्यो नहीं दीदार ।
मुझ हाटे आवे सही, तुम सम कई हजार ॥५

ढाल २८—निहालदेनी ॥

"महसेन" कहे माहरा जी काई, दीजे रत्न उदार ।
कहे "वचक" तु कुण अछेजी, दीसे गर्ग[1] गिवार ।
अहो लोभ ससार मे जी ॥१

कूडो आल न दीजे जी का० कूडा[2] पडे मुह छार ।
मिटे प्रतीत इण भव विषे जी, का० परभव नरक दातार ॥अ०॥२

"महसेन" मन जानीयो जी, का० साचो वचक नाम ।
धूर्त सिरोमन सहर मे जी का० लाज नही ए निकाम ॥अ०॥३

"महसेन" कहे तेलथी जी काई हरियो थो हम मन्न,
तिण कर निधी मेलि गयो जी का० आपे क्यू न रतन ॥अ०॥४

तो पिण तिलभर नवि देवे जी का० कहे चाल दरवार ।
हाथ पकडने खाचियो जी का० लागो जवर जजाल ॥अ०॥५

नर दरवारे जावता जी का० वीच मिल्यो नर एक ।
"महसेन" ने रहस्य थी का० पुछी वात विवेक ॥अ०॥६

कही सकल तद नर कहे जी का० वचक एहनो नाम ।
रतन लिया ही न विसरे जी, का० फिर सिर करसे दाम ॥अ०॥७

नाम "अन्यायपुर" अछेजी, का० "अविचारी" इहा राय ।
"सर्वगिल" मत्री अछे जी, का० साचो झूठो थाय ॥अ०॥८

"सब कूड" कोटवाल छे जी का० चोहटिया मुखचार ।
मति वचक मायानिधी का० निमनेही न लिगार ॥अ०॥६

---

१ नितान्त, २ झूठ ।

चौथो छे लाभागरजी, का० परम कपट नो गेह ।
सकल सिरोमन नायका[1] जी, का० कपट 'कोसी' नामेह ।अ०।१०

ए सामग्री सहर नीजी । का० तजो रयण अभिलास ।

एम सुणी मन मे डर्‌यो जी का० कहे वचक ने एम ।
हूँ जाँऊ घर माह रे जी का० तुम रहो तुम घर खेम ।।अ०।।१२
तो पिण तिण नवि मानियो जी का० लेय चल्यो दरवार ।
नृप आगल उभो कियो जी, का० धूजे सेठ अपार ।।अ०।।१३
इते एक अचरज हुओ जी, का० सुनी तजो जजाल ।
'रेखराज' कहे नृप न्यायनो जी, का० या चउवीसमी ढाल ।।अ०।।१४

दोहा—इन अवसर एक डोकरी, आवी राजा पास ।
दुख भर रुदन करी, कहे नृप साभल अरदास ।।१

पुत्र हुतो इक माहरे, पाप-प्रिय तसु नाम ।
चोरी कदे न चूकतो, करे न वीजो काम ।।२

"देवदत्त' घर मे गयो, चोरी करवा आज ।
खातर[2] खणता तेहपे, भीत पडी महाराज ।।३

मुवो पुत्र जव माहरो, हूँ अवला नरनाथ ।
न्याय करो प्रभु ऐ सही, नहीतर मरस्यू साथ ।।४

ढाल २५—हीडेनी ।।

वृद्धा वचन सुणी वसुधापति, चढी भृकुटी कहे कोपीरे ।
"देवदत्त" ने शीघ्र बुलावो, द्यो सूली आ रोपी रे ।।
नृप अविचारी रे, अविचारी नृप जिम जगवासी ।
वरते सुमति विसारी रे ।।नृ०।।१

१ वेश्या, २ भीत मे किया गया छेद ।

तत क्षण सेठ तेडने पूछे, किम वीति घर वातो रे ।
केम कियो ते सदन जोजरो[1], हुई माणस नी घातो रे ॥नृ०॥२

सेठ कहे मारो इहा साहिवा, नही तिलमात्र ज वको जी।
पूरा दाम दिया मे प्रभु जी, नाणी मन मे सकोरे ॥नृ०॥३

चेजारे[2] ए न चिणी रूडी, दीजे तिण ने दोसो रे ।
सहू भाखे नही दोप सेठ मे, उतरीयो नृप रोसो रे ॥नृ०॥४

दीधी सीख सेठ गयो घर, चेजारो बुलावियो रे ।
पड जावे माणस मर जावे, इम किम भीत वणावी रे ॥नृ०॥५

ते कहे दोस रति नही मारो, काम करता तामोरे ।
रंभा[3] सदृश सेठ कामनी, आय उभी तिण ठामो रे ॥नृ०॥६

महिला देख डिगे मन मुनिवर, तिण मुझ लागी प्रीति रे ।
वारवार निरखता भामण[4], भूडी चुणाणी[5] भीतो रे ॥नृ०॥७

नृप कहे दोप नही कछु एहनो, तेडावी[6] ले वाला रे ।
नृपचर[7] दौड ग्रही ने सुन्दर, ले आव्या तत्कालो रे ॥नृ०॥८

नृप कहे भीत चुनत चेजारो, तिहा किम उभी आवि रे ।
कहे कर जोडी जगतपति तुम, वात सुणो मुझ ठावी रे ॥नृ०॥९

नगन दिगम्वर मुनी देखी ने, लज्जा मुझ अति आई रे ।
तिण कारण मे उभी अपूठी, नृप कहे दोस न काई रे ॥नृ०॥१०

वाला छोड दिगम्वर तेड्यो, ते मुख वोले नाई रे ।
रीस धरी ने नृपपति भाखे, द्यो सूली पधराई रे ॥नृ०॥११

---

१ जीण, २ मकान वनाने वाला कारीगर, ३ एक अप्सरा का नाम, ४ स्त्री, ५ चुनी गई, ६ बुलाई ७ सिपाही ।

कोटवाल ले जाय मसाणे, पुरवासी वहु आया रे ।
देई दाम छोडावियो मुनि ने, तव कहे नृप ने आई रे ।।नृ०।।१२
सुली छोटी तसु तन दीरघ, और हुक्म फरमाओ रे ।
नृप कहे सूली मान नर होवे, तिण ने पधराओ रे ।।नृ०।।१३
सूली खाली रहण न पावे, कोटवाल विचारी रे ।
नृप साला थी वेर अछे मुझ, अवसर आयो भारी रे ।।नृ०।।१४
नृप साला ने लेय गया तव, सूली पर पधरायो रे ।
नृप पत्नी सुण रोवा लागी, एस्यू कर्म कमायो रे ।।नृ०।।१५
जाणी भेद कहावे राजा, राणी रुदन न कीजे रे ।
न्याय धर्म मे पुत्र शत्रु ने, एक ही भाव गिणी जे रे ।।नृ०।।१६
रानी छाती कुटन लागी, फूटो भाग ज मारो र ।
भव भव माँहि एहवो ईश्वर, मत दीजो भरतारो रे ।।नृ०।।१७
"महसेन" ए नयणे दीठो, न्याय तणो निरधारो रे ।
"रेखराज" पचमीसमी ढाल, ए आगे सुणो अधिकारो रे ।।नृ०।।१८

दोहा—"महसेन" मन जाणियो, पुरुष कही ते साँच ।
न्हासी[१] ने अव छूटिये, रत्न न चहीये पाँच ।।१
कोई दाय उपाय कर, भागी निकल्यो वार ।
अति उदास जावे चाल्यो, वैठी गणिका द्वार ।।२
देखी वोलावी लियो, इम किम वदन उदास ।
नाम पूछ जाणी जवर, दियो भेद प्रकाश ।।३
कहे गणिका चिता म कर, देसु रत्न दिराय ।
काम सरिया[२] सु ताहरो, दीज्यो ज्यु आवे दाय ।।४

---

१ भाग।। २ सिद्ध ।

ढाल २६—हनुमत गायले रे—ए देशी ॥

गणिका विसवासी तदारे, चरित रच्यो तिणवार ।
पेई एक रतने भरी, पहरिया सहू सृनगार ॥
वुध उतपातनी रे कहो, कुण पावे पार क ।
गणिका जात नी रे ॥१

साह तणी जिम सुन्दरी रे, पेई ग्रही तिण वार ।
जावू हाट "वचक" तणी रे, थे आज्यो मुझ लार के ।
वुध उतपातनी हो ॥२

दासी ना परिवार थी रे, आई सेठ दुकान ।
"वचक" आदर दे कहे, किम आविया गुण खान के ॥
वुध उतपातनी ॥३

भगनी छै एक माहरे रे, "रतनपुरी" छै दास ।
सूवा रोगज[1] ऊपनो, जासु तेहने पास के ॥
वुध उतपातनी ॥४

पति छ मुझ परदेश मे रे, राखू किहा निधान[2] ।
अति प्रतीति जाणी करो, आवि आप दुकान के ॥
वुध उतपातनी रे ॥५

सेठ राजी होय ने कहे रे, गिण ने आपो सार ।
गिणवा माड्या जेहवे, आवियो क्षत्रि जि वार के ।
वुध उतपातनी ॥६

पाँच रतन तिण मागिया थापण[3] द्यो मुझ आज ।
"वचक" ऊठी आपिया, सरिया वछित काज के ॥वु०॥७
तव सेवक आवि कहे रे, वहनी हुई समाध ।
वेस्या पेई ले घरे, पुहति अति अह्लाद के ॥वु०॥८

---

१ प्रसूति के होने वाला एक रोग, २ धन ३ धरोहर ।

वेस्या ने धन आपियो रे, मतक पच दीनार[1] ।
अनुक्रमे मह माथ मु, पु हच्यो निज घर धार क ।।वृ०।।८
"वचक' चित्त व्याकुल हुयो रे, तापम व्रत धरेह ।
अति अज्ञान कप्ट करी, हुआ "वृद्धदत्त" एह क ।।वृ०।।१०
"महामेन" आव्यो घरे रे, पड्यो देश मे काल ।
पड्या रक दुखिया महा, दिमता विकराल क ।।वृ०।।११
अनुकपा आणी खरी रे, दिये रक ने दान ।
कीरति जग मे विस्तरी, मन आव्यो अभिमान क ।।वृ०।।१२
अनुकम्पा दाने करे रे, नर भव श्री मडार ।
चम्पक उन अभिमान थी, दासी उर अवतार क ।।वृ०।।१३
पूर्व भव विरोधथी रे, पाम्यो इहा विरोध ।
एह कथा श्रवणे सुणो, पाम्या मत्रि प्रतिबोध[2] क ।।वृ०।।१४
ढाल छवीसमी रे, पूर्व भव विस्तार ।
"रेखराज' चम्पक तणो, हिव सजमनो अधिकार क ।।वृ०।।१५

दोहा—सदगुरु वाणी साभली, ईहापोह करत ।
जातीसमरण[3] ऊपनो, भागी मन री भ्रात ।।१
"चम्पक" चित्त विचारियो, एह ससार असार ।
थिरता को दीसे नही, तन धन ने परिवार ।।२
हिवे सद्गुरुसाँचा मिल्या, तरणी सम गुण गेह ।
तो आतम कारज करू, तिरू भवोदधि[4] एह ।।३
कर जोरी विनती करे, तुम तारक ससार ।
महर करो मुझ ऊपरे, भवसायर थी तार ।।४

---

१ स्वणमुद्रा, २ ज्ञान, ३ पूवभव की स्मृति, ४ ससारी ।

ढाल २७—मन मोहन मोहन मुनिवर सुमति सदा चितधार ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु समीपे आदर्‌यो जी, पच महाव्रत भार ।
सीख्या अति उद्यम करी जी, आगम अग इग्यार ॥
मन मोहन मुनिवर धन्य चम्पक अणगार ॥१

समिति गुप्ति पाले सदा जी, टाले जे अतिचार ।
कर्म कद निकदवा[1] जी, शुद्ध तप लियो धार ।
मन मोहन मुनिवर, धन्य "चम्पक" अणगार ॥२

कवहु वीरासन करे जी, कवहू पद्मासन ध्यान ।
गरुडासन आसन धरेजी, सजम गुण नी खान ॥म०॥३

चारित पाली भावसु जी, अमरपुरी[2] अवतार ।
केईक भव ने अन्तरे जी, जासे मुक्ति मझार ॥म०॥४

दान विषै चम्पक तणो जी, सुगुरु वचन थी एह ।
एह प्रवधज शास्त्रथी जी, रचियो आनन्द एह ॥म०॥५

खरतर गच्छ गुरुराजीयो जी, श्री भाव हर्ष सुरिन्द ।
सुविहित साधु सिरोमणि सेवे वहु जन वृद ॥म०॥६

तसु पाटे महिमा निलोजी, "श्री जिन तिलक सुरिन्द्र" ।
गच्छ चौरासी प्रगटियो जी, मानू पूनमचद ॥म०॥७

तास सीस[3] वाचक[4] वरु जी, श्री 'जिनोदय' कहे एम ।
चऊ विह सघ तदा हुवोजी, आनन्द सम्पत खेम ॥म०॥८

सवत् सोलह गुणतरे जी, कार्ती सुद रविवार ।
तेरस दिन ए सपुण्यो[5] जी, "वीरपुर" मझार ॥म०॥९

तास कथन अनुसार थी जी, भाखे इम "रेखराज" ।
चम्पक चरित्र ए मै रच्यो जी, सुणवा श्रोता काज ॥म०॥१०

---

१ निमूल करना २ देवलोक, ३ शिष्य, ४ विद्वान्, ५ रचना की ।

त्य घो रि

सत्यघोष चरित्र

[रचयिता—मुनि श्री नथमलजी म० सा०]

दोहा—गुरु गौतम वन्दू सदा, कदा न उपजे क्लेश ।
पदपंकज प्रणम्यां लहे, सार[1] बुद्धि विशेष ॥१

महाव्रत पाचूं अति कठिन, पालेवा नहीं सहेज ।
दूजो अति दुष्कर महा, पालेवो सवसेरज ॥२

सत्यवन्त नर राज के, झूठ वचन बोलन्त ।
सत्यघोष द्विजनी परे, पामे दुख अनन्त ॥३

सत्यघोष ते किम हुवो, बोल्यो कैम अलीक ।
तेह कथा हित भविजनों, सुनज्यो चितधर ठीक[2] ॥४

ढाल १—इण काल रो भरोसो भाई को नहीं ॥ ए देशी ॥

"अंगदेश" रलियामणो, नगरी "चम्पा" नीकी ए ।
महल मन्दिर कर सोभती, मृ० भामिनी सिर टीकी ए ॥१
सावधरी भवियण सुणो ॥

"अरिमदन" नृप दीपतो, "श्रीमती" पटराणी ए ।
रूप गुणे कर आगली, सार जेहनी वाणी ए ॥भा०॥२

विप्र वसै सत्यघोषजी, झूठ तो बोले नाहीं ए ।
राख कतरनी जनेउ मे, जन मे ठगाई जमाई ए ॥भा०॥३

१ श्रेष्ठ, २ नगर ।

सिर-भूषण[1] धर चरण मे, बोल्यो दीन वचन्न ।।से०।।
मया करी मो उपरे, राखो एह रतन्न ।।से०।।५

थाका हाथ मू जायने, धर जाओ डब्बा माय ।।से०।।
पाछा थाका हाथ सू, लेई जाज्यो आय ।।से०।।६

दोहा—रत्न धर्‌या तेहने कने, मन मे हर्ष अपार ।
जहाज माज तव वेसने, चाल्यो उदधि मजार ।।१

ढाल ३—वीछीयानी ए देशी।।

हारे लाला प्रवहण[2] माहे वैसने, चाल्यो समुद्र मझार रे लाला ।।
जिण नगरी री वाछा हती, तिण नगरी पहू तो जाय रे लाला ।।१
पुण्य प्रवल श्रीपति तणो ।।ए आकडी ।।

हा० । जो व्यापारज ए करे, सो सवलो[3] पडे पुन्य जोग रे ।।
वित्त उपारज्यो अति घणो, मिटियो सगलो सोग रे ।।पु०।।२

हा० । जस घणो एहनो नगर मे, पूरी लोका मे पैठ रे ।
विणज करता अति वध्यो, हुवो कोडीधज सेठ रे ।।पु०।।३

हा० । सेठ चितै निज घर भणी, जाणो अव ततकाल रे ।।
वारु जिहाज वणाय ने, माय भरियो अमामो[4] माल रे ।।पु०।।४

हा० । समुद्र मे चाल्या सेठ जी, मन माही नीकी[5] विचार रे ।
पिण मन चितवीयो ना हुवे, हुवे कर्म अनुसार रे ।।पु०।।५

हा० । वाज्यो अकाले वायरो, घटा चढी घनघोर रे ।
गगन गाजे मेहलो, मचियो जिहाज मे सोर रे ।।पु०।।६

हा० । भेर भोपा देवी देवता, ध्याय रया जन मोय रे ।
सहाय कहो अव कुण करे, पुण्य पूरा गया होय रे ।।पु०।।७

१ पगडी, २ जहाज, ३ सीधा, ४ अमूल्य, ५ अच्छो ।

भावी पदारथ ना मिटे ।। ए आंकड़ी ।।

जिहाज डूवी माल डुवियो, सेठ पाटियो झालत रे ।
आयो वाहिर उदधि ने, तीन दिवस ने अतरे ।।भा०।।८

तट वैठो चिता करे, वाकी कर्म नी चाल रे ।
पुण्य प्रभावे हू वच्यो, वाकी डूवो सघलो माल रे ।।भा०।।९

हिम्मत मत हारे हिया, सेठ चिते मन माय रे ।
हिम्मत हार्या इण दन विसे, नही को दिसे सहाय रे ।।भा०।।१०

तो हिव जाऊ चपापुरी, लेऊ जाय रतन्न रे ।
एक रतन विक्रय किया, थासी घणो घर धन्न रे ।।भा०।।११

सेठ जी चाली आविया, देख दूरा सू विप्र रे ।
पाप आपणो गोपवा[१], लोका ने कहे क्षिप्र[२] रे ।।भा०।।१२

आज रात तणे समै, मैं सुपनो दीठो एक रे ।
पाच रतन मोपै मागिया इक झूठो कागा के भेख रे ।।भा०।।१३

एतले सेठजी आविया, वेठो विप्र जताय रे ।
ओलखियो पिण जाण ने, विप्रज वोल्यो नाय रे ।।भा०।।१४

दोहा—सेठ कहे श्रीपति अछु आपो पाच रतन्न ।
डूवी जहाज समुद्र मे, डूवो सघलो धन्न ।।१

तुम प्रसाद थी ए वच्या, नहि तर जाता एह ।
यो उपकार भूलू नही, जव लग थिर रहे देह ।।२

सत्यघोष कहे नागडा, हमको देत कलक ।
पहिरण फाटा छीतरा, रतन कहाँ ते रक ।।३

लोक कहे धन डुवियो सघलो सागर माय ।
तेहनी दाह गेहलो थयो, मागे जन पे आय ।।४

---

१ छिपाना । २ जल्दी,

ढाल ४—नीहालदेनी ।।ए देशी ।।

श्रीपति मन मे चितवेजी काई , करणो कवण प्रकार ।
दाह दीवी मुझ धन तणी जी काई, विप्र नही चडार ।।१
भविजन तजवो मुश्किल लोभ है जी ।।टेर।।
आथज डूबी उदधि मे जी, काई, ते दुख हुतो अपार ।
रतन पाच इण दाबिया जी, का० दाधा उपर खार ।।भ०।।२

जाय पुकारु राय ने जी, का०, देशी रतन दिराय ।
यू तो ओ आपे नही जी, का०, जोर जमावणो जाय ।।भ०।।३
नृप दरबारे आवियो जी, का०, बोले इण पर वाच ।
सत्यघोष द्विज दुष्ट एजी, का० दाब्या रत्नज पाच ।।भ०।।४

नृप दाखे सत्यघोष ने जी, का० परधन धूल समान ।
मन करने वाञ्छे नही जी, का० निरलोभी गुणवान ।।भ०।।५
श्रीपति चित चिता करे जी, का० नृप नही सुणी पुकार ।
आशा निराशा थई जी, का० ए दिल दुख अपार ।।भ०।।६

दयावत नर इक मिल्यो जी, का० देखी वदन उदास ।
पूछे दिलासा दे करी जी, का० तुझ दुख मोने प्रकास ।।भ०।।७
मुझ दुख नृपसो ना मिट्योजी, का० तोने कया शु थाय ।
कहिणो दुख जिण नर भणीजी, का० सुणता देय मिटाय ।।भ०।।८

दयावत नर तद कहे जी का० राणी पै कीजे पुकार ।
रत्न दिरासी ताहरा जी का० राणी महर[1] भण्डार ।।भ०।।९
राणी महिला तणे तलेजी का० तरु एक सुविशाल ।
तिण पर चढ अर्जी करोजी का० प्रात साझ, मध्यकाल ।।भ०।।१०

दोहा—पाँच रत्न मुझ दाबिया, सत्यघोष चडार ।
कोई दिरावो कर मया, ए मोटो उपकार ।।१

---

१ कृपा ।

पुन ढाल—नित प्रति आई तर परेजी, का० करे एम पुकार ॥
एक दिन राणी महिलनमे जी का० सुणी पुकार तिवार ॥भ०॥११
राणी राजा सू कहे जी, का० सामी ! करो ए न्याय ।
ए नर दुखियो छे खरोजी, का० दीजे रत्न दिराय ॥भ०॥१२
राय कहे गहिलो अछैजी, का० झुठो ले तसु नाम ।
सत्यवादी सत्यघोप छे जी, का० वीजो नही इण ग्राम ॥भ०॥१३
नित्य आय हेला करेजी, का० करे दीन पुकार ।
राणी चिते गेहलो नही जी, का० नित्य वोले इकसार ॥भ०॥१४

दोहा—दासी ने कहे जा कहो, मत कर सोच लिगार ।
रत्न दिरासी ताहरा, राणी सुणी पुकार ॥१
राणी फिर नृप ने कहे, निसुणो तुम राजान ॥
न्याय करो एहनो खरो, गेहलो नही मतिवान ॥२
राजा राणी सू कहे, एह करो तुम न्याय ।
रत्न दिरावो एहनो, आज्ञा दी फरमाय ॥३
राणी कहे सत्यघोप सग, रमसू पासा सार ।
रत्न दिरावू एहना, नहि सदेह लिगार ॥४
वुधवन्त चेडी[1] तेडके, गुज्झ[2] स्थानक लैय ।
सकल समस्या स्वामिनी, समजावी स सनेह ॥५

ढाल ५—सासू कहे रीसाई जी ॥ए देशी॥

राणी दासी ने खिनाई जी, कहे जा विप्र पासे ।
लाजे इहा वोलाई जी, उचे आवासे ॥१
दासी तव ते आई जी, सत्यघोप घरे ।
दीवी सकल सुणाई जी, राणी जी याद करे ॥२

---

१ दासी, २ एकान्त ।

सत्यघोष हूओ राजीजी, राणी बोलायो ।
एह वात अति ताजीजी, तत्क्षण चलि आयो ॥३

उंचे महल मे आवे जी, हीयो हर्ष भरियो ।
आसन पर बेसावे जी, आदर मान दियो ॥४

राणी कहे तुम खेलू जी, पासा सार सही ।
हर्ष धरी ते खेलूजी, ए मुझ हूस[1] थई ॥५

सत्यघोष कहे ठीक जी, रमीए वेग सही ।
म्हारे मन पिण पीकजी, ढील कुछ भी नही ॥६

पिण एकज शका आवेजी, मो मन असमाने ।
जीव दोन्यु रा जावे जी, राजा जो जाने ॥७

तव चलती कहे राणीजी, नृप ने पूछ लियो ।
बोली मधुरी वाणी जी, राजी राखो हियो ॥८

पहली वाजी रे माहीजी, मुद्रिका जीप लई ।
नार भणी ए दिखाई जी, रत्न लावो ए सही ॥९

दासी तव ते आवेजी, सत्यघोष घरे ॥
विप्रजी रत्न मगावेजी, मुद्रिका आगे धरे ॥१०

वे ही आय ले जासीजी, मुझ ने खवर नही ।
फिर आई तव दासीजी, राणी सु जाय कही ॥११

बीजीवार के माहीजी, कतरणी वाजी ।
जीती ने फर खिनाईजी, दासी आई भाजी ॥१२

कतरणी तव ही दिखाईजी, कण्ठ माहो अछै ।
आणी आवे नाइजी, पिछतासी पछे ॥१३

एक वार फिर जावोजी, जितरे हूँ हेरू ।
तीजी [illegible] लावोजी, पाछी नही फेरू ॥१४

---

१ इच्छा ।

तीजीवार के माहीजी, जनेऊ लाई ।
दौडती आई जी, नार ने देखाई ॥१५

रत्न काढ तिय सू प्याजी, दासी कर माही ।
आय राणी ने आप्याजी, कारज सिद्ध थाई ॥१६

दोहा— कर जोडी राणी कहे, निसुणो तुम राजन ।
सत्यघोप के पास थी, आण्या एह रतन ॥

नृप राणी ने इम कहे, तुम हो बुद्धि भण्डार ।
न्याय अहो ! नीको कियो, विरली तुम सम नार ॥

सोरठा—फिर बोल्यो महिपाल, वचन तुमारो राखिवा,
घरथी रत्न निकाल, साचो कीधो सेठ ने ।

राणी कहे महाराय, रत्न थाल मे रत्न ए,
पहली सेठ बुलाय, ओलखाइये अरुवर ॥

दोहा— श्रीपति सेठ बुलाय के, इम भाखे राजान ।
रत्न थाल थी रत्न सार-ले-थारा तू पिछान ॥१

रत्न पाच तब टालिके, लेई करी प्रणाम ।
श्रीपत सेठ चाल्यो सही, आपुनडै तव ग्राम ॥२

ढाल ६—यतनी ॥ ए देशी ॥

नृप दाखै दातज पीसी, अव लावो विप्र ने घीसी ।
इण दुष्ट नयरी के माही, इण एहवी ठगाई जमाई ॥१
जन जम सा[1] होयने धाया, सत्यघोप सदन[2] पे आया ।
कहे कहा गयो सत्यभाषी, अव प्राण न रहसी वाकी ॥२
सूनी वात धूजवा लाग्यो, मन मे भय रतना रो जाग्यो ।
नारी ने पूछे आई, तव दासी नी वात सुणाई ॥३

१ यमदूत जैसे, २ घर ।

सेठी कीनी विप्रनी काया, चोटी पकडी नृप पै लाया ।
नृप देख अगन ज्यो जलियो, अरु क्रोध माहि कल कलियो ।।४
नृप दाखे सत्यव्रती वनने, ते ठगीया है घणा जनने ।
लोका ना धन ठग ने खाया, पिण आज भेद राणी पाया ।।५
है तो एनो प्राण गमाऊ, पिग विप्र जाण गम खाऊ ।
नृप दड तीन फरमावे, लीजे दिल दाय जो आवे ।।६
कं तो घरनो धन सब दीजे, कै मल्ल मुष्टि तीन खाइजे ।
क महिषी[1] नो पुरीष लेइने, खाइजे थाल भर तीने ।।७
धन गया मूवा समाने, मल मुष्ठी थी जाये प्राने ।
गोवर खाऊ तीन भर थाल रे, तिण थी होसी छुटकार रे ।।८

दोहा— विप्र वदै स्वामी सुणो, मगावो भर थाल ।
गोवर खासू जन सहू, हसन लाग्यो महिपाल ।।१
भेस तणो गोवर तदा, मगायो भर थाल ।
नृप कहे वेग आरोगिये, ताजो है तत्काल ।।२

ढाल ७ - देवकीनन्दन जगत सोरो० ।।ए देशी ।

एक थाल तो दोरो सोरो, विप्र वापडे खायो ।
अव तो गल हे उतरे नही, खातो खातो अघायो ।।१
झूठ न वोलो ए झूठ महा दुखदाई, समझ लीजे मन भाई
पहिला तोलो ।। आकडी ।।
हाथ जोडी कहे सुणो स्वामी, अव खाणी नही आवे ।
नृप कहे जेहवो सत्यव्रत पाल्यो, तेहवो ही फल पावे ।।झूठ।।२
नृप कहे दोय पाती धन दीजे, कै दोय मुष्टी खाइजै ।
दोनू माये दाय आवे सो, एक दण्ड अव लीज ।।झूठ०।।३

---

१ भैंस ।

विप्र चिते धन तो नही देणो, मुष्टी प्रहारज खाणो ।
कर उपचार सोजो होय जासू , लोभ मे अधिक लोभाणो ।।झूठ०।४
एय हुक्म थी मल्ल तव धाया, थरहर धरण धूजाता ।
होठ डमता दमन घसता, रोस करी ने राता ।।झठ०।।५
पहली मुष्टि लागत पडियो नीचे, वीजी मे प्राणज नाठा ।
काल करीने अधोगति पहुच्यो, उदय हुवा फल माठा ।।झूठ०।।६
धन आडो कुछ भी नही आयो, इण भव मे ही दु ख पायो ।
पर-भव माही जम सदन[1] मे, लेखो लेत सवायो ।।झूठ०।।७
एहवी जाणी अहो भव्य प्राणी, झूठ वचन तज दिज्यो ।
पर धन मन कर मत राखीजो, साच वचन भाखीजो ।।झूठ०।।८
पूज्य श्री कनीराम जी मोटा, ज्ञान मे गौतम जेहा ।
तस शिष्य ज्ञान सदन रेखराजजी, तेहना गुण कहु केहा ।।झूठ०।।९
तस पद पकज को मधुकर, नथमल कथा प्रकासी ।
विद्वज्जन होय सो वाची ने, मत कीजो म्हारी हासी ।।झूठ०।।१०
सवत उगनीसे वर्पज वीजे, मास फागुण वद साते ।
शहर "सुभटपुर[2]" मे ए भाखी, ढाल सात विख्याते ।।झूठ०।।११

।।इति श्री सत्यघोष चरित्र सम्पूर्ण ।।

---

१ नरक, २ जोधपुर ।

३

जयसेना चरि

जागरूक जयसेना

और

प्रसुप्त गुणसुन्दर

प्रस्तुत चरित्र मे "अप्रमत्त भाव" अर्थात्-सर्वदा जागरूक रहने की साधना के सुफल की चर्चा है ।

"सव्वतो पमत्तस्स भय सव्वत्तो अप्पमत्तस्स णत्थि भय'

"या निशा सर्वभूताना, तस्या जागर्ति सयमी"

इन शाश्वत स्वरो का उद्घोप जयसेना की जीवन साधना मे प्रतिध्वनित हो रहा है ।

पाठक इसे पढकर विषय विपवृक्ष के ईर्ष्यादि फल और सयम सुरतरु के क्षमादि मधुर फलो का परिचय पाकर आदर्श जीवन कला के कुशल कलाकार वन सकेंगे ।

रचयिता स्व० मुनि नथमलजी म० जैनाचार्य श्री स्वामीदासजी म० सा० की परम्परा के प्रख्यात पट्टधर आचार्य श्री रेखराजजी म० सा० के सुशिष्य रहे हे । आपकी प्रशस्त लेखनो मे अन्तर्मानस तक अपने विचार भाव पहुचाने की अनुपम क्षमता है ।

जयसेना चरित्र

[रचयिता—स्व० मुनि श्री नथमल जी महाराज]

दोहा—सहस्र चतुर्दश साधु मे, गोतम गुणे गरीष्ट ।
नामे नव-निधि सपजे, नावे निकट अरीष्ट ।।१
'गौतम कुलकज' ग्रथमे, सकल सुखा को मूल ।
अप्रमत्त हित कृत कह्यो, आतम ने अनुकूल ।।२
दूर तजे परमाद ने, "जयसेना" ज्यू जाण ।
अह निश धर्म समाचरे, दोनू भव कल्याण ।।३
परने विखो[1] चितवे, पडे आप मे आन ।
"गुणसुन्दर" तियनी परे, मुधा गमाया प्रान ।।४
तेह कथा भवि साभलो, आणी मन आह्लाद ।
अप्रमाद ऊपर कथन, मति करिज्यो परमाद ।।५

ढाल १—नणदलरा गीतनी ।। ए देशी ।।

मालव देश मनोहरु, नगरी "अवती" नाम ।।सुरीजन।।
"ममरसूर" अवनीपती, अरिगजन अभिराम ।।सु०।।१
मति सेवो परमाद ने ।।ए आकडी ।।
"वृपभसेन" तिहा सेठ छै, सम्यक् दृष्टी शुद्ध ।।सु०।।
प्रभुतायुत रत धर्म मे, मति जेहनी है शुद्ध ।।सु०।।२
सेठाणी वाणी मृदु, रूपे रभा ममान ।।सु०।।
दृढ छै श्रावक धर्म मे, "जयसेना" अभिधान[2] ।।सु०।।३

---

१ वुरा, २ नाम ।

भूपित सव गुण भामिनी, मूपित[1] नि सतान ॥सु०॥
पिण कुल ततु वध्या विना, किम रहसी घर वान[2] ॥सु०॥४

इण पर दुख पिउ सू कहे, परणो वीजी नार ॥सु०॥
सुत विन धन किम काम को, सव सुख सुत के लार ॥सु०॥५

सेठ कहे सुण सुन्दरी, पुत्र लिखित अनुसार ॥सु०॥
फेर परण फद घालणो, पूरण तुजसू प्यार ॥सु०॥६

तो पिण हट कर भामिनी, ग्रह देखावी ताम ॥सु०॥
कन्या साहूकारनी, परणावी अभिराम ॥सु०॥७

सोक नाम सुण सोक ने, ऊठे मन मे ज्वाल ॥सु०॥
"जयसेना" धन्य जगत मे, समता लीनी झाल[3] ॥सु०॥८

दोहा—काल कित्ता इक अतरे, "गुणसुन्दर" अभिराम ।
सपत्नी[4] सुत प्रसवियो, कीधो अधिक हगाम[5] ॥१
जयसेना निज सोक ने, सकल सदन[6] को भार ।
दे निज आतम वास करी, अहनिशि धर्म विचार ॥२

ढाल २—श्रावक धम करो ॥ए देशी॥

जयसेना निज आतमनारे, धरमनी चरचा चितारे जी ।
आरभ परिग्रह सू ममत्व निवारे, नित प्रत नेमा ने धारे जी ॥१
श्रावक-धर्म सदा सुखदाई ॥ए आकडी ॥
देव गुरु सू पूरण प्यार, दिल सू नही उतरेजी ।
दुखित देख करे उपगारे, जिणरो दिल छै उदारे जी ॥श्रा०॥२
साधु अर्जका सदन जो आवे, चीज सूझती पावे जी ।
कदाच ठाली जावे तो, उपवासज ठावेजी ॥श्रा०॥३

१ दुखी, २ शोभा, ३ धार, ४ शोक, ५ उत्सव, ६ धार ।

दस पछखाण करे सुद्ध भावे, खुले-मुख कबहु न खावेजी ।
सामाइक करे प्रभु गुण गावे, इण विधि काल गमावे जी ।।श्रा०।।४

तिय की जात तरुण वय माही, भारी समता लाई जी ।।
सावद्य काम जाणे दुखदाई, टलती टाले बाई जी ।।श्रा०।।५

पहली सेठ ने हुति प्यारी, अब अति दृढता धारीजी ।
खीर रढी[1] माहि मिसरी डारी, अब कहो किण ने खारी जी ।श्रा०।६

सेठ सला सब इणने बूझे, देवी तणी परे पूजे जी ।
"गुणसुन्दर" देखी ने अमू जे[2], पति करे इण सूं गूजेजी[3] ।।श्रा०।।७

दुष्ट सभाव कदे नहि जावे, नीति शास्त्र मे गावे जी ।
सूवो मीठो शब्द सुनावे, मिन्नी मारवो च्हावे जी ।।श्रा०।।८

दोहा - एक दिवस गुणसुन्दरी, गई पीहरने गेह ।
सुखणी के दुखणी अछे, मा पूछे धर नेह ।।१

ढाल ३—सासु कहे रीसाई जी ।।ए देशी।।

गुणसुन्दरी कहे वाई जी, कहिये केहवी ।
दुखणी और लुगाई जी, नही मो जेहवी ।।१

सोक तणो दुख भारी जी, निश दिन तन दाजे[4] ।
सकल दुख गये हारी जी, इण दुख के आगे ।।२

माजी-मोड[5] ए शिर को जी, सोकड[6] रग-भीनो ।
बाजीगर जिम कपि[7] कोजी, पति ने तिम कीनो ।।३

सोक के आगे मोय जी, सुख तुछ-मात्र नही ।
अवरन जाणे कोय जी, जाणे एक दई[8] ।।४

"वधु श्री" गुण म्टी, पुत्री सोक परे ।
देखो हीया-फूटी जी, तोरू ही तान[9] करे ।।३

---

१ गादी, २ दुखपावे, ३ एकान्त मे बात कर, ४ जल, ५ पति, ६ शोक, ७ बदर, ८ सत्रश, ९ बैर ।

भूपित सव गुण भामिनी, सूपित[1] नि सतान ।।सु०।।
पिण कुल ततु वध्या विना, किम रहसी घर वान[2] ।।सु०।।४

इण पर दुख पिउ सू कहे, परणो बीजी नार ।।सु०।।
सुत विन धन किम काम को, सव सुख सुत के लार ।।सु०।।५

सेठ कहे सुण सुन्दरी, पुत्र लिखित अनुसार ।।सु०।।
फेर परण फद घालणो, पूरण तुजसू प्यार ।।सु०।।६

तो पिण हट कर भामिनी, ग्रह देखावी ताम ।।सु०।।
कन्या साहूकारनी, परणावी अभिराम ।।सु०।।७

सोक नाम सुण सोक ने, ऊठे मन मे ज्वाल ।।सु०।।
"जयसेना" धन्य जगत मे, समता लीनी झाल[3] ।।सु०।।८

दोहा—काल कित्ता इक अतरे, "गुणसुन्दर" अभिराम ।
सपत्नी[4] सुत प्रसवियो, कीधो अधिक हगाम[5] ।।१
जयसेना निज सोक ने, सकल सदन[6] को भार ।
दे निज आतम वास करी, अहनिशि धर्म विचार ।।२

ढाल २—श्रावक धम करो ।।ए देशी।।

जयसेना निज आतमनारे, धरमनी चरचा चितारे जी ।
आरभ परिग्रह सू ममत्व निवारे, नित प्रत नेमा ने धारे जी ।।१
श्रावक-धर्म सदा सुखदाई ।।ए आकडी ।।
देव गुरु सू पूरण प्यार, दिल सू नही उतरेजी ।
दुखित देख करे उपगारे, जिणरो दिल छै उदारे जी ।।श्रा०।।२
साधु अर्जका सदन जो आवे, चीज सूझती पावे जी ।
कदाच ठाली जावे तो, उपवासज ठावेजी ।।श्रा०।।३

१ दुखी, २ शोभा, ३ धार, ४ शोक, ५ उत्सव, ६ धार ।

ते जे नदन जायो जी, जिण सू रग-रलिया ।
सव तुझ पुन्य-पसायोजी, मन वछित फलिया ।।६

सोकने मारी जी, तुझ सुखणी करस्यू ।
जन्म तलक की थारी जी, आरत[1] सहु हरसू ।।७

एम दिलासा देई जी, मूकी पीव घरे ।
तसु मारण ने केई जी, मन उपाय करे ।।८

दोहा—जत्र मत्र ओषध जडी, पूछे पुरुष अनेक ।
प्रछन्न[2] पणे सा पापणी, इते कपालिक[3] एक ।।१

वाज्या भूषण घूघरा, अरु डमरु क त्रिसूल ।
विद्याभत[4] भिक्षा अरथ, आया गृह अनुकूल ।।२

देखी अति आदर दियो, करवा शीघ्र स्वकाम ।
सरसासन दानादि-कर, रज्यो जोगी ताम ।।३

जयसेना मारण भणो, वोले वचन रसाल ।
मो दुखणी को दुखहरण, आप मिले किरपाल ।।४

ढाल ४—आसणरा रे जोगी ।।ए देशी।।

जोगी कहे स्यू दुख तोकू, प्रकट वताओ मोकू रे ।।जोगी करामाती।।
मारण मोहन उच्चाटन[5] जानू, आकर्पण[6] नहि छानू रे ।।जोगी०।।१

तव सा मन की वात सुनाई, जोगी के मन भाई रे ।।जो०।।
चवदस-काली मसाने आयो, मृतक एक तव लायो रे ।।जो०।।१

तेहने अरचि खड्ग कर दीधो, काम शुरू तव कीधोरे ।।जो०।।
दे आहूती मत्र आराधे, वैताली विद्या साधे रे ।।जो०।।३

१ दुख, २ छाने, ३ जोगी, ४ विद्या जानने वाला, ५ पागल करना,
६ वश करना ।

मत्र शक्ति सा देवी आवे, सव तन घस यो सुणावेरे ।।जो०।।
रे जोगी करु काम तिहारो-के-"जयसेना" ने मारो रे ।।जो०।।४

मा तव चली गगन मार्ग आवे, जयसेना पौपध मे पावे रे ।।जो०।।
पच परमेष्ठी समरन करती, धरम ध्यान अनुसरती रे ।।जो०।।५

दाव न लाग्यो पाछी गसगी, मृतक शरीरे धसगी रे ।।जो०।।
वीजी तीजी वार पठाई, जोर न लाग्यो काई रे ।।जो०।।६

पाछी आई गेप भराणी, जोगी डर्यो कहे वाणी रे ।।जो०।।
दोनू मे मू दुष्ट ने मारो, पाछी चली तिण वारी रे ।।जो०।।७

जयसेना पे न लगी कारी, गुणसुन्दरी ने मारी रे ।।जो०।।
भोगासक्त प्रमाद के माई, जैसी करी तैसी पाई रे ।।जो०।।८

जोगी कथित कगी ने कामो, देवी गई निज ठामो रे ।।जो०।।
जोगी आपणे स्थानक पूगो, एतलै दिनमणि[1] ऊगो रे ।।जो०।।९

दोहा—मेठ देख व्याकुल हुवो, हा हा हे जगदीश ।
क्रिण काप्यो ए रात मा, गुणसुन्दर नो शीस ।।१

प्रात पोपध पाडियो, जयसेना तिण वार ।
मुई शोक अवलोक ने, मन मे करे विचार ।।२

ढाल ५—झमाकडा नी देशी

पूरव भव मे वाधियारे, हँस-हँस कर्म निसक ।।जि०।।
शोकनो ढॉकण मुझ शिरे रे, लागतो दीसे कलक ।।जि०।।१
अव शरगो छे आपरोरे, अवर न को आधार ।।आकडी

१ सूय ।

सोच नही मुझ मरण को रे, निंदा धरम का होय ।।जि०।।
धरमी ए अनरथ करे रे, कहसी ससारी लोय ।।जि०।।३

विघन निराकरवा भणी रे, ध्यान धर्‌यो सा वाल ।।
शासन सुरियने समरता रे, प्रकट भई तत्काल ।।जि०। ४

वाई म्हारी धीरजता दिल मे धरो रे, मत कर मन मे सताप ।।हाँ।।
कलक उतरसी ताहरो रे, देव गुरु परताप ।।जि०।।५

"वधुश्री" ना काम ने रे, देवी गई रे सुणाय ।
साँच ने आँच रती नही रे, सा अव राजी थाय रे ।।जि०।।६

निशि निचरो निरखण भणी रे, वधु श्री परभात ।
सुता सदन आवी चली, हरख न मावे गात ।।जि०।।७

छिन्न शीस गुणसुन्दरी रे, देखी ने अरडाय ।
करी पुकार नृप आगले रे, एसो होत अन्याय ।।जि०।।८

भूमिनाथ मुझ सुता गुणसुन्दरी रे, जयसेना नाँखी मार ।
सुण राजा कोप्यो घणो रे, तेडी ततखिण नार ।।जि०।।९

दोहा—भ्रू चढाय भूधव[1] कहे, "जयसेना" सू जाम ।
साँच कहे मुझ आगले, कीधो केम अकाम ।।१

ढाल ६—

जयसेना मन माहि विचारे, झूठ किसी विधि दाखू ।
साच कया या मारी जावे, तो हिव मोन ज राखू ।।१

सुणो सुज्ञानो जयसेनानी, कथा अधिक सुखदानी ।
अप्रमत्त भाव अमरी[2] सहाय करी छै आनी ।।टेर।।

---

१ राजा, २ देवी ।

कलश

पुज्य श्री कनीरामजी पट, पूज्य श्री रेखराज जी ।
कलपतरु-सम आस पूरण, विदुप[1] जन सिरताजजी ।।
तास पद-कज भ्रमर "नथमल", गुरु आज्ञा पाय ए ।
ढाल षट् हरिदुर्ग पुर मे, करी सुगुरु पसाय ए ।।१

१ विद्वान ।

पूज श्री रे राज जी ०

। जी न चरित्र

पूज्यश्री रेखराजजी म० सा० के जीवन की संक्षिप्त रूपरेखा

मूल निवासस्थान	बूडसु (मारवाड)
वंश	ओसवाल
गौत्र	कुचेरिया—कोठारी
जन्मभूमि	करकेडी (ननिहाल) राज्य—किशनगढ
पिता का नाम	श्री रिद्धकरण जी
माता का नाम	श्रीमती सरसा बाई
जन्म सम्वत	वि० म० १८८५, मिगसर शुक्ला दसमी
स्थानान्तरण	रूपनगढ (राज्य—किशनगढ)
दीक्षा क्षेत्र	रीया और जाट्यावास के बीच मे—वटवृक्ष
दीक्षा संवत्	वि०म० १८९३, पोष शुक्ला अष्टमी, शनिवार
दीक्षा वय	८ वर्ष
आचार्य पद	वि०म० १९२६, मिगसर कृष्णा पचमी, बुधवार
आचार्य पद क्षेत्र	किशनगढ
स्वर्गवास	वि०म० १९४४, प्रथम चैत्र शुक्ला-प्रथम ६, रविवार
स्वर्गवास क्षेत्र	व्यावर (ग्राम)
सर्वायु	वर्ष-५९, मास-३, दिन-२१
संयमी जीवन	वर्ष-५१, मास-२, दिन-२८

: चातुर्मास सूची

- प्रस्तुत गुरु गुण रत्नमाला मे निम्नांकित चातुर्मासो के ही सवत् लिखे हुए मिले है, और शेष चातुर्मासो की केवल सूची ही है।
- दीक्षा के पश्चात् प्रारम्भ के दस चातुर्मास पूज्य श्री कनीराम जी महाराज साहब के साथ हुए, और शेष चातुर्मास आचार्य श्री के शिष्य समुदाय के साथ हुए। इग्यारवा चातुर्मास बीकानेर मे वि० स० १९०४ मे हुआ।

  अजमेर—१९१३
  रतलाम—१९१४
  अजमेर—१९१५
  किशनगढ—१९१८
  किशनगढ—१९२२
  जयपुर—१९४१
  नयाशहर (ब्यावर)—१९४२
  ब्यावर—१९४३
  ब्यावर—१९४४

- सर्वप्रथम चातुर्मास कुचामन मे हुआ एव अन्तिम चातुर्मास नया शहर मे हुआ। कुल चातुर्मास ५१ हुए, जिनकी सूची निम्न-प्रकार है।

पीसागण —१	रूपनगढ—१	शाहपुरा—२
अजमेर —२	पाली—२	जयपुर—२
कुचामण —३	रतलाम—३	जोधपुर—४
बीकानेर —५	मेडता—५	किशनगढ—९
नयाशहर—१२ आदि		

कुल ५१ हुए।

गुरु गुण रत्नमाला

पूज्य श्री रेखराज जी महाराज गुणवर्णन

रचयिता—सुशिष्य मुनि श्री नथमल जी महाराज

दोहा—शासन नायक वीर जिन-प्रणमु शुद्ध मन आन ।
गुण गाऊ गुरुदेवना, भविक सुनो धर ध्यान ।।१
सुर तरु पारस उदधि मणि, रवि शशि मेरु समान ।
पुज्य श्री "रिपिराजजी", गुणरत्नो की खान ।।२
तसु गुण गावन मन हुवा, पिण गुण अनत अपार ।
मन्दमती मै किम कहूँ, वारिधि सम विस्तार ।।३
पिण गुरु भक्ति प्रभाव थी, फले मनोरथ माल ।
जननी कर अँगुली ग्रही, डोलत है लघु वाल ।।४
सज्जन सुन राजी हुसे, मुरझासी मति मन्द ।
पय-मिश्री सवको सुखद, खर न लहे आनन्द ।।५

ढाल १—करहा बेगो चालेरे—ए देशी ।।

मरुधर देश मे ये तो, "वूडसु' ग्राम प्रधान रे ।
ठाकुर "श्री शिवनाथसिह" जी, तेह तणा वसिवानरे ।।
पूज्य तणी उत्पत्ति सुणो ।।१
ओसवस मे जाणिये, जात कुचेरिया कोठारी रे ।
"रिधकरणजी" दीपता, घर "सरसाजी" नारी रे ।।पू०।।२
जोधाणपति कोपियो, कोई कारण पाय रे ।
छोड "वुडाणो" ठाकुर निसर्या, ले समुदाय रे ।।पु०।।३

"हरिदुर्गपुर" मे तपे, "सेरसिह जी" दिवाण रे ।
"रिधकरणजी" आविया, सगपण सम्वन्ध पिछाण रे ।।पू०।।४

"करकेडी" की हाकमी, कोठारी जी ने दीध रे ।
नारि सहित सुख सू रहे, पुर मे जस प्रसिद्ध रे ।।पु०।।५

अनुक्रमे नदन जनमिया, इक वाधव इक वहैन रे ।
लघुसुत 'श्री रेखराज जी" नदन आनन्द देन रे ।।पु०।।६

अप्टादस पच्चीसीये, मृगसर मास उदार रे ।
सुद दसमी दिन जनमिया, वरत्या जयजयकार रे ।।पु०।।७

काल किता इक अन्तरे, वालक नाना रह गया ।
वालक नाना रह गया, माजी मन करे सोक रे ।।पु०।।८

पहली ढाल रे मायने, पुज्य लियो अवतारो रे ।
"नथमल" कहे धर्म मे, प्रगट हुवा दिनकार रे ।।पु०।।९

दोहा—पीहर नो प्रसग लख, पति भाइपो जान ।
'करकेडी' तज मातजी, वस्या 'रूपनगढ' आन ।।१

करकेडी आनन्द सु रहे सुत नाना लार ।
साल तिराणो का सुनो, अव आगे अधिकार ।।२

मरी पडी सव मुल्क मे, मरे वहुत नर नार ।
वड सुत पुत्र विहु मुवा, माता अरति अपार ।।३

लघु सुत पिण इण झपट मे, माता गई घवराय ।
कियो अभिग्रह ग्रहु चरन, जो नन्दन वच जाय ।।४

धर्म तणा परसाद थी, हुओ उपद्रव दूर ।
माता मन वैराग्य अव, जाग्यो चढतो नूर ।।५

ढाल २—घोडी थारा देश मे मारू जी—ए देशी

'पूज्य श्री घासीराम जी' सतगुरुजी भद्रिक तस परिणाम हो गुणवता ।
चेला 'श्री कनिरामजी' सतगुरुजी, 'कृष्णदास जी' नाम हो गुणवता ।
वुधवता भला हि पधारिया सतगुरुजी ।।१

पाटोधर कनिरामजी सत०, ज्ञान मे गोतम जाण हो गुणवन्ता ।
मुद्रा ज्यॉरी मनमोहनी सत०, मुखडारी अमृत वाण हो गुणवन्ता ॥
वुधवता भला हि पधारिया सतगुरुजी ॥२

देव देशना सिध ज्यो सत०, स्वमति परमति सर्व हो गुणवन्ता ।
आवे परखदा मावे नही सत०, गाल्या पाखड्यारा गर्व हो गुणवता ॥
वुधवता भला हि पधारिया सतगुरुजी ॥३

माता वाणी सुण न खुसी सत०, ए पारस मुनिराय हो गुणवता ।
मुझ सुत स्पू एहने, सत० तो कंचन हो जाय हो गुणवता ॥
वुधवता भला हि पधारिया सतगुरुजी ॥४

माजी अरज करी तदा सत०, मारा छ सजम रा भाव हो गुणवता ।
देख लक्षण तव वालना सत० लागो गुराजी रे चाव हो गुणवता ॥
वुधवता भला हि पधारिया सतगुरुजी ॥५

श्रीमुख गुरु फरमावियो सत०, वाइ वणै ए काम हो गुणवता ।
तो ए वल विद्याकरी सत०, मुलका मे काढे नाम हो गुणवता ॥
वुधवता भला हि पधारिया सतगुरुजी ॥६

वसीवान ठाकुर तणा,सत० वाईजी कठिन छे वणवो कामहो गुणवता ।
सा तो कहे चिता नही, सत० द्रढ छै मन परिणाम हो गुणवता ॥
वुधवता भला हि पधारिया सतगुरुजी ॥७

ग्राम अनेरे जायने स० सत०, लेस्यू सजमभार हो गुणवता ।
इहॉ काम सरे नही सत०, वाधा करे परिवार हो गुणवता ॥
वुधवता भला हि पधारिया सतगुरुजी ॥८

पूज्य कही माता सुत विहु स० आज्यो रिया धर रग हो गुणवता ।
"अगरचन्दजी" "नदरामजी" सत० दोनू रो परसग हो गुणवता ॥
वुधवता भला हि पधारिया सतगुरुजी ॥९

दूजी ढाल पूरी हुई सत० माता मन वैराग हो गुणवन्ता ।
"नथमल" कहे धन सती सत० कर छती को त्याग हो गुणवता ॥
वुधवता भला हि पधारिया सतगुरुजी ॥१०

दोहा—"रीया" पूज्य पधारिया, माता सुत पिण लार ।
कर गाडी भाडे प्रछन्न, आय गया तिण वार ॥१
पोष सुदी अष्टमी दिने, थिर अति थावर वार ।
साल तिराणु की भली, समिध तरु तल सार ॥२
परस्पर आज्ञा दई, माता सुत विहु लार ।
जाट्यावास रीया विचे, लीधो सजम भार ॥३
"ऊमाजी" मोटी सती, गुरणी गुण भडार ।
माताजी विनये करी, सीखे सव आचार ॥४

ढाल ३, या तो नाम धरावे माजीरे—ए देशी ॥

वालक हिव भणवो माड्यो रे, लघुवय प्रमादज छाड्यो रे ।
आठ वर्ष वय माही रे, वुध क्राति ने चेष्टा सवाई रे ॥१
सो सो श्लोक करे एक दिन मे रे, गुरुदेवा ने हरषित मन मे रे ।
ए वालूडो चिरजीवो रे, जिन मत होसी दीवो रे ॥२
'श्रमण सूत्र' सीख्या याम माही रे, ज्यारी बुद्धि मे कसरज नाही रे ।
'दसवैकालिक' 'उत्तराध्येनो रे', मास ग्यारा हुवा मुख कीनो रे ॥३
लब्धि-वधि-सजया-नियठारे, घणा थोकडा कीना कठा रे ।
वोल सूक्ष्म घणा आया रे, गुरुहित धर मर्म वताया रे ॥४
इक दिन "मेदनीपुर" आया रे, हरख्या सहु भाया ने वाया रे ।
"रत्नमुनी" तिहाँ आया रे, लघु वय देखण ने ऊमाया रे ॥५
कहि स्वामीजी ने देखावो रे, मारा मन में घणो छै चावो रे ।
प्रश्न पूछ्या उत्तर देस्यू रे, पाछो हूँ पिण पूछी लेस्यू रे ॥६
रतनचदजी ने टारी रे, अवरा ने इछे यारी रे ।
गुरु साथ रत्न पे लाया, लघु क्राति देखि वतलाया रे ॥७
लटके इन्द्री केती कहो भाई रे, दोय इन्द्री दीनि वताई रे ।
देखण न साध आया आघारे, ज्याने प्रश्न पूछवाने लागा रे ॥८

ज्यारा पूछ्या रो उत्तर नावे रे, न्यारा न्यारा विखर जावे रे ।
"मुनि रत्न" कहे वुध भारी रे, या वालूडो भाग धारी रे ॥९

सव साधा ने कहे दुखाई रे, इतरा वरसा कियो काई रे ।
इग्यारे मास हुवा दीक्षा लिया रे, वोल चाल किसा कठ कीया रे ॥१०

शुक्ल पक्ष चन्द्रमा नाई रे, नित चढति कला वरदाई रे ।
तिजी ढाल थई पूरी रे, निसुणो अजे वात अधूरी रे ॥११

दोहा—कनीरामजी ! ताहरे, शिष्य भलो श्रीकार ।
तुम सम दरिया ज्ञान रा, गुरु मिलिया निरधार ॥१

साल चोराणू की विमे, माह वद दसमी सार ।
"हणुतराम जी" शिष्य हुवे, मात सुत विहुलार ॥२

वुद्धि घणी विनय घणो, भणवा नो अति कोड ।
चन्द्र सूर्य सरखी मिली, गुरु भाया नी जोड ॥३

ढाल ४—पणिहारी नी—ए देशी ॥

दसवीकालिक उत्तराध्ययन जी रे मनमोहन स्वामी ।
सूयगडाग निशीथ हो जगमोहन स्वामी ॥
वृहत्कल्प आवश्यक भलो रे म०, कठ किया धर प्रीत हो ज० ॥१

अग उपाग मूल छेद जी रे म०, वाच्या जिनागम केय हो ज० ।
षट् मत ना ग्रथा तणा रे म०, पार कहो कुण लेय हो ज० ॥२

ज्योतिष वेद्यक मन्त्र ना रे म०, आदिक ग्रथ अनेक हो ज० ।
वाचण रो वहु शोक थो रे म०, मिलता सो लेता देख हो ज० ॥३

साठ हजार के आसरे रे म०, ग्रथ कियो मुख पाठ हो ज० ।
जिन मत अधिक दिपावता रे म० मिथ्या मत निरघाट हो ज० ॥४

वादी ठहर सके नही रे म०, चरचा मे चतुर सुजान हो ज० ।
शाति सुधा मइ मूरति रे म०, क्षमादिक गुणवान हो म० ॥५

दस चोमासा गुरु सा कने रे म०, कीधो ज्ञानाभ्यास हो ज० ।
एकादस मे मेलिया रे म०, वीकानेर चोमास हो, ज० ॥६

घणा नें मारग आणिया रे म०, दिया मिथ्यात्व मिटाय हो ज० ।
वाणी मुखनी लागणी रे म०, अनटाने लिया नमाय हो ज० ॥७

उगणीसे चोका तणी रे म०, माल तणो ए हाल हो ज० ।
वारोत्तर मेदनीपुरे रे म०, चोमासो उजमाल हो ज० ॥८

"नथमल" कहे सुण सामलो रे म०, ए थइ चाथी ढाल हो ज० ।
सतगुरु ना गुण गावता रे म०, वर्ते मगलमाल हो ज० ॥९

दोहा—महा वुदि अष्टमि माझ का, दोय पहर सथार ।
पुज्य "श्री घासीरामजी", लीधो काज सुधार ॥१
"नवानगर" उच्छव हुओ, स्वामी किया विहार ।
पुज्य चद्दर धारण करी, हरिदुर्गपुर मझार ॥२
पुज्य हुआ कनीराम जी, चितामणी समान ।
चेला "श्री रेखराजजी", दिनदिन चटतो भान ॥१

ढाल ५—अनोखा भवर जी हो—ए देशी ॥

जोडी गुरु चेला तणी हो सतगुरु, जिम गोतम महावीर ।
महिमा देश विदेश मे हो स०, तारण भव जलतीर ॥१

सतगुरु माहरा हो जिण समा निजर न दूजा आय ।
उपकारी चिहु सघ ने हो स० महिमा वरनी न जाय स० ॥२

टेर—साल तेर अजमेर मे हो स० किया स्वामी चोमास ।
खद तीनसो ऊठिया हो स०, कियो जैनधर्म प्रकाश ॥स०॥२

घणा अन्यमति समजिया जी स०, हिन्दु मुसलमान ।
रात्यु सगला आवता हो स०, सुणवा काज वखान ॥स०॥३

मुहता लूण्याँ विहु मुखी हो स०, सवेग्या मे जाण ।
सो तुम वाणी रस करी हो स० सुणता रोज वखाण ॥स०॥४

प्रशसा सहु नगर मे हो स०, फैली अपरपार ।
"रेख मुनि" कलजुग विषे हो स०, सतजुगनो अवतार ॥स०॥५

मुझ जननी वाणी सुणी हो स०, आयो दिल वैराग।
कही वात मानी नही हो स०, ममता दीवी त्याग ।।स०।।६

नेम किया घर रहण ना हो, स०, प्रबल जगत अन्तराय।
कपट करी मुझ ले गया हो स० मम भूरो जी आय ।।स०।।७

जननी तव ढीली पडी हो स०, वस्या जाय "हरसोर"।
सतगुरु विहार करी गया हो स०, मालवदेश की ओर ।।स०।।८

चोमासो 'रतलाम" मे हो स०, चवदा केरी साल।
गुरु चेला भेला रह्या हो स०, वरत्या मगलमाल ।।स०।।९

तिण साल दगो घगो हो स०, सारा मुलक मझार।
गोरा ने काला तणो हो स०, माच्यो युद्ध अपार ।।स०।।१०

शर सख्या ए ढाल मे हो स० मालव देश विहार।
वहु सहरा मे विचरिया हो स० कियो धर्म उपकार ।।स०।।११

दोहा—चोमासो उतर्या पछे, पाछा आता ताम।
मारग मे उपद्रव हुओ, जाणे त्रिभुवन स्वाम ।।१

देव गुरु प्रशाद थी, हुई जवर सहाय ।।
मिल्या शहर चित्तोड मे, लारासु पूज्य आय ।।२

माड वात सारी कही, खुसी रहीजो आप।
मरण कष्ट थो सो टल्यो, आपतणे परताप ।।३

मारवाड मे आविया, पनरह केरी साल।
"लाडपुरा" मे पधारिया, वरत्या मगल माल ।।४

मम जननी साभल हरखि, छाने ले मुझ लार।
लाडपुरे आव्या चली, लेवा सजम भार ।।५

अवसर देखी पुज्य जी, दीधो सजम भार।
असाढ वुदी पचमी दिन, शुभ महुरत गुरुवार ।।६

माता रही ससार मे, जाण क्लेशना जोग ।
भाई छ मम वकडा, न कटे मो विन रोग ।।७

हुओ मुकदमो अजे नगर, खुद साहिब के पास ।
माता दृढ़ अति जानकर, दियो हुकुम खुलास ॥८

'गजमलजी' लूणिया जिके, उण दिन चढ़ते नूर ।
रागी श्री महाराज का, मदद करी भरपूर ॥९

ढाल ६—बिंदली नणद गमाई ए देशी

पुज्य आप निज हाथे, मोने दीक्षा दीनी कृपानाथो रे ।
राख्यो स्वामी जी ने पासे, अजयनगर कियो चोमासो रे ॥
सतगुरु गुण धारी, गुणधारी जाऊँ बलिहारी रे पल२ में
वार हजारी रे ॥१

लाड करीने भणावे, मोने देख देख सुख पावे रे ॥स०॥
किरपा मे कसर न काई, म्हेर दोन्यु री सवाई रे ॥स०॥२

सियाले पास सुवाणे, मीठा वचन कहो ने उठाणे रे ॥स०॥
कदी न कियो उदासे, घणो सोरो राख्यो निज पासे रे ॥स०॥३

सोलह साल फागुन सुदी तीजे, मम जननी संजम लीजे रे ॥स०॥
नवानगर मझारी, कर महोत्सव अति ही भारी रे ॥स०॥४

आखातीज अठारा के वरसे, 'अचलदासजी आया मन हर्षे रे ॥स०॥
वरतमान रे माही, अम तीन रह्या गुरु भाई रे ॥स०॥५

द्वितीय रंगलालजी जाणो, तीजो रवि विमल पिछाणो रे ॥स०॥
विद्या सिखावी वारु, देखी निज निज बुद्धी सारू रे ॥स०॥६

छट्ठी ढाल विख्याते, मुझ दीक्षानी कही वाते रे ॥स०॥
गुरु महिमा हिव गाऊँ, गुरु नाम ते अति सुख पाऊँ रे ॥स०॥७

दोहा—ग्राम नगर पुर विचरता, करता पर उपकार ।
गुरु चेला चढती कला, ऊगता दिनकार ॥१

पुज्य थकी भिन्न विचरता, स्वामी देश विदेश ।
मेटे भरम मिथ्यात्व ना, जैसे तिमिर दिनेश ॥२

अष्टादस की साल में, 'हरिगट' किया चोमास ।
दक्षिणी पंडित ज्योतिषी, बोलाया नृप तास ।।३

दोय चन्द्रमा दोय रवि, जैनी माने केम ।
"रेखराजजी" ने जाई, पूछो नृप कहे एम ।।४

स्वामी पासे आविया, पट स्वरूप समझाय ।
जम्बूदीप पन्नत्ति सू, दीधो न्याय जमाय ।।५

नृप सुन कर राजी हुवा, कर प्रशंस अत्यंत ।
जैन धर्म में आज दिन, साधू बड़े महंत ।।६

ज्ञान ध्यान की खप करे, तप पिण अधिक तपंत ।
मन वलिया अति साहसी, शुद्ध मन जाप जपंत ।।७

ढाल ७—धन धन सासणरा धणी—ए देशी ।।

श्रावण भाद्रव मास मे, एकांतरे उपवास ।।
तरुण पणे बरस बहु, किया स्वामि हुलास ।।

टेर—धन सतगुरु तप जप म लाल, चरचा मैं चातुर घणा
किया वादी पैमाल ।।१

वास च्यार च्यार मास मे, किया वरस तेवीस ।।
उत्कृष्टा लगता किया, पच वास जगीस ।।धन०।।२

आंबिल फुटकर बहु किया, किया तेला अनेक ।
जप सहित आंबिल तणी, करी अठाई एक ।।धन०।।३

दस पच्छखाण तो स्वामि जी, कीधा केइ वार ।
तेला घणा उपवास ना, कीधा जप विधि लार ।।धन०।।४

ज्ञान पंचमी दिवस नू, गुरु तिथि अष्टमि मान ।
दो उपवास न छोडिया, जावजीव लग जान ।।धन०।।५

रस परित्याग कीधा घणा, द्रव्या नो परिमान ।
करता नित्य प्रति सद्गुरु जाणी लाभ महान ।।धन०।।६

शहरा मे विचरत मिल्या, श्री पुज्य महत ।
काजी मुल्ला साथे करी, चरचा धर खत ।।धन०।।७

सवेगी ने त्रयोदशी, आता वादी होय ।
परचो तुरत बतावता, जीती जातो न कोय ।।धन०।।८

राग-द्वेष महाराज के, किण ही मत सू नाहि ।
प्रसन्न होता आता जिके, ज्ञान चरचा रे माहि ।।धन०।।९

बुद्धि घणी उत्पातिनी, वाच्या ग्रन्थ अनेक ।
अतिसय जबर महाराजरी, बोल न सकतो एक ।।धन०।।१०

हाकिम साहिब आदि दे, बाबू मुसी अनेक ।
मिलिया ने सुलभ किया, अैसा पुन्य विवेक ।।धन०।।११

मारवाड ना सत जिके, मिलता करता सोर ।
जिन मारग मे ढाल हो, नावे किण्ने जोर ।।धन०।।१२

ढाल सातवी मे स्वामि ना, गुण है अनत अपार ।
किसी-किसी महिमा कथूँ, जाने जानन हार ।।धन०।।१३

सोरठा—बावीसा री साल, पुज्य सग महाराज जी ।
गुणनिधि परम कृपालु "हरिदुर्ग" पधारिया ।।१।।

दोहा—खरतर ना श्री पूज्य जी, मुक्तिसूरीजी नाम ।
ज्या सेती दिन तीन तक, सामे जाकर स्वाम ।।१

विविध भाति चरचा करी, पडित जना समक्ष ।
जो पक्ष कीनो ग्रहण, काट्यो स्वामी सुदक्ष ।।२

कहता हु ढ्या मात्र ने, नहि हम चरचा जोग ।
गर्व रूप ए मोटको, स्वामी मेट्यो रोग ।।३

शुदी पक्ष बारस दिने, एक पहर सथार ।
माता सू उऋण हुवा, हरिदुर्गपुर जार ।।४

तेवीसे वैसाख मे, बुदि नवमी शनीश्चर वार ।
थानापति वडे पुज्य जी, रह्या 'नगर' पुर जार ।।५

चद्रायणा छन्द

स्वामी करे गुरुनी सेव, चोमासो सग करे।
मत को रहे अतराय करण भय थी डरे ।।
शरण गुरु उपगार गुरु सम को नही।
विनयवत मु शिष्य गुरु सेवे सही ।।१

छवीसे नभ मास, कृष्ण अष्ठमि भली।
प्रतिक्रमणो पच्छखाण, किया पाछे वली।
सथारो दस पहर के, महिमा विस्तरी।
चढता भावा श्री पुज्य जी सुर सपति वरी ।।२

दोहा—मम गुरु तव उऋण हुवा, कारज सकल सुधार।
हिव चोमासो उतरता, श्रावक करे विचार ।।१
पुज्य श्री स्वर्ग पधारिया, स्वामी जी सू आज।
पुज्य चद्दरनी विनती करो, मिल कर सकल समाज ।।२
अरजी सव श्रावक तणी, मान लई तिण वार।
मिगसर वुदि पचमी दिवस, पुष्य नक्षत्र वुधवार ।।३
मम मन अति हर्सित भयो, हर्षित सहु नरनार।
चार सघ स्थानक मिल्या, करता मगलाचार ।।४

ढाल ८—चोकनी—ऐ देशी ।।

पुज्य 'रेख मुनि", पुज्य कनीरामजी ने पटराजे।
है सर्वगुनी, पाखडी तसु देख छटा मन लाजे।
।।ए आकडो ।।
सोम्य मुद्रा मोहनगारी, देखता लागे अति प्यारी।
निरखत नहि धापे नरनारी ।।पुज्य रेख मुनी० ।।१
ज्ञान तणा दरिया भारी, सकल शास्त्र मे अधिकारी।
काई जैन धर्म मे मणिधारो ।।पुज्य रेख मुनी०।।२

प्रश्न प्रदेशा सू आवे, श्री मुख उत्तर फरमावे ।
पत्र वाच भ्रम मिट जावे ।।पुज्य रेख मुनी० ।
सव कोई मुख से गुण गावे, एसा पडित नजर नही आवे
यथोचित उत्तर फरमावे ।।पुज्य रेख मुनी० ।
धन्य आज दिवस जिन मत माही, भ्रम तम हरवा रवि दाइ ।
अरु चन्द्र समान शीतल लाई ।।पुज्य रेख मुनी०।
श्रीमुख वाणी अमृत वरसे, सुणवाने वहमन तरसे ।
भवि जीव देख मन मे हरप ।।पुज्य रेख मुनी० ।
व्याख्या टीका पर करता, सशय सवके मन का हरता।
अरु सभा मे अमृत रस झरता ।।पुज्य रेख मुनी०।
कोई तर्क करवा आता, ज्याने उत्तर इसडो फरमाता ।
सुण चमत्कार सव मन पाता ।।पुज्य रेख मुनी०।।
निशि व्याख्यान ज फुरमाता, उसी वगत जोड्या जाता ।
सुण कविजन मन अचिरज पाता ।।पुज्य रेख मुनी०।।६
अक्षर पिण शुद्धाकारी, लिखवारी फुरती भारी ।।
सव गुण तन वसिया ज्यारी ।।पुज्य रेख मुनी०।।१
व्याख्यान करण की छवि न्यारी, मगन हुवे सहु नरनारी ।
ज्यारी वाणी अमृत घन धारी ।। पुज्य रेख मुनि० ।।१६
ढाल आठवी ए गाइ, 'नथमल' कहे सुणो चित लाई ।
गुरु महिमा सवने सुखदाइ ।।पुज्य रेख मुनी०।।१२

दोहा—महिमा श्री गुरुदेव की, किण विध वरणी जाय ।
चर्म ? लधि मे जल अधिक पसली मे न समाय ।।१
श्रीमुख ग्रन्थ वनाविया, तेहना सुनज्यो नाम ।
काली तणी अल्पावहुत, कियो ग्रन्थ अभिराम ।।२
चपकसेन[१] गुणावली , तेतली[३] ने पुन्यपाल[४] ।
आखतीज वखान[५] पुनि, आदि चरित्र विशाल ।।३

शान्तिनाथ जिनराज नू , रचियो चरित्र उदार ।
गुरुगुन वर्णन चरित्र पुनि, फुटकर ढाल अपार ॥४

काव्य श्लोक कविता वहुत, किया पूज्य मन रग ।
चमत्कार वहु अर्थ मे, निकले ध्वनि वहु व्यग ॥५

ग्रामा नगर विचरिया, घणा किया उपकार ।
अनडा भणी नमाविया, ते दाखु अधिकार ॥६

ढाल ६—श्रावक श्री वीरनो चम्पानो वासी रे—ए देशी

टेर—ज्ञानी गुरु मारा उपकारी भारी रे, सागर गुण ज्ञानरा
अति अतिसय धारी रे ॥

"शाहपुरा" पति दीपतो रे, "लक्ष्मनसिंह" भूपाल ।
महिमा सुण ने आप री रे, आया स्थानक मे चाल ॥ज्ञानीगुरु ॥१

दूजे पाट "नाहरसिंघजी" रे, ते पिण आता हमेश ।
परदेशी राजा तणो, सुणियो आख्यान नरेश ॥ज्ञानी गुरु०॥२

वरस अठारा मे भूपती रे, मृग मृगया दइ त्याज ।
खेंच करी चउमास नीरे, मानी नही महाराज ॥ज्ञानी गुरु०॥३

मुणि श्री "शालगरामजी" रे, ज्या ने दियो उपदेश ।
वाणी सुणता रोज का रे, हुआ रागी विशेष ॥ज्ञानी गुरु०॥४

चोमासा रे कारणै रे, निपट ही कीनी ताण ।
पिण जोधाणारी वीनती रे, पहली ही लीनी मान ॥ज्ञानी गुरु०॥५

सम्वेग्या मे शिरोमणी रे, आत्मारामजी नाम ।
इगतीसे मिल्या पूजसु , जिहा चामुडयो गाम ॥ज्ञानी गुरु०॥६

बीजी वार "सुभटपुरे, तीजी वार "नागोर" ।
चरचा करावण कारणे रे, लोगा मे माच्यो सोर ॥ज्ञानी गुरु०॥७

प्रश्न पूज्य श्री पूछिया रे, प्रज्वलित हुओ क्रोध ।
पूज्य मुलक मुखसु कहेरे, जाण लियो तुम बोध ॥ज्ञानी गुरु०॥८

फेर कहलायो पुज्यजी रे, जो तुम करणो वाद ।
तोहि करो अजमेर मे रे, आवे चरचा रो स्वाद ।।ज्ञानी गुरु०।।९

हामल भरि रे गछ गयारे, कपट करी तत्काल ।
डका रह्या नगीने, चालीसा री माल ।।ज्ञानी गुरु०।।१०

वनेडे राजा तपे रे, "गोविन्दसिघ' नरेन्द्र ।
व्याकरण वेदान्त मे रे, जाणे चरचा प्रवन्ध ।।ज्ञानीगुरु०।।११

पूज्य श्री तिहा पधारिया रे, खवर लही नरराज ।
मारवाड सु आविया रे, साधु पडित सिरताज ।।ज्ञानी गुरु०।।१२

असवारी चढ आविया रे, चरचा करवा भरपूर ।
उत्तर पुज्य श्री ना सुणी रे, विकसित हो गयो नूर ।।ज्ञानी गुरु०।।१३

आज्ञा करो मारे उपरे रे, अर्ज करी नृप नेट ।
आप ज्ञानी सँत मोटका रे, कहो सो करे हम भेट ।।ज्ञानी गुरु०।।१४

चवदस के दिन राज मे रे, हिसा होवे वन्द ।
भक्ति भेट याहि आपकी रे, हम मन होय आनद ।।ज्ञानी गुरु०।।१५

पुज्य कही सो सही कही रे, परवानो लिखवाय ।
सही कीनी निज हाथ सू रे, स्वामी ने सू प्यो आय ।।ज्ञानी गुरु०।।१६

"नदराय" पधारिया रे, पैतीसा री साल ।।
हाकम महता 'हरिसिघजी' रे, वैष्णव मत मे लाल ।।ज्ञानी गुरु०।।१७

रोज वखाण मे आवता रे, भीज गया तिण वार ।
सेवा तजी वैष्णव तणी रे, जाण्यो जिनमत सार ।।ज्ञानी गुरु०।।१८

सेलाने "शार्दुलसिघजी" रे, है नृप पुर के वार ।
महिमा सुणी मारवाड सू रे, आया सत श्रीकार ।।ज्ञानी गुरु०।।१९

विनती कर वुलाविया र, दर्शन दो ऋषिराय ।
मारे पग अडचन नही तो, हाजिर होतो आय ।।ज्ञानी गुरु०।।२०

नृप पे पुज्य पधारिया जी, दियो मधुर उपदेश ।
पडित नृप सारी सभा रे, सुख हरण्या सुविशेष ।।ज्ञानी गुरु०।।२१

उत्तराध्ययन सूत्र नो रे, अट्ठारह मो अध्येन ।
अर्थ सुणायो पाठ पेजी, मीठा अमृत वैन ।।ज्ञानी गुरु०।।२२

खॉच करी नृप रहैणनी जी, ऐसा कहा हम भाग ।
चोमासो हुवे आपरो रे, मिटे कर्मारा दाग ।।ज्ञानी गुरु०।।२३

दोय दिवस विराजिये रे, पूरो सुणा अधिकार ।
कहस्यो आप जो श्रीमुखे जी, सो ही भेट तैयार ।।ज्ञानी गुरु०।।२४

प्रेम देख पूज जी रह्या जी, पाछे किया नृप त्याग ।
निशि भोजन केरा किया जी, इसडी लागी लाग ।।ज्ञानी गुरु०।।२५

सब गावा मे तिण समेजी, षट् दिन हिंसा वन्द ।
नृप परवानो कर दियो रे, अरज करी नरेन्द्र ।।ज्ञानी गुरु०।।२६

वासी तुम मारवाड ना रे, म्हारो मालव वास ।
अव दरशण कहाँ आपरो रे, नृप मन हुओ उदास ।।ज्ञानी गुरु०।।२७

नवमी ढाल ये पुज्यश्री रे, अनडा ने समझाय ।।
श्री जिन धर्म दिपाड्यो रे, धन २ ज्यारी माय ।।ज्ञानी गुरु०।।२८

दोहा—इण विधि वहुला ग्राम मे, मालव देश मझार ।
हिंसा वन्द कराय ने, घणो कियो उपकार ।।१

मारवाड मे दीपता, जवर पटायत जाण ।
'रिया' 'कुचॉमण' 'रायपुर', 'मयुदा' सु प्रमाण ।।२

इसा ठिकाणा पुज्य जी, देय दया उपदेश ।
हिंसा वन्द करायदी, मेट्या जीवा रा क्लेश ।।३

''कृष्णगढ' पधारिया, स्थानक मे महाराज ।
राजा अने दिवाण जी, आदिक सभी समाज ।।४

आया सुण उपदेश मुख, सव ही करे प्रशस ।
इसा साधु नहिं आजदिन, जैनधर्म अवतस ।।५

ढाल १०—खबर करी ततखेव ए देशी ।।

इकतालीस री साल, चोमासा जयपुर कियो ।।ललना।।
नर नारी सब राजी, जस पुर फैलियो ।।ललना।।

मीठो सरस वखाण, श्रोता सुण गचता ।
पुंगी ऊपर मानो, नाग नचावता ।।ललना ।१

राजाजी रा नाना, आया वखाण मे ।।ललना।।
सुण कर हुआ प्रसन्न, भिना गुरु ज्ञान मे ।।ललना।।
वृन्दावन मै जाय आउ जहा तही ।।ललना।।
याही हमारी अरज विराजो इहाँ सही ।।ललना।।२

पाछे करीने अर्ज, नृपति ने लावस्यू ।।ललना।।
सतपुरसा रा चरण कमल भेटावस्यू ।।ललना।।
विदा हुआ कहि एम, वृन्दावन ते गया ।।ललना।।
पूज्य श्री चोमासा वाद, मास इक फिर रह्या ।।ललना।।३

आयो उठा सू पत्र, सेठजी पे सुनी ।।ललना।।
जावा दीज्यो नाहि सत है, वहु गुनी ।।ललना।।
पुज्य श्री कियो विहार, "हरीगढ' आविया ।।ललना।।
मरण कष्ट हुवो पूर वहु दुख पाविया ।।ललना।।४

देव गुरु परसाद, गाढी साता थई ।।ललना।।
विहार करी अजमेर आया सुख सू सही ।।ललना।।
वियालीसै चोमास, नवा नगर कियो ।।ललना।।
उत्तरते चौमास श्रावक वहु हठ कियो ।।ललना।।५

अव विचरणकी शक्ति, नही छै आपरी ।।ललना।।
थाणापति विराजो गादी महाराज री ।।ललना।।
पुज्य कहे थाणापति हाल रहूँ नही ।।ललना।।
विचरणे मे उपकार होय मोटो सही ।।ललना।।६

चोमासा रो तो वचन लियो भाया मिली ॥ललना॥
मोटो दीखे उपकार जिकि राखी गली ॥ललना॥
हरख्या श्रावक सर्व प्रवल पुन्य आपणा ॥ललना॥
अमृत रस तणा वखाण सू नही धापणा ॥ललना॥७

चैत्र उतरता विहार, "शाहपुरा" भणी ॥ललना॥
दोय मास रहा तत्र तपत पडी घणी ॥ललना॥
चोमासारी खाच 'सिघणजी" हद करी ॥ललना॥
वचन वधाणो पुज्य, कही मुख से खरी ॥ललना॥८

नव।नगर फिर आया, तियालिस सालमे ॥ललना॥
वीता सुख से चोमास के, मगल माल मे ॥ललना॥
चोमासा रे वाद, पोस वुदि तीज ने ॥ललना॥
गच्छपति कियो विहार, जोवाणे रीझने ॥ललना।
पाला होय सुभटपुर पुज्य पधारिया ॥ललना॥
हर्पित श्रावक सर्व, के अमने तारिया ॥ललना॥९

धर्म ध्यान रा ठाठ के, वहुला लागिया ॥ललना॥
नीठ मिल्यो सजोग, चिते पुज्य रागिया ॥ललना॥
सव स्रावक करे सेव, मुथा रामनाथजी ॥ललना॥
विजयसिघजी ने लाया, वहुजन साथ जी ॥ललना॥१०

प्रश्ना को तो उत्तर पुज्य जी हद दियो ॥ललना॥
सस्कृत री भापा सुनी, मन हर्पियो ॥ललना॥
मिलणू हुओ नाहि के, इलरा वर्प मे ॥ललना॥
मोटी रही अन्तराय के आपरा दर्श मे ॥ललना॥११

'हरदयालजी' मु सी, आवण नै ऊमाइया ॥ललना॥
पग मे हुओ दर्द के, तिण सु नहि आइया ॥ललना॥
"कविराजजी' आया आपरा दर्श ने ॥ललना॥
सुण नवकार नो अर्थ, गया दिल हर्ष न ॥ललना॥१२

चोमासा री खाच, निपट माडी घणी ।।ललना।।
प्रात दोपहरा साझ, मानो तुम गच्छ धणी ।।ललना।।
वडा वडा ए अनड, समझमी आपसू ।।ललना।।
वोलणू मोर के हाथ, वरसणू घन वसु ।।ललना।।१३

कोठारणजी खाच, निपट कीधी घणी ।।ललना।।
मनसा करण चोमास, हुई पुज्य श्री तणी ।।ललना ।।
मारो मन हुओ नाहि, कोई कारण करी ।।ललना।।
इसा गुरु विन कोन, टेक राखे खरी ।।ललना।।१४

ए थई दसमी ढाल, सकल शिष्यसग मे ।।ललना।।
जोधाणा सु विहार, कियो रस रग मे ।।ललना।।
मारग माही ग्राम, "खेजडलो" आविया ।।ललना।।
तेरहपथ्या सू चरचा करी, फिर नाविया ।।ललना।।१५

दोहा—मेदनीपुर अजमेर होय, मानी शिष्य अरदास ।।
नवा नगर मे पधारिया, करवा काज चोमास ।।१

"भागचन्द्र" वावू भला, जज साहव अजमेर ।।
करी दलाली सेठजी, ल्याया पुज्य पै लेर ।।२

सुण वाणी हुवा खुसी, साचा सत महत ।
आप जिस्या मिलिया विना, भजे न मन की भ्र त।।३

आसाढ सुदी नवमी दिने, नवानगर प्रवेश ।
साल चार चालीस की, श्रावक हर्ष विशेष ।।४

आसोज सुदि द्वितीया दिने मध्य रात्रि मझार ।
गोसा री अडचल हुइ, पीडा रो नहि पार ।।५

पुज्य वहुत घवराइया, वाकी न रही काय ।
आविल तप प्रभाव थी, लग्यो न काल उपाय ।।६

रागी सव राजी हुवा, टली पूज्य नी घात ।
घणा वरस विचरो मही, मेटो भरम मिथ्यात ।।७

ढाल इग्यारहवी माहिने, रूपनगढ ने तैयार रे ।
मन हुवा महाराज नो, कहो कुण रोकण हार रे ।।गुरु०।।१३

दोहा—दिन कितरा पहली सही, श्रावक कीनी खच ।
पुज्य कही मन विहारनो, करो मती परपच ।।१
श्रावक सघला चुप हुवा, मरजी देखी नाहि ।
विहार करे क्यो पुज्यजी, खटके सब मन माहि ।।२

ढाल १२—अब को चोमासो प्रभु जी अठे करो जी—ए देशी ।

जिण दिन करवा लाग्या विहार, तिण दिन वरजे सहु नरनार ।
परमति केई करे मनुहार, पुज्य श्री सू ज्यारे राग अपार ।।
थे हठीला सतगुरु, इतरी कइ ताणो जी
करा छा अरज, पुज्यजी क्यो नहि मानो जी ।।ए आचली।।
दरवाजा ना लाला जमादार
सुलभ कियो ज्यारो, पुज्य श्री जी सू प्यार
सारा सिपाही कहे कर जोड
कहा जाते है गुरुजी हम को छोड ।।थे हठीला०।।२

काकरिया ने घरा वाया जेह, वर्जे निपट मन आण सनेह ।
पचमी नो उपवास अठेही कराय, रस्ता मे पारणा मुसकिल थाय ।।थे०।।३
सुण पुज्य श्री फरमाइ तिणवार, पारणो ब्यावर करस्या विहार ।
याद आया मारो दिल घवराय ।।थे०।।४
घणा घरा मे पुज्य म्हर विचार, दर्श दिराया पिन्डा आप पधार ।
सूरजकवरजी करना विहार, धारी पक्की जामा देश मेवाड ।।थे०।।५
विहार रो दिन मै दियो वताय, पुज्यजी रे नहि तुलि दिल रे माहि ।
चालो ब्यावर तक तो तुम लार, पछे भले ही जाज्यो देश मेवाड ।।थे०।।६
पेटी बाधी ने हुवा तैयार दयाल, पाले सुकनज्या पर न करे खयाल ।
पुज्य श्री तो गाढी लीनी विचार, जल्दी अठा से करो विहार ।।थे०।।७

जवरो जग होवणहार, जिणने कहो कुण टालणहार ।
वीर जिणद त्रिभुवन नाथ, सावत्थी आना दोय सतानी घात ।।ये०।।८

रामद्वारे पधारिया दयाल, चारो हि मघ परमति वहुवाद ।
कृपा करी ने दियो वखाण, परदेशी राजा नो रे वयान ।।ये०।।९

वारहवी ढाल रामद्वारे प्रवेश, श्री मुख छेलो दियो उपदेश ।
जे नरनारी सुण्यो धर राग, 'नथमल' कहे ज्यारा मोटा भाग ।।ये०।।१०

दोहा—प्रात काल जव पुज्य श्री, करवा लग्या विहार ।
वहु नर नारी शहर ना, पहुचावण ने लार ।।१
नदी तट मगलीक मुन, पहुच्या जन निजगेह ।
कोटवाल आदिक रिया, अधिको धर्म सनेह ।।२
मगलिक कहे श्री पुज्यजी, फिर जावत फिर आत ।
पुज्य कहे अव छोडियो, मोह भाव हम साथ ।।३
मगलीक सुनकर घिर्या, आघेटा सू ताम ।
व्यावर पुज्य पधारिया, चोथ तणे दिन जाम ।।४
नवानगर सु कोस युग, व्यावर नामे ग्राम ।
मानु पधारिया पुज्य जी, चावो करवा नाम ।।५

ढाल १३—मोटी रे जग मे मोहणी—ए देशी

प्रात आहार कर पुज्य जी, याम तीजे हो अनुयोग द्वार ।
"माणक" "कुन्नण" विहु भणी, दई वाचणी हो मन मे घणो प्यार ।।१
भावि प्रवल ससार मे, अणजाणी हो कर देवे वात ।
जिन गणधर चक्री हारी, नहि जोर हो किणरो इण साथ ।।भावि०।।२
साझ पधारिया गोचरी, नहि आलस हो तन उपर कोय ।
पचमी नो उपवास छै, कियो भोजन हो रुच सेती सोय ।।भावि०।।
प्रात थडिल पधारिया, ग्राम वाहिर ही हो फिर पाछा आय
अमल मगाय आरोगियो, या तक हो पुज्य सुख रे माय ।।भावि

भाया आय वखाण मे, सव श्रावक हो कीजे व्याख्यान ।
श्री मुख सू मुझ ने कही, मति राखो हो आलस दुख दान ।।भावि०।।५

मै व्याख्यान शुरू कियो, लारे उठी हो गोसानी पीड ।
होवड खाली चल रही, घणी वेदना हो पिण साहस धीर ।।भावि०।।६

वखाण वाद "कुन्दन" कही, पुज्य श्री ने हो वेदना भरपूर ।
मै तव माही आवियो, आय देख्यो हो सतगुरु नो नूर ।।भावि०।।७

घवराहट मालुम पडी, मै पूछी हो जद कही खुलास ।
पनरह विश्वा मारी नही, दीसे हो अव ऊठण नी आस ।।भावि०।।८

म्हारी वाधी वेदना, तो हो मै भुगतू आज ।
भाया वाया सु कहे, रही सेठा हो द्यो मुझ ने साज ।।भावि०।।९

आथण नीर आरोगियो, प्रतिक्रमणो ही कीधो धर प्रीत ।
पच्छखाण कराया वाद ए, पुज्य मुझसू वोल्या इण रीत ।भावि०।।१०

अडचल अवै वधाव मै, वेदना नू हो नहि छै मुझ पार ।
सहू हुशियारी राखज्यो, वतलाओ हो मति वारवार ।।भावि०।।११

तेरवी टालै पुज्य नं, तन प्रकटी हो गोसा नी पीर ।
कर्म न छोडे कोय नै, भवि जो ज्यो हो प्रत्यक्ष महावीर ।।भावि०।।१२

दोहा—होवड पर होवड चले, पलक पडे नहि चन ।
सिघ तणी पर हो रह्या, वदै न कायर वैन ।।१

वीतराग को जाप इक, और नही दिल लाग ।
वीतराग पद लेण नै, वीतराग मू राग ।।२

तडके घटिक चार के, लागी दस्ता चार ।
तन की शक्ती कम पडी, मन वल अधिक उदार ।।३

वेदना थी सो मिट गई, गगाजल ज्यो भाव ।
काम कठिन श्री मुख कहे, जल अधविच ज्यो नाव ।।४

ढाल १४—हरी जो हो द्वार का केरो राय ए देशी

प्राते नीर मगाय ने रे, कर अरु चरण पखाल ।
वस्त्र सकल देखावियारे पोढ्या शाति रसाल ॥१
पुज्य जी धन तुम धन परिणाम ए ।।ए आचली ॥
अब तेडो कोतवाल ने रे, मत करो ढील लगार ।
भाया भेज्यो आदमी रे, नवा नगर मझार ।।पुज्य०।।२
अमल गाल नै मै दियो रे, लेवण रो मन नाहि ।
पिण म्हारो मन नहि रियो रे, अमल विन जीव अकुलाहि ।।पुज्य०।।३
चिह्न पलट्या देहना रे, श्री मुख सु कहे ताम ।
पारणो करो साधु सहुरे, घणो नही छे काम ।।पुज्य०।।४
काची आई म्हारे मनै रे, साधू सहु घवराय ।
पुज्य कहे सव एकसा रे, हिम्मतवन्त कोई नाय ।।पुज्य०।।५
आलोयणा रो मन घणो रे, मत को शल्य रह जाय ।
थारा लक्षण एहवा रे, लिया "माणक' वोलाय ।।पुज्य०।।६
पास वैसाणी पुज्य जी रे, नूतन व्रत उचरत ।
पाप अठारह त्यागिया रे, त्रिविधि २ धर खत ।।पुज्य०।।७
सथारो करवा तणी रे, मन मे घणी उम्मेद ।
आवाद्यो कोटवाल ने रे, मै तव दिया निषेध ।।पुज्य०।।८
म्हारा मन मे लालसा रे, चिरजीवे महाराज ।
मोह कर्म आडो फिरे रे, केम दिरीजे साज ।।पुज्य।।९
अल्पपुडल मे आहार नी रे, आण करी मनुहार ।
मन नहि पिण मन राखवा रे, लियो अल्प सो आहार ।।पुज्य०।।१०
नीर आरोगी ने कहे रे, अव मुझ रुचे नाय ।
कोटवाल आया नही रे, अवसर वीत्यो जाय ।।पुज्य०।।११
थडिल रो मन माहरो रे, आगो पाछो थाय ।
पुज्य कहे जा वेग सू रे, देर लगाजे नाहि ।।पुज्य०।।१२

"कुन्नणमल" सेवा करे, पुज्य तणी भरपूर ।
दिक्षा लीधा ही पछै, इक दिन रियो न दूर ।।पुज्य०।।१०

पुज्य श्री पिण किरपा करी, दीधो ज्ञान अपार ।
कसर न राखी पुज्य जी, फैले बुद्धि अनुसार ।।पुज्य०।।११

ढाल पन्नरहवी मे कियो, पुज्य श्री शुद्ध सथार ।
काल सू सामा मडरह्या, ज्ञान रि कर तलवार ।।पुज्य०।।१२

दोहा—श्रावक "माणकचन्दजी," बेठा सतगुरु पास ।
कोटवाल हाजर सही, सबका वदन उदास ।।१
'सूरजकवरजी' 'अगरजी', "कुन्नणमल" की,मात ।
तीन अरजका पास थी, अत समय की बात ।।२

ढाल १६—महावीर री की पालखडी । ए देशी ।।

हाजी सतगुरु सथारा मे पोढिया, हा दर्शन करे जन आय
हा नैंन थकी चोगी रहा, हा हुशियारी मनमाय ।।
म्हारा पुज्यजी हो धन ४ आपने ।।१

हा नवानगर सू उलटिया, हा दर्शण ने नरनार ।
हा अन्तराय रा जोगसू, हा न फले मनोरथ माल ।।
म्हारा पुज्य जी हो ।।२

हा ताडातोड तन पै नही, हा नहि हिचकी नहि स्वास ।
हाँ अङ्ग पटकवो को नही, हा कफ न कोई खास ।।
म्हारा पुज्य जी हो धन ४ आपने ।।३

हा पोढ्या शान्ति रस झीलता बोल्या तब कोटवाल ।
हा शास्त्र रीत जाणी सहू, हा राखज्यो तास ख्याल ।।
म्हारा पुज्यजी हो धन ४ आपने ।।४

हा साहगो तबही जोडयो, हा पाछो दियो जबाब ।
हा बोल्या समझ पडी नही, बरते नेडो आब ।।
म्हारा पुज्य जी हो धन ४ आपने ।।५

हा मै कहि जीभ देखाइया, हा देखाई तव काढ ।
हा उगली सू समस्या कही, हा जीभ नही मुझ गाढ ।।
म्हारा पुज्य जी हो धन ४ आपने ।।६

हा माडी करणी चेष्टा, हा नेत्र तणी ततकाल ।
हा क्षण मे मिले क्षण मे खुले, हा दीपक को सो ख्याल ।।
म्हारा पुज्य जी हो धन ४ आपने ।।७

हा विकसित कमल तणी परे, हा युगल नेत्र नो रूप ।
हा रूप खुल्यो सव देहनो, हा दिपुदिपु करत अनूप ।।
म्हारा पुज्य जी हो धन ४ आपने ।।८

हा सोलहमी ढालरे माहिने, हा सिघ ज्यो हुवा वीर ।
हा मोहिणी सव सू जीतिया, हा काटण करम जजीर ।।
म्हारा पुज्य जी हो धन ४ आपने ।।६

दोहा – चिहूँ सघ कै देखता, स्वर्ग चढाई कीध ।
जिण कारज नै ऊठिया, सोही कारज सिद्ध ।।१
डेढ घटा नो आवियो, चढता भाव सथार ।
थोडो ज्यू मीठो घणो, पचम काल मझार ।।२
प्रथम चैत्रशुदि प्रथम छठ, वार भलो रविवार ।
प्रहर सवा दिन माहिने, सीझ्यो पुज्य सथार ।३
गुणसठ वर्ष अरु मास त्रिण, उपर दिन इकवीस ।
वय इतनी पाई सकल, सच्यो जस सुजगीश ।।४
वर्ष इक्कावन मास युग, अट्ठावीस दिन जान ।
सजम पाल्यो पुज्य जी, सुध मन समता आन ।।५
चोथे आरे वीर विन, हुओ घोर अधार ।
कलिकाले कुण पूज विन ससय छेदन हार ।।६
विरह पड्यो ए मोट को, सव मन सोच अपार ।
जैन धर्म दीपक वडो, आज हुआ निरधार ।।७

पिण किण रो सारो नही, प्रवल काल त्रिकाल ।
तीन भुवन वासी सकल, कपावत यो काल ॥८

इम चित मे धीरज धरी, उच्छव [करी अपार ।
ममकार चन्दन त्रिणे, स्वमति परमति सार ॥६

हिव चोमासा पुज्य जी, कीधा किण खिण ठाम ।
चित्त धर श्रोता साभलो दाखू तेहना नाम ॥१०

ढाल १७—थे मन मोह्यो महावीर जी ॥ ऐ देशी ।

पीसागण रूपनगरे, चउमासो एक एक जी ।
घणा जीवा ने पुज्य जी, दियो धर्म विवेक जी ॥१

थे मनमोहन पुज्यजी, थारी सूरत री वलिहारजी ।
निजरन आवे जी एहवा, दूजा इण ससार जी ॥थे०॥ऐ आचली।

शाहिपुरा अजमेर मे, पाली जयपुर शहर जी ।
चोमासा दोय दोय किया, आणि पूरण म्हेरजी ॥थे०॥२

कुचामण रतलाम मे, चोमासा तीन तीन जी ।
किया जोधाणे दीपता, चोमासा च्यार प्रवीनजी॥थे०॥३

वीकानेर ने मेडते, पाच पॉच ए जोय जी ।
हरिगढ मे नव जाणिये, नवे नगर दस दोयजी ॥थे०॥४

सकल चोमासा पुज्यना, एक अधिक पच्चासजी ।
प्रथम कुचामन अन्त नो, नूतनपुर चउमास जी ॥थे०॥५

तेरह शहर चउमास ना, पुज्य लियो विश्रामजी ।
शेषे काल वहु क्षेत्र मे, विचरिया ठामोठामजी ॥थे०॥६

दिल्ली तक पूरव दिशा, दक्षिण मे इन्दोरजी ।
उत्तर दिशि विक्रमपुरे, अवर फलोधी जालोरजी॥थे०॥७

जिहॉ२ पुज्य श्री विचरिया, मेटिया मिथ्याअधकारजी ।
देख्या ते जाणे सही, पुज्य तणो उपकार जी ॥थे०॥८

पूरव दिशा पजाव नी, दक्षिण मे गुजरात जी ।
विनती वहुली जि आवती, पधारो स्वामीनाथजी ।।थे०।।९

पिण न हुओ पधारणो, घणा रे मन माहि जी ।
दर्शण करणे री रह गई, पूरी दिल अन्तरायजी ।।थे०।।१०

ढाल सत्तरह्नी मे कह्या, पुज्य तणा चउमासजी ।
'नथमल" कहे पुज्यजी, हूँ तुम चरणन रो दास जी ।।थे०।।११

दोहा—देश नगर गुरु वश गच्छ, मात पिता परिवार ।।
जैन धर्म दिपाइयो, धन धन तुम अवतार ।।१

ढाल १८—यात्रा निन्नाणु करिये रे भविका, ए देशी ।।

पुज्यनी महिमा भारी रे, जाणै जग नरनारी रे ।
किसी छानी महिमा जिणारी, भविक जन पुज्य ना गुण गावो रे,
होवे दिन २ हर्ष वधावो ।।१

धन वो क्षेत्र उदारो रे, जिहाँ पुज्य लियो अवतारो रे ।
धन मात पिता परिवारो ।।भविक जन०।।२

धन गुरु देव पठाया रे, धन शिष्या रा भाग सवाया रे ।
गुरु देव इसा शिर पाया रे ।।भविक जन०।।३

धन गुरुनी गादी दिपाइ रे, ग्रामा नगरा मे किरति सवाई रे ।
पिण मै मति सारु गाई रे ।।भविक जन०।।४

पैतालीसे माधव मासो रे, सुदि नवमी सुविलासो रे ।
नवॉ नगर थानक सुख वासो ।।भविक जन०।।५

गुरु गुण रत्न सु माला रे, रचियो ग्रन्थ रसाला रे ।
दुरगति ने दीधा ताला रे ।।भविक जन०।।६

सुगुण सुणी विकसावे रे, पुज्य गुण तो सवने सुहावे रे ।
भारी कर्मा ने दाय न आवे रे ।।भविक जन०।।७

राव उगत सबके उजारो रे, घूघू के होत अधोरो रे ।
तो वा की कर्मगत कारी रे ।।भविक जन०।।८

"नथमल" कहे सुणो भाई रे, अष्ठादस ढाल बनाई रे ।
गुरु महिमा सदा वरदाई रे ।।भविक जन०।।९

सुणता पातक जावे रे, दुख दोहग नेडो न आवे रे ।
जिके गुरु महिमा मुख गावे रे ।।भविक जन०।।१०

गुरु छठ आरम्भ टालो रे, सुध मन नेम सभालो रे ।
सुणवा रो सार निकालो रे ।।भविक जन०।।११

कलश

पुज्य जीवराजजी, पट लालचन्द्र जी मुनि वर ।
श्री दीपचन्द्र जी तास पटधर, स्वामीदासजी सुख करू ।।
उग्रसेन जी तास पट पुनि, घासीरामजी नाम जी ।
ज्ञानदीपक ज्योतिकारक, पुज्य श्री कनीराम जी ।।
तास पटधर प्रकट दिनकर, जैन मत मे जानिये ।
पुज्य श्री रेखराज जी मुनि, सकल गुण की खान ए ।।
तास पद कज दास "नथमल" भनत मन उजमालए ।
गुरु गुण रत्न सु माल सुनता, लहे मगलमाल ए ।।१

इति श्री पूज्य श्री रेखराज जी महाराज गुणवर्णनम्

।। गुरु गुण रत्नमाला सम्पूर्णम् ।।

जैनाचार्य श्री स्वामीदास जी म०
आदि सप्त महर्षियों की गुणानुवाद
गीतिकाएँ

महाश्रमणो की महा महिमा

अनत ज्ञान-गङ्गा के अविच्छिन्न प्रवाह से अनन्त अन्तस्तलोको को आप्लावित कर विज्ञान का वपन करने वाले भगीरथ श्रमणगण अनन्तकाल से भारतीय जनता का आध्यात्मिक अभ्युत्थान करते रहे है। उनमे जैनाचार्य श्री जीवराज जी महाराज के गण का भी प्रमुख यागदान रहा है।

इस गण की परम्परा का परिपूर्ण ऐतिहासिक विवरण प्राप्त करने के लिए अनेक इतिहास लेखक प्रयत्नशील रहे है। पर अपेक्षित सामग्री की अनुपलब्धि से प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करने मे वे अब तक असफल रहे है।

कतिपय महर्षियो का सक्षिप्त परिचय सकलित करके यहाँ प्रस्तुत किया है। आशा है ऐतिहासिक तथ्यो के अन्वेषक इस सामग्री को पाकर अवश्य लाभान्वित होगे।

१ प्रथम महर्षि

जैनाचार्य श्री स्वामीदासजी महाराज सा० का जन्म सोजत नगर मे हुआ था। आपका वश ओसवाल, गोत्र रातडिया मुथा, पिताजी का नाम श्री पाचाजी और माताजी का नाम श्री फूलाबाई था।

गणित आदि अनेक विद्याओ का अध्ययन करके आप उनमे निष्णात हुए। योग्यवय होने पर एक सुशील सुन्दर कन्या से सगाई हुई।

एक दिन आप विनोरा जीमने जा रहे थे। मार्ग मे एक जगह जैनाचार्य श्री जीवराज जी महाराज साहिब के प्रमुख पट्टधर पूज्य श्री दीपचन्द जी महाराज का ज्ञान गर्भित अपूर्व प्रभावशाली प्रवचन

हो रहा था। आपका अन्तस्थल श्री जिन वचनामृत का रसास्वादन कर अनासक्त हो गया, और विरक्त वनने का आयोजन करने लगा।

गुरुदेव के सामने आपने अपने विचार व्यक्त किए। गुरुदेव ने कहा—"जहासुह देवाणुप्पिया, मा पडिबध करेह" शुभ कार्य मे विलम्व उचित नही है। माता-पिता के सामने भी आपने अपना दृढ सकल्प व्यक्त किया तो वे सुनकर स्तब्ध हो गए, समझाने के अनेकानेक प्रयत्न किए गए, पर आप अपने निश्चय पर अटल रहे।

जिस कन्या के साथ आपकी सगाई हुई थी उसने भी आपके अविचल विरक्त भाव जानकर आपका अनुकरण करने की वलवती भावना व्यक्त की।

उभय पक्ष की ओर से अनुमति प्राप्त होने पर विक्रम सवत् सतरह सौ सित्यासी [१७८७] माघ शुक्ला चतुर्थी को पूज्य श्री दीपचद जी महाराज साहिव के समीप आप दोनो दीक्षित हुए।

सभी आगमो की आपने क्रमश वाचना ली, नौ आगम कठस्थ किये। अनेक आगम एव चउपाइया आदि आपने लिखे, शुद्ध सुन्दर लेखन तो आपका था ही, साथ ही आप शीघ्र लिपिक भी थे। आपकी लिखी हुई अनेक प्रतिया ब्यावर, किशनगढ, जयपुर, केकडी, साडेराव आदि अनेक ज्ञान भडारो मे उपलब्ध है।

आपकी लिखी हुई सम्पूर्ण वत्तीसी एक ज्ञान भण्डार मे पूर्णरूप से सुरक्षित है। आपके प्रधान शिष्य मुनि श्री उग्रसेन जी हुए, जिनके जीवन का परिचय आगे अङ्कित है।

अनेक प्रान्तो मे विचरण करते हुए आपने अपने सयमी जीवन के साठ वर्षो मे व्यापक धर्म प्रचार किया। आपके सदुपदेश से अनेक भव्यजीव सम्यक्त्वी वने, व्रतधारी वने और सयमी वने।

आपका स्वर्गवास नागोर नगर मे हुआ। अट्ठाईस दिन का भक्त प्रत्याख्यान (सथारा) करके पण्डित मरण प्राप्त हुए।

विक्रम सवत् अठारह सो सेतालीस की आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को "मोतीचद" नामक श्रद्धालु भक्त ने आपकी गुणानुवाद गीतिका रची जो इसी पुस्तिका मे अङ्कित है।

सोजत नगर मे आपके वशज वर्तमान मे भी विद्यमान है। आपके सक्षिप्त जीवन परिचय का एक शिलापट कोटका मोहल्ला के जैन स्थानक मे स्थापित है।

२ द्वितीय महर्षि

पूज्य श्री उग्रसेन जी महाराज का जन्म पीसागन नगर जिला अजमेर मे हुआ, आपका वश ओसवाल, गोत्र चोरडिया, पिता का नाम कर्मचन्द जी, माता का नाम रामाबाई था।

आप जव आठ वर्ष के हुए तव आपने जैनाचार्य पूज्य स्वामीदास जी महाराज साहिव के समीप दीक्षा ग्रहण की।

सयमी जीवन के अट्ठावन वर्ष मे ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप आदि की अनेक साधनाए आपने की।

अनेक प्रान्तो मे विचरण कर अनेक भावुक आत्माओ को आगार धर्म और अणगार धर्म मे आपने दीक्षित किए।

आपके सात प्रमुख शिष्य हुए जिनके नाम गुणानुवाद गीतिका मे सकलित है। नागोर नगर मे जैनाचार्य श्री स्वामीदास जी महाराज साहिव ने जव भक्त प्रत्याख्यान किया था, उस समय आप आचार्य प्रवर की सेवा मे सलग्न रहे थे।

विक्रम सवत् अठारहसौ इकतरह [१८७१] की ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी को आपने पण्डितमरण से समाधिभाव प्राप्त किया। श्री उत्तमचन्द से वग ने गुणानुवाद गीतिका की रचना की।

३ तृतीय महर्षि

तपस्वी श्री फकीरचद जी महाराज साहिव का जन्म किशनगढ

मे हुआ था। आपका वश ओसवाल, गोत्र पीपाडा, पिताजी का नाम राजमल जी और माता जी का नाम फुलावाई था।

विक्रम सवत् अट्ठारह सो वोयालीस की मृगसिर कृष्ण एकादशी को आपने पूज्य श्री उग्रसेन जी महाराज के समीप दीक्षा ग्रहण की।

आपकी उत्तरोत्तर वढती हुई तपश्चर्या का उपलब्ध विवरण इस प्रकार है।

१ अट्ठाई, १ पन्द्रह १वाईस १ तीस १ इकतीस १ वत्तीस १ सेतीस १ गुणतालीस १ पेतालीस १ इक्कावन १ सत्तावन १ त्रेसठ १ छासठ। इसके अतिरिक्त लघु तपश्चर्यायें भी आपने की थी।

आपने जीवन पर्यन्त तीन वस्त्र और तीन पात्र से अधिक न रखने की मर्यादा की थी।

विक्रम सवत् अठारह सो सडसठ [१८६८] की वैशाख कृष्ण चतुर्थी को किशनगढ मे छ प्रहर का भक्त प्रत्याख्यान करके आप स्वर्गस्थ हुए।

४ चतुर्थ महर्षि

पूज्य श्री घासीराम जी महाराज का जन्म मारवाड मे लाडपुरा ग्राम मे हुआ था। यह ग्राम पुष्कर से दस मील दूर है।

आपका वश ओसवाल, गोत्र लुणावत, पिताजी का नाम मालु-राम जी और माता जी का नाम सुजाणा जी था।

विक्रम सवत् अठारह सो अडतालीस की भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा के दिन आपने और आपके माताजी ने किशनगढ मे पूज्य उग्रसेन जी महाराज साहिव के समीप दीक्षा स्वीकार की थी। उस समय आपकी वय आठ वर्ष की थी।

आपका पाडित्य एव लेखन अपूर्व था। आपके वशज लुणावत परिवार लाडपुरा ग्राम मे विद्यमान है।

५ पञ्चम महर्षि

पूज्य श्री कनीराम जी महाराज साहिब का जन्म पिसागण नगर जिला अजमेर मे हुआ था। आपका वश ओसवाल, गोत्र वोहरा, पिता का नाम भौमराज जी और माता का नाम श्री गुमाना वाई था।

पूज्य श्री घासीराम जी महाराज के समीप आपने दीक्षा स्वीकार की, उस समय आपकी वय दस वर्ष की थी।

आपका पूर्णायु वहत्तर वर्ष का था, एव सयमी जीवन त्रासठ वर्ष का रहा।

विक्रम सवत उन्नीस सो छवीस की स्रावण कृष्ण अष्टमी को छ प्रहर का भक्त प्रत्याख्यान करके आप स्वर्गस्थ हुए। आपके प्रधान-शिष्य पूज्य श्री रेखराज जी महाराज साहिव हुए थे।

६ षष्ठ महर्षि

पूज्य श्री रेखराज जी महाराज साहिव का विस्तृत जीवन चरित्र इसी पुस्तक मे प्रकाशित है, जिज्ञासुजन उसे आद्योपान्त पढकर पूर्ण जानकारी प्राप्त कर ले।

७ सप्तम महर्षि

पूज्य श्री स्वामी जी श्री वखतावरमल जी महाराज साहिव का जन्म गगापुर मेवाड मे हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री अनोपचद जी और माता जी का नाम श्रीमती मानादेवी था।

पूज्य श्री वृद्धिचन्द जी महाराज साहिव के समीप आपने दीक्षा स्वीकार की थी उस समय आपकी लघुवय थी। युवा होने पर आपने शास्त्रो का, वोल-थोकडा, और व्याकरण-काव्य-छन्द-न्यायाऽलङ्कार-आदिक का अध्ययन किया एव प्रकाण्ड विद्वान् हुए।

आप ओजस्वी एव महाप्रभावी थे। वम्वई क्षेत्र मे जागृति लाने वाले तथा व्यापक धर्म प्रचार करने वाले आप प्रथम श्रमण थे।

गोढवाड, मेवाड, और मारवाड प्रान्त आपके विहार के क्षेत्र रहे है । साडेराव आपका सर्वाधिक प्रिय क्षेत्र रहा है ।

जहा एक भी घर स्थानकवासी श्रावक का नही होता, वहाँ भी आप पूरा वर्षावास विता देते थे ।

पजाव जैसे सुदूर प्रान्तो मे भी आपने निर्भीक होकर अनेक वार विहार किये थे ।

आपके लिखे हुए अनेक ग्रथ आज भी साडेराव के ज्ञान भण्डार मे सुरक्षित हैं । शुद्ध सुन्दर लिपी ही आपके पाडित्य को प्रगट कर रही है । आपका स्वर्गवास विक्रम संम्वत् १९८६ की कार्त्तिक शुक्ला सप्तमी को साडेराव मे हुआ । तत पश्चात् अग्नि-सस्कार के समय एक दिव्य घटना घटी—जिसके प्रत्यक्षदर्शी आज भी अनेक सज्जन साक्षी है ।

पूर्व दिशा से एक वर्तुल वडे वेग से आया, स्वामी जी महाराज के मुख पर स्थित मुखवस्त्रिका उडाकर उत्तर दिशा की ओर ले गया—उसे प्राप्त करने के लिए अनेक लोग दौडे पर वह वस्त्र तो उपरोपरि अनत आकाश मे अदृष्ट हो गया ।

आपके गुणानुवाद गीतिका के रचयिता हैं उप प्रवर्त्तक श्री पुष्कर मुनिजी महाराज । आपकी स्मृति मे वाकलीवास का नाम "वखतावर पुरा" रखकर श्रद्धालु भक्तो ने श्रद्धा व्यक्त की है ।

इन सप्त महर्षियो के ज्ञान-दर्शन-चारित्र के प्रति श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए—मुझे असीमानन्द का अनुभव हो रहा है, आपके उपकारो के प्रति श्रद्धावनत होकर कृतज्ञता प्रगट कर रहा हूँ ।

विनयावनत
मुनि रोशन

जैनाचार्य श्री स्वामीदास जी महाराज के
गुण-ग्राम

॥ दोहा ॥

जम्वूद्वीप रा भरत मे, सोजत शहर शुभ ठाम ॥
तिहा स्वामीदासजी जनमिया, ज्यारा सुणो गुण ग्राम ॥१

॥ ढाल ॥

उत्तम कुले "पाचाजी" रा नदो, ज्यारा घर मे हुवा छे आणदोरे ॥
उपना फूला वाई रे कूख आणी, स्वाम सरीखा वैरागी विरला जाणी ॥१

वालक वय मे घाल्या पोशालो, गृहस्थ पणा रो भणिया सघलो ॥
भणवारी कला घणी आणी, स्वाम सरीखा० ॥२

वालक वय रे माही समज्या, अथिर ससार ना सगपण तज्या ॥
मने वैराग उपसम आणी, स्वाम सरीखा० ॥३

कारमो कुटम्व परिवारो, कारमी रिध कोई नही म्हारो ॥
छाड्यो ससार वैराग आणी, स्वाम सरीखा० ॥४

समत सतरे से-सित्यासीये, माघ सुद चौथे सजम वसिये ॥
दीपजी गुरु मिलिया आणी, स्वाम सरीखा० ॥५

विनो भगत पुजरो घणो, शुध पाले आचार साध पणो ॥
दूपण टाली ल्यावे आहार पाणी, स्वाम सरीखा० ॥६

गुरु मोटा गुरुभाया री जोडी, माहो माहे भणे होडाहोडी ।।
ज्ञान री चूप हिये आणी, स्वाम सरीखा० ।।७

नव सुत्तर तो मुहडे कीया, वले पाठ अरथ घणा लीया ।।
सरस वाचे वखाण वाणी, स्वाम सरीखा० ।।८

बत्तीसे सूत्तर वाच्या सही, घणा सूत्र अर्थ गुरु मुख लही ।।
वाचणी ले गुरुमुख आणी, स्वाम सरीखा० ।।९

गाव नगरा वीचरे जठे, तिहा घणा जीवारो सशय मिटे ।।
सुणे वखाण परिषद आणी, स्वाम सरीखा० ।।१०

सवेगी ने गच्छवासी, ज्यासू चरचा करी हुवे हुलासी ।।
ज्यारी वोली मीठी इमरत वाणी, स्वाम सरीखा ।।११

समदृष्टि कोई मतधारी, ज्याने धर्म सुणावे हितकारी ।।
ज्या कहता खेद नही आणी, स्वाम सरीखा० ।।१२

शिष्य शिष्यणी ज्याहरा मोटा, ज्यारी वाणी सुणी ने लीधा ओटा ।।
विनो करीने उभा आणी, स्वाम सरीखा० ।।१३

श्रावक ज्यारा मोटा, ज्यारे श्राविका पिण लीधा ओटा ।।
ब्रह्मचर्य कीधा कन्हे आणी, स्वाम सरीखा० ।।१४

वरस साठ लगे वीचर्या, घणा देश प्रदेश माहे सचर्या ।।
मन मे हरष घणो आणी, स्वाम सरीखा० ।।१५

सथारो तो नवमी ने कीयो, शहर नागोर माहि जस हूयो ।।
अठाईस दिन चढता भाव आणी, स्वाम सरीखा० ।।१६

सथारा रो अवसर दीसे, आप नैणा सु देख्या हाथ तीसे ।।
च्यारु ही छोडू अन पाणी, स्वाम सरीखा० ।।१७

शिष्य उगरोजी निज हाथो, ज्या सेवा करी छे दिन रातो ।।
गुरा सू उरण हुवा हित आणी, स्वाम सरीखा० ।।१८

श्रावका मिल महोच्छव कियो, घणा सू स पच्छखाण उपगार हुयो॥
चलावो कियो भक्ति आणी, स्वाम सरीखा० ॥१९

सवत् अठारह सेतालीसे, असाढ सुदी पूनम दिवसे ॥
गुण किया "मोतीचन्द" हित आणी, स्वाम सरीखा० ॥२०

उत्तम पालो साधपणो, ज्यो परभव मे हुवे हित घणो ॥
चिन्ता दुख दूर हराणी, स्वाम सरीखा०॥२१

षटरस ऊपर ममता छोडी, सूर-पणो मन ल्याई ।
पुज्य कहे हूँ करू सथारो, म्हारे जेज नही काई ।।क०।।७

कृष्ण पक्ष ने जेष्ठ महीने, धीरज मन ल्याई ।
बारस रयणी श्रावग बैठा, करे चरचा चित ल्याई ।।क०।।८

वरस अठावन सजम पाल्यो, ग्राम नगर सचारी ।
भवजीवा ने प्रतिवोध कर, आतम कू तारी ।।क०।।९

सामी-श्री दयाचन्दजी शिष्य पाटवी,गुरु वचन कर प्रमाणी ।
जो इस्या अवसर मे रहया ज लगता, चतुर अवसर जाणी ।।क०।।१०

"चन्द्रभाणजी" आण पहूँता, तिण अवसर माही ।
करी चाकरी उरण हुवा, शहर "कृष्णगढ" माही ।।क०।।११

स्वामी जी घासीरामजी पूरा पडित, चित मे चतुराई ।
उण अवसर मे आय सक्या नहि,दरशण री रहि मन माही ।।क०।।१२

शिष्य सात् है मोटा गुणवता, कला वहुत भारी ।
स्वामी "श्री निहालचन्दजी' करी चाकरी सदा सुक्खदाई ।।क०।।१३

"स्वामी श्री नरसिहदास जी" सुण्यो सथारो
चिता घणीय मन लाई ।
सह्या परीसा कोश इग्यारा, दर्शण किया नव दिन मे आई ।।क०।।१४

अतर भक्ता "स्वामी केशोरामजी, गुण माहे अविकारी ।
पढ गुण ने ते हुआ विचच्छण, करि लुलताई ।।क०।।१५

सूस आखडी चोथा वरतनी, व्यवहारी मन धारी ।
रयणी भोजन हरी त्याग करि, पुज सम्मुख आई ।।क०।।१६

सर्व सरावग मिल्या मोटका, पुज आगे अरज करे आई ।
आप तणो हिज दरशण करता, म्हारो भव सफल थाई ।।क०।।१७

पुज्य जी रा गुण अधिकेरा, टुकेक वरणाई।
सूरवीर ने साहस धीरा, लगी सुरत शिवपुर माही ।।क०।।१८

ज्ञान-घोडे पर चढ्या रिपीश्वर, तन मन हुलशाई।
करि केशरिया ऊरि दिया, मुनि कर्म कोरट के माही ।।क०।।१९

भली भाति सू कियो चलावो, करि-करि सज्झाई ।।
काष्ट चन्दन मे दाग जु दीनो, मिल्या वृद्ध-भाई ।।क०।।२०

सवत् अठारे वरस इकोतरे, ग्यारस रविवारी।
'उत्तमचन्द" सेवग री विनती, सुणता सुखकारी ।।क०।।२१

तपस्वी श्री फकीरचन्द जी महाराज के गुणग्राम

॥ दोहा ॥

जवू दीपरा भरत मे, किशनगढ शहर शुभ ठाम ।
तिहा फकीरचन्द जी जनमिया, ज्यारा सुणो गुणग्राम ॥

॥ ढाल ॥

ओसवाल कुल दीपतो रे, गोत्र पीपाडा जान रे, सोभागी ।
'राजूजी' रे घरा ऊपना रे लाल, 'फूलाबाई' कूख आणरे ॥सो०॥१
तपसी 'फकीरचन्द जी' दीपता रे लाल ॥टेर॥

श्रावक ना व्रत पालता रे, परणवाना किया त्याग रे ॥सो०॥
पोपा पडिक्कमणा करे रे लाल, धरम सू घणो राग रे ॥सो०॥२

सजमना भाव ऊपना रे, करस्यू खेवो पार रे ॥सो०॥
जहाज मिली रतना तणी रे लाल, स्वाम गुणा रा भडार रे ॥सो०॥३

सजम सू हित आणियो रे, आया 'भिलाडे' चलाय रे ॥सो०॥
वाणी सुणी पुज्य जी तणी रे लाल, चरित्र सु चित्त लाय रे ॥सो०॥४

सवत 'अठारसै' जाणिये रे, वरस 'वियालीस' कीन रे ॥सो०॥
मिगसर वदि इगियारस दिने रे लाल, सजम सुन्दर लीन रे ॥सो०॥५

तीन वस्त्र तीन पातरा रे, दीधो जीवा ने अभयदान रे ॥सो०॥
उग्रसेन जी सतगुर मिल्यो रे लाल, बत्तीस सूत्रना जाण रे ॥सो०॥६

तपस्या तणी मन मे उपनी रे, करस्यू जीवनो उद्धार रे ॥सो०॥
किण विध कीना थोकडा रे लाल, ते सुण जो अधिकार रे ॥सो०॥७

धुर अठाई पनरे किया रे, वावीस-तीस-इकत्तीस रे ।।सो०।।
गुणतालीसा पैतालीस जाणज्यो रे लाल,वत्तीस वले सेतीस रे ।।सो०।।८

इक्कावन सत्तावन किया रे, तरेसठ गुणसठ धार रे ।।सो०।।
छियासठ उपवास किया भला रे लाल, दीपे गुण भडार रे ।।सो०।।६

छियासठनो कियो पारणो रे, दिन-दिन दूध को कृ त रे ।।सो०।।
कर केशरिया नाखसूं रे लाल, ज्यू रण मे रजपूत रे ।।सो०।।१०

सवत अठारे से सडसठे रे, वदि बैसाखी चौथ रे ।।सो०।।
सथारो शुध भाव सू रे लाल, काया तणो कियो शोष रे ।।सो०।।११

केई नीलोती परहरे, केइक छोडे कद मूल रे ।।सो०।।
केई नर ले चौथानी आखडी रे, लाल, तपस्या करै परफुल्ल रे ।।सो०।।१२

इसडी करणी विरला करे रे, कायर को नहि काम रे ।।सो०।।
सुरा ते साहमा मडे रे लाल, परभव मे सुधरे काम रे ।।सो०।।१३

घर छोड्या जिण रा खरा रे, सुधर गया परलोक रे ।।सो०।।
तप जप-रूडी करणी करे रे लाल, ज्यारो सुधरे परलोक रे ।।सो०।।१४

छ पहर अणसण रह्या रे, जिण मे दोय पहर चोविहार ।।सो०।।
करमा सू साहमा मड्या रे लाल, ज्यू साहमा मडे नहार ।।सो०।।१५

गुणवता ना गुण गावता रे, समकित थाये शुद्ध रे ।।सो०।।
तपसीजी ना गुण गावता रे लाल, निरमल होये बुद्ध रे ।।सो०।।१६

शहर किशनगढ सुहावणो रे, श्रावक समकित धार रे ।।सो०।।
सू स पच्छखाण हुवा घणा रे लाल, घणो हुवो उपगार रे ।।सो०।।१७

सरावग सहु हर्षित हुवा रे, मोच्छव कीधो अपार रे ।।सो०।।
सेवग उत्तमो वीनवे रे लाल, म्हारी आवागमन निवार रे ।।सो०।।१८

पुज्य श्री घासीरामजी महाराज साहब के गुणग्राम

२

मरुधर देश मे गाम "लाडपुर", लूणावत शुध जात ।
"मालूराम जी" तात तुम्हारा, "सुजाणा जी" मात ॥१

एक दीधी हो स्वामी जी म्हाने, ज्ञानरी जडी, एक दीधी हो ॥टेर।

वाल ब्रह्मचारी आठ वरस मे, साभल सतगुरु वैण ।
समकित धार्यो मोह निवार्यो, खुलिया अतर नेण ॥एक०॥२

कहे माता ने अनुमति दीजे, छोड़ू ए ससार ।
उग्रसेण जी सतगुरु पासे, लेस्यू सजम भार ॥एक०॥३

"सुजाणाजी" वात सुनी ने, हुवा सजम ने त्यार ।
भरम अधारो गयो जिणा रो, लागो मुक्त सू प्यार ॥एक०॥४

सवत अठारे वरस अडतालीसे, किशनगढ मझार ।
भादवा सुदी पूनम के दिन, लीधो सजम भार ॥एक०॥५

पुत्र-मात वेहु सजम लीधो, पाले पाच आचार ।
पाच महाव्रत सूधा पाले, चाले खाडा धार ॥एक०॥६

पाच सुमत अरु तीन गुप्त शुध, पट्काया प्रतिपाल ।
सत्ताईस गुण निर्मल उज्वल, सतगु० दीन दयाल ॥एक०॥७

स्वामी घासीरामजी घणाहिज पडित गुण नो छेह न पार ।
सूरत प्यारी जानु वलिहारी, वचन सुधा-रस सार ॥एक०॥८

व्रत माहे जिम ब्रह्मचर्य मोटो, नीर मे गगानीर ।
भूषण माहे चूडामणि मोटो, क्षीर माही गोक्षीर ।।एक०।।९

गुण माहे विनय गुण मोटो, रस माहि ईख रस ।
वन माहे नदनवन मोटो, ज्यो मोटो आपरो जस ।।एक०।।१०

काष्ट माहे बावनो चन्दन, इन्द्री-मा जिम नैन ।
पुष्प माहे ज्यू अरविंद तुमने, देख्या पाऊ चेन ।।एक०।।११

धातु माहे सुवरण मोटो, नृत्यकला मे मोर ।
अल्पबुद्धि हूँ तुम गुण कहवा, माहरी कितियक दोड ।।एक०।।१२

अल्प बुद्धि हू नही जाणतो, स्यू होवे पुन्य पाप ।।
आश्रव सवर हिव ओलखिया, आप-तणे परताप ।।एक०।।१३

बन्ध-मोक्ष दो ज्यारो जोडो, पहली न पडी ठीक ।
कारण कार्य शुभाशुभ जाण्या, दीधा सतगुरु सीख ।।एक०।।१४

व्रत अव्रत री ठीक न पडती, नहि जाण्यो द्रव भाव ।
अब सतगुरु उपदेश दियो जद, भिन्न २ ज्याण्या न्याव ।।एक०।।१५

सावद निर्वद दोनू जाण्या, गुरा तणे परताप ।
कुगुरु खोटा बीज लगावे, जाण्या काला साप ।।एक०।।१६

शत्रु साहमो भिन-भिन जोयो, गुरुमुज परम दयाल ।
किरपा करने मोय भणायो, सतगुरु वचन रसाल ।।एक०।।१७

केई मिथ्याती एम परूपे, चूका श्री महावीर ।
मै प्रश्न पूछियो सतगुरु आगे, जद दियो ज्ञान रो तीर ।।एक०।।१८

इण जुग माहि घणा पाखडी, बोले भिन्न भिन्न बोल ।
ज्याने हरगिज नही पतीजू, जाणू ककर मोल ।।एक०।।१९

सतगुरु री परतीतज पूरी, नहिं मानू और री दक्ष ।
सजम सूरा गुण कर पूरा, चिन्तामणी प्रत्यक्ष ।।एक०।।२०

पोह उठीने नामज लेऊ, सतगुरु नो ज्यू काज ।
सीझे बछित कर्म तूटिया, पामे अविचल राज ।।एक०।।२१

दर्शण चाऊ ध्यान जु ध्याऊ, जपू हू नित गुणमाल ।
ज्यो तुमरी को निन्दा गावे, जिणरे कर्म जजाल ।।एक०।।२२

कोई रो सगपण नहि राखो, राखो सगपण धर्म ।
मूरख मतिया काई न समझे, हू जाणू ए मर्म ।।एक०।।२३

हलुकरमी सुण राजी होसी, करसी निगुणा धेख ।
मै थारा गुण भिन्न २ जाण्या, लीधा परतख देख ।।एक०।।२४

पुज्य श्री नीरा जी महाराज के गुणग्राम

धन धन पुज्य जी कनीराम जी, जैन धरम मे सिणधारी ।
नवानगर मे कियो सथारो, धर्म दिपायो अति भारी ॥ध०॥टेर
पुर पीसागण ओसवश पितु, "भोमराजजी" सुखकारी ।
मात "गुमानाजी" का नदन, सूरत अति लागे प्यारी ॥ध०॥१
दस वर्षा मे सयम लीयो, उत्तम बाल ब्रह्मचारी ।
जैपुर मे जिन मत दीपायो, गुरु घासीरामजी गुणधारी ॥ध०॥२
हुवा पडित ज्ञान अखडित, पुज्य तणा आज्ञाकारी ।
जिन मत मडन, पर मत खडन, वचन सुधारस घनधारी ॥ध०॥३
आलस तनिक न दीसे तन मे, ज्ञान पढावे हितकारी ।
भिन्न भिन्न कर भेद बतावे, युक्तिवाद न्यारो न्यारी ॥ध०॥४
देश नगर पुर पाटण विचर्‌या, समझाया बहु नरनारी ।
टाल मिथ्यात्व किया दृढधर्मी, धन धन है जननी थारी ॥ध०॥५
बासठ वर्ष लग सयम पाल्यो, सुमत गुपत शुभ आचारी ।
सवा तीन वर्ष थाणापति, नवेशहर रहिया सुविचारी ॥ध०॥६
उगणीसे छब्बीसे सावण, कृष्ण अष्टमी जयकारी ।
दस पहर को अणसण आयो, गुरु शिष्य एक बेला धारी । ध०॥७
बहत्तर वरस वय पाई पुज्य जी, तारक निज आतम तारी ।
बहु मुनि मै नयणा नहि निरख्या, आप सरीखा उपकारी ॥ध०॥८
पुज्य रेखराज के हिरदे वसिया, अरज लीज्यो ए अवधारी ।
आसोज बुदी अष्टमि गुण गाया, बार बार जाऊ बलिहारी ॥ध०॥९

पुज्य श्री वख्तावरमलजी महाराज के गुणग्राम

मुझ मन भाया रे, वक्तावर गुरुजी का जस सवाया रे ।।टेर

देश मेवाड "गगापुर" गुरु जी का जन्म स्थान कहलाया रे ।।
"अनोपचन्दजी' तात मात, "मानदेवी का जाया रे ।।मु०।।१

सुन उपदेश, 'वृद्धिचद' गुरु जी का, मन वैराग्य लगाया रे ।
साल इक्कीस के माघ मास मे, मुनिपद पाया रे ।।मु०।।२

खूव किया अभ्यास ज्ञान का, सव का मन हुलसाया रे ।
विनय विवेक सहित गुरुजी का, हुक्म उठाया रे ।।मु०।।३

सवके पहले ववई जाकर, जैन का धर्म दिपाया रे ।
मुनिराजो के लिये क्षेत्र को, सुलभ वनाया रे ।।मु०।।४

नाभा के दरवार मे जाकर, पर्चा जवर दिखाया रे ।
प्रतिवन्ध था मुनियो पर जो, तुरत तुडाया रे ।।मु०।।५

देश देश मुल्को मे विचरी, धर्म का मर्म वताया रे ।
जिनशासन के रागी त्यागी, खूव वनाया रे ।।मु०।।६

कई जगह कर चर्चा आपनें, जीत का डका वजाया रे ।
वादी मान - गजकेशरी जग मे, आप कहाया रे ।।मु ।।७

पूर्ण विद्वत्ता देख आपकी, पाखडी मुरझाया रे ।
भव्य आकृती देख, भविक मन भ्रमर लुभाया रे ।।मु०।।८

सम्वत उन्नीसे साल छियासी, कार्तिक मास जव आया रे ।
सुदि सातम ने आप गुरु जी, स्वर्ग सिधाया रे ।।मु०।।९

सात तिराणू विक्रम २, ताराचन्द गुरुराया रे ।
पुष्करमुनि कहे मादगाव मे, जोड सुनाया रे ।।मु०।।१०

धर्मा श्रद्धालु श्रावक होगा, ताके हस्ते **श्रीमत् भण्डार जी** का सार सभाल का कार्य की अखत्यारी सर्व की सम्मति पूर्वक रहेगी ।

अव जिस काल मे जाके जिम्मे श्री पुस्तकालय रहेगा तिनको नीचे लिखे मुताविक वर्ताव करना होगा, जिनसे पुस्तकजी की आवादी और ज्ञानदानादि अनेक कार्य सधेगे, श्रीरस्तु ।

१ श्रीमत् भडार जी की पुस्तक अर्थात् पडत शहर वाहिर जा नही सके अर्थात् विलकुल शहर वाहर जाने नही पावे, कोई चर्चा वार्ता सम्वन्धी विशिष्ठ कार्य अपने खते जोखम की जामनी पूर्वक दिनो की मयाद से भेजना ।

२ शहर के भीतर वाचने को देनो पडे तव प्रथम तो लेवाल की प्रतीती देख कर पहली नामे माड के पीछे आवी पडत देनो आगली आया सो फेर आधो देनो, दो पडता रो काम पडे तो भी आधी आधो दो देनो पिण पूर्ण पडत देनो नही । सही ।

३ लिखने को देने का काम पडे तो श्री थानक जी मे वैठ के लिखे जिण ने यथासभव पाना लिखने को देना, थानक जी के वाहिर लिखने नही देनी ।

४ श्री भडार जी मे विना इजाजत आज्ञा विना किसी को भी प्रवेश करणे देणा नही ।

५ श्री जिनवाणी की असातना हरेक प्रकारे नही करणी ई वात पर पूरा पूरा खयाल रखणा ।

इत्यादिक कलमा पर ध्यान देकर श्री भडार जी की कारवाई अपना परम हित कर्तव्य समझ के करनी, इससे एहिक तथा पारलौकिक कल्याण होता है ।।इत्यलमधुना।।

॥ दोहा ॥

श्री जिन वानी जिन समी, इन अवसर मे जान ।
करो सुरक्षा एहनी, इनमे सव कल्यान ॥१
रतन समा जिनदेवनी, रतन समी जिनवान ।
रतन उभय को सेवता, रतन त्रय निरवान ॥८

लि० रत्नमुनि ॥

यह प्रतिलिपि श्री रिषिराज जैनज्ञान भण्डार के मर्यादा पट्टक (नियमावली) की है, जो जैनस्थानक पीपलिया वाजार व्यावर मे सुरक्षित है। इस भण्डार की स्थापना विक्रम सवत् १९४२ मे हुई थी।

इस भण्डार,को स्वर्गीय व्यवस्थापक श्री गुलावचन्दजी काकरिया के वशज श्रीमान् पन्नालाल जी सा० काकरिया व उनके पुत्र पौत्र इस समय विद्यमान है। आपका स्थानकवासी समाज मे गौरव पूर्ण स्थान है। सर्व साधारण की जानकारी के लिए यह प्रतिलिपि प्रकाशित की गई है।
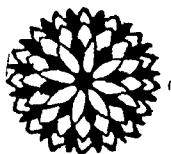
साधना के अमर प्रतीक

- स्व० पूज्य गुरुदेव श्री छगनलाल जी म० सा० का जीवन चरित्र एक अनुपम ऐतिहासिक ग्रन्थ है।

- शिक्षाप्रद विविध साहित्यिक सामग्री से परिपूर्ण यह ग्रन्थ आपके आध्यात्मिक विकास के लिए मार्गदर्शक है।

इसके लेखक है—**श्री ज्ञानमुनि जी महाराज,**

स्व० आचार्य सम्राट् आगमरत्नाकर श्री आत्मारामजी म० सा० के आप प्रिय शिष्य ह। आपकी अनेक मौलिक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी ह।

मूल्य हे—पाच रुपया [धर्म प्रचारार्थ अर्धमूल्य]

पक्की जिल्द प्लास्टिक कवर युक्त

प्राप्तिस्थान--मत्री

श्री छगनमुनि जैनधर्म प्रचारक समिति
पो० मु० रोडी
जिला—हिसार (हरियाणा)

साधना के अमर प्रतीक

—————o—————

- स्व० पूज्य गुरुदेव श्री छगनलाल जी म० सा० का जीवन चरित्र एक अनुपम ऐतिहासिक ग्रन्थ है ।

- शिक्षाप्रद विविध साहित्यिक सामग्री से परिपूर्ण यह ग्रन्थ आपके आध्यात्मिक विकास के लिए मार्गदर्शक है ।

इसके लेखक है—**श्री ज्ञानमुनि जी महाराज,**

स्व० आचार्य सम्राट् आगमरत्नाकर श्री आत्मारामजी म० सा० के आप प्रिय शिष्य है । आपकी अनेक मौलिक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं ।

मूल्य है—पाच रुपया [धर्म प्रचारार्थ अर्धमूल्य]

पक्की जिल्द प्लास्टिक कवर युक्त

प्राप्तिस्थान--मत्री

श्री छगनमुनि जैनधर्म प्रचारक समिति

पो० मु० रोडी

जिला—हिसार (हरियाणा)